क्षेत्रकः।---

व्यवना अवना नायक शहा----

এই অভিনব প্রস্তলাগড়ি নিবাসি শ্রীকালীকুমার মুখোপাধ্যায় কত্ক সুসাধুশক নম্বনে নানাবিধ शमा इल्ल विव्रिक्ति श्हेया প্রস্থারের পরম সূত্দ কলিকাত। শ্যামবাজার निवामि किल की युक्त राष्ट्र तारक मुनातास्य वमु अ नावुकी नाजायन वसु भश्तिय फिटमब विद्नाव সহায়তার কলিকা**তা শ্যামবাজারস্থ** वीनारामाठवन मुरथानावरादसव ্ভুবন যোহিনী যতে মুক্তিত সন১২৬৩ সাল তারিথ ২০ চৈত্ এই প্রন্থ যাহার প্রয়োজন হইবেক তিনি किनका कात्र वाश्वाकात है ौटि २०न॰ छवरन শ্রন্থকারের নিকট তত্ত্ত করিলে পাইবেন।।

नियंके ॥

<i>चित्रव</i>	1
अध शर्पभ द अता	3
अय मर्गापन अपना	5 .
শ্ব আতা পরিচয়	10
बाब हार में हैंगा	33
ज्यक्षिकार वज्ञ आकि निर्वाहर	24
Her Claim	7,34
অঅ ভালনৈ ভাতৰ প্ৰকাৰেশ ভালোন	
निविक स्था	1
वर हाल कम शत भारत कति छ।	33
व्यथ् द्रास्त क्टब्स भाग्न एदिसा	£ 3.
बार ब्रोध शृञ्चा काशन नगडा गरन	हु। स्
भ्य डी काहात खर्गांड निना	ac
ष्य ताह कनात महिट ता क्रण्टा विवाह	ভর
थाभ रह कराइ वागाद भगन	93
अध्या गर्	7
অথ রাজা গোরীকান্তের সভা বর্তনা	6 6
खाय खनमान जा आज सदम्दर भूनजागमन	April 1
थाथ मत्नाहरद्र त मगत <u>कु</u> षन ছলে कायन	
नगत र छन।	34
অথ মনোহটের বন ভ্যণে য়াতা	7.9

निर्घण्ड

বিৰয়ণ	6.8
অথ সুলোচনা স্থীর সহিত মনোহরের	
ক থোপকথন	3 23
ष्यथ मत्नाह्दत्रत नाती (वन धात्रन	708
व्यथ मत्नाइदत्रत्र नाती (वत्न ताक्रकन्त्रा मत्न	
মোহিনীর অন্তঃপুরে প্রবেশ	187
व्यथ मनादमाहिनीत वामत मञ्जा	784
च्यथ मत्नादमाङ्गेत (तम विन्धाम	760
अथ (माहिनीत महिज मदना इदत्त मान। वपन	526
অথ স্থীগণের মনোহ্রের নিক্ট পরিচয় -	242
अथ मत्नात्माहिनोत्र महिज मत्नाहृदत्त	
विनाम मुह्मा	198
चथ मरनारमाहिनीत महिज मरना हरत्र	
म त्त्रभास	339
चर्च गरना हरत्र अं जि गरनारमाहिनीत्र मान	390
व्यथ मटनाटमाहिनीत मान छक्षन	390
अथ गणि बूधी द विज्ञ ह	395
अथ गणिमूंथीत सामित अत्वयत्वत भन्नामर्ग	745
ष्य गिमूथीत कामी खद	३ ४७
অথ শশিমুথার স্বামির অনুেয়ণে যাতা	742

বিবরণ অথশশিমুথীর সদাগর বেশে দিনমণি নগরে প্রবেশ ও রাজার সহিত সাকাত ১৯ অথ কান্ত সদাগরের বিবাহ অথ সদাগর ও সুন্দরীর কথোপকথন অথ কান্ত সদাগরের নিকট সুন্দরীর যুবক বেশে দাসত্ত্বীকার অথ কান্ত সদাগরের হরিশ্চন্দু নৃপতির নিকট হইতে বিদায় হইয়া মদেশ যাত্রা অথ কান্ত সদাগরের নিকট হইতে মনোহরের দাসত্ত্বিনিটন) T
नशदत প্রবেশ ও রাজার সহিত দাকাত ১৯৩ অথ কান্ত সদাগরের বিবাহ ১৯ অথ সদাগর ও সুন্দরীর কথোপকথন অথ কান্ত সদাগরের নিকট সুন্দরীর মৃবক বেশে দাসত্ব খীকার অথ কান্ত সদাগরের হরিশ্চন্দু নৃপতির নিকট হইতে বিদায় হইয়া মদেশ যাত্রা অথ কান্ত সদাগরের নিকট হইতে মনোহরের দাসত্ব মোচন	7 -
श्रथ काल महागंदात विवाह श्रथ महागंद्र ७ मुन्मतीत करथा श्रव्या विवाह श्रथ काल महागंद्र ज्ञानिक मुन्मतीत प्रक विवास हा स्वाल महागंद्र ज्ञानिक मुन्मतीत प्रक विवास श्रथ काल महागंद्र ज्ञानिक मुन्मतीत प्रक विवास श्रथ काल महागंद्र ज्ञानिक मुन्म विवास श्रथ काल महागंद्र ज्ञानिक है है विवास है है विवास है विवास है है विवास है विवास है है विवास है विवास है विवास है है विवास	7 -
অথ সদাগর ও সুন্দরীর কথোপকথন অথ কান্ত সদাগরের নিকট সুন্দরীর ঘূরক বেশে দাসত্ব স্বীকার অথ কান্ত সদাগরের হরিশ্চন্দু নৃপতির নিকট হইতে বিদায় হইয়া স্বদেশ যাত্রা অথ কান্ত সদাগরের নিকট হইতে স্বোহরের দাসত্ব মোচন ২১	
व्यथ काल ममागरतंत्र निकं मुन्मतीत प्रक (वर्ण मागल वीकात २०) व्यथ काल ममागरतंत्र हतिम्हन् नृशिकत निकं वि हेरे कि पिता हरेशा यह मागल। २३ व्यथ काल ममागरतंत्र निकं हेरे कि यह मागल व्याप काल मागरतंत्र निकं हरे कि यह मागल व्याप विवास केरे विवास हरें कि यह मागल व्याप विवास वि	3
पामञ् वीकात व्यथकान्त महागहतत हिन्हिन्दू मृशिखत निक्छे हहेट जिपास हहेसा बहान याजा व्यथकान्त मागृहतत निक्छे हहेट ज स्ताहरतत पामञ् स्माहन २०	
पामञ् वीकात व्यथकान्त महागहतत हिन्हिन्दू मृशिखत निक्छे हहेट जिपास हहेसा बहान याजा व्यथकान्त मागृहतत निक्छे हहेट ज स्ताहरतत पामञ् स्माहन २०	
হইতে বিদায় হইয়া মদেশ যাত্র। তথ কান্ত ন্নাগ্রের নিকট হইতে মনোহরের দাসত্বোচন ২১	**
অথ কান্ত স্নাগ্রের নিকট স্ইতে মনোস্রের দাসত্বাচন ২৯০	
দাগত্ব মোচন ২৯৭	
The same through the same to t	
ביים אין	7
चाथ मटना हर इत च खेत्रा लर स शंधन । २२५	2
व्यथ भटना द्या श्रिनोत्र वित्र इ वर्स्छन। २००	
चथ मरना एरत्रत निकृष्ठे मरनारमाहिनीत পত	
(लथा २०	Ą
चथ यदनाह्द तिक है हिन्तु भाना त चाशमन २०।	*
व्यथ मरना इरवब सरमरण भेगन ए महना द्या दिनी ब	
म्हिज পুनिर्मालन २८२	
व्यथ शक् ममाश्वः २८१	

पाषाकागमायमाम् नगः॥

अवना श्वना नात्रक श्रष्ट्र अनुक्रमणिका।

মধুলোলুপ্রণ যাদ্ক নৃতনং পুয়রসামাদনেও
পরিভোগ প্রাপ্ত হয় না, এবং নয়ন যেমন প্রভাহ
নৃতনং পদার্থাবলোকন করিলেও উপরতি স্বীকার
করে না, মন সেই কপ নৃতনং কাব্যামৃত পানে এবং
নৃতনং প্রসারনৈতিহানাদি শুরণে কমিনকালেও
আশোপরত হয় না, মুতরাং মনুয্যজাতির নৃতনেতিহ শুরণ রসানুভবাকাজ্যা এক প্রকার মভাব সিদ্ধ
এক বৃভিমধ্যে পরিগণিত হইতে পারে, যাহা হউক
যথন অনেক ব্যক্তিই কোন অভিনব উপন্যাস বা
বাক্যানুগ্রণের পুতি পুতি পুকাশ করিয়া থাকেন,
তথন এই 'অবলা পুবলা, নামক গ্রন্থ যাহা মৎকত ক পয়ারাদি নানাবিধ পদ্য ছন্দে বিরচিত

अनुक्रम निका।

হইয়া পুকাশ হইতেছে বোধ করি যুক্তি পক্ষে নিডান্ত অনভিনীত নহে। এই গ্রন্থ যদিও,কোন বিশেষ নী-তিজ্ঞানোপদেশক নহে তথাপি এতাদৃশ সুশাব্য বিবরণ সম্পন্ন হইয়াছে যে তৎপাঠে সুরসিক পূে-भक्छभरभव्राभाग्नः कदरम व्यवभाष्ट्रं स्ट्याम्य स्ट्रेट्वकः এজন্য বিচক্ষণ গুণজ্ঞ সভ্যভব্য মহাশয়গণের নিকট भाषनीय (य डांहाता यत्र निर्माना उक्त तरनत अरन এতৎ প্ৰস্থের মধ্যে ভুম বা অজ্ঞানতা ৰশতঃ যে কট তাহা রিপহার প্রক অমদ্ পুতি পুতি পুফ্ল वपटन উৎमार शुपान करबन, (यरहरू शास्त्र बाहनाम আমার এই পুথমোদ্যম, অধিক ক্ত সাধারণের উৎ-শাহ দৃষ্টি হইলে এত দ্বিয়ের অধ্যবসায় ক্রমশঃই বৃদ্ধি হইতে পারে যাহাতে আমি মাপনপরিশুমের मार्थरक्राभनिक्क क्रिया তবিষ্যতে অन्যान प्रनीि পুদর্শক গ্রন্থাদি বিরচনে পুর্ভ হইতে পারি।। কলিকাতা। निद्यमक बीकानीसमात मूर्थाभाष्णाय भागवराजात . নিবাস বলাগড়ি। २० टेडिया পরগনে রায়পুর मकाका ३११४। জেলা হুগলি ,11

अधितं ।

क्उक्डा ॥

ক্তজ্ঞতা পূৰ্ক স্বীকার করিতেছি যে শ্যামবাজার নিবাসি পণ্ডিতবর এীযুক্ত ব্রজনাথ বিদ্যালম্বার মহাশয় আমার এই গ্রাস্থ সংশোধনে ক্ষনেক পরি-শুম স্বীকার করিয়াছেন। অপিচ, যে দকল মহা-ग रम्ता शङ् शहर व बही क्र उ इहेगा व न्धान शर्म সাক্ষর করিয়াছেন যদিও বাহৃশ্য প্রযুক্ত তত্তাবতের नात्मादल्य यक्षम इहेलाम वर्छ, छथाणि म्याम-राजावस्थिन श्रीयुक्त वातू ब्राटकन्तु नावायग वन् अव[्] बीन बियुक वार् बीनाद्रायग्वमु महाग्य घट्यः त्र नाम প্रकाम ना कत्रिया निवन्त थाकिए भाविताम नाः (यदञ्ख अछमू खदात नाश्या वा खिदारक् मनी स গ্রন্থ কদাপি আশু প্রকাশিত হইত না। এই মহো-দ্য় দ্য় মৎপ্রতি যে প্রকার সহায়তা এবং উৎসাহ প্রদান করিয়াছেন, তাহা বস্তুণে কাণ্ডের লেখনী ও অশক্তা, বিশেষতঃ শেষোক্ত মহাত্যার গুণমার ৭ হই-লে আমার চিভএক অপূর্র রসে আত্র ইইতে থাকে! किमधिक र हेजि। मध्य २०१०। जात्रिथ २०१७ व वीकानी जमात्र मुर्थाभाषात्राः।

এ জিজগদীশরায় নমঃ।।

ञ्चला भ्वला नांचक गुइः॥

अथ गरान वन्मना। मीर्घ जिलमी इन्म।।

नद्या नमः नियुष्तः ज्ञा मर्क विधुष्तः यात्र्त দেবের তনর। মৃধিক বাছ**নে গতি**> **অগতি জনের** গতি, গণপতি অতি দয়াময়।। কিবা ৰূপ মনোহর, ত্রিভুবন মনোহর, আমি তার কি দিব প্রমাণ ! পদ-তল প্রভাকর, বিনিন্দিত প্রভাকর, নথে নিশাকর থান থান ৷৷ ভাহে কত শোভাপায়, রতন নৃপুর পায় वारक मुभधूत ऋगु सुन। (यन विभि भाजमाल, बारकर ভূঙ্গ দলে, লিয়ে মধ্ করে গুণ২ ৷৷ উক্ল নিরুপম বর্ত্ত नां मिश्रा मद्यादद्र, द्यामादनी किया (माजाकद्र) লখোদর থর্ম কায়, ছেন আর আছে কায়, আজানু न्षिण চতুষুর ।। তাহে দিয়া ষর্ভবালা, সাজাইল शितियाना, मिक्ष कि विश्विवादत शाति । सक्ष कि मिय जात, अक्रेल नाटमिथ बात, नाच ठक भमाचुक-

ধারী।। মণিময় কণ্ঠহার, বিবরিব কি তাহার, এক-দত্ত সঞ্জর বদন। অপক্রপ ভূষিতায়, শিরোপরে শোভে তায়, বিমোহিত জগজন মন ৷৷ সে ৰূপের সবিশেষ, নাকহিতে পারে শেষ, নির্ক্তিশ্য ত্মি গজানন। অনিকাচ্য গুণ পুনঃ, বাথানিতে পুনঃ২, নিরস্ত যাহাতে বেদগণ।। গুণাকর বিনির্ভণ, দেগুণ কি এ নির্গুণ্ কহিবারে পারে কদাচন। তুমি অন্ত মধ্য আদি, সভুরজ স্তম আদি, ত্রিগুণ তোমাতে নিরূপণ।। তব লীলা সুধাময়, প্রকাশিত জগময়, সর্বরপ গুণময় হও। সক্ষত্তে আবি ভূত্য ভ্রমি পঞ্ बर् कृत, श्राः शक्ष क्र गरा नहा। यना पि यन छ कर, অনম্ভব সুসম্ভবঃ তোমাতে সম্ভব সৰ হয়। ইক্ত চক্ৰ দিবাকর, ব্রহ্মা বিষ্ণু কি শক্তর, সন্ধ অত্যে তোমারে পূজার । তুমি মৃষ্টি স্থিতি লয়, যে তব সারণ লয়, কৃতান্ত নিতান্ত তার দাস। স্থাবর জব্মচয়, কহে তব পরিচয়, জীলাছলে হইয়া প্রকাশ ।। নিরাকার নিব্দিকার, বর্ভিতে শক্তি কার, সাকার সম্ভব পুন-রায় ৷ নিত্যক্প নিরপ্তান, কে জানিবে ও ভাজন, আমি অতি অভাজন তায়।। প্রকৃতি পুরুষ সার, অবিরত ত্রিসংসার, ইচ্ছাবশে ভূমিতেছে যার। कि कतिव मरशायन, जीरवत जीवन धन, जनभारत

ভব কপ্তধার।। উক্তি যুক্তি পূঞাপর, সুব্দি ত্রন্ধ পরাৎপর, সিদ্ধিদাতা হয় তব নাম। নাহি জানি শিবাশিব, ভাষা গ্রন্থ প্রকাশিব, সিদ্ধি যেন হয় মনকাম।। শুন ওহে ক্পাকর, তুমি যারে ক্পাকর,
মোক্ষপদ লভ্য হয় তার। পাপান্তের প্রণিপাত,
ক্পানেত্র কর পাত্র, কহে দ্বিজ শ্রীকালীক্ষার।।
অথ সক্ষদেব বন্দনা।

পরায় পদান্ত যুমক ছন্দ।.

অথও মঙলাকার ব্যাপ্ত চরাচর। যার বলে ছলে থেলে ভূচর থেচরা৷ অব্যয় নির্মান এক কুপেতে বি-र्दत । छानाटनाटक ज्ञान जिमिदत (यह रुदत।। হেন গুরুপদে নতি করি বারহ। আগুদার হৈনু সর্বদেবে বন্দিবার ।। প্রথমতঃ প্রণতি মহেশ মহা-काटन। याँ हात कक्रमा देहटन नालतरन काटन।। उत्माख्रा विख्रवन कत्रश मार्गत । मूत्रधुनी यात শিরে মালতীর হার।। আমি অতি পামর পাপে-তে পূर्छ (पर्। मपाणिदव सागि वत मपाणिव (पर्। (गाविन्छ भारतिन्त विन्त उपछ । (वप नाहि জানে যার গুণের তদন্তে।। কি আর বলিব তার यात्र शेष्रदल । आश्च इयु लाटक याटक उक्कशेष बदल ।। (क जारन इति इ नीन। इतिनीन। महा । जन-

তে জাগ্রত যে महत्रि नी नागग्र।। তার পরে প্রতা करत कति याए करत। मुक्ति चाल्य वन्मनावित्र उ मारम करत्र ।। पिननाथ पद्माकत मीन शैन छत्न। माहि कानि छक्ति युक्ति छक्तन शृक्तरम ।। निरंदपन **रु**त्रन প्रान्डदत जिल्लाह्द । इत्या केन्य इत्य यनस-यार्त ॥ वन्मि भरत भक्तिभा मुक्ति माओ पूर्ण। (इनाय (य नात्म (नाक डे कात्रय पूर्ण।। (य शप म-न्निम ভाবে ভাবে সুরবর্গে। धर्म चर्च कान माक লভে চতুর্ধর্গে। ত্রিতাপ হারিণী তারা নাম নহা-बाशा। जिलाक छ निन (रुब्रियात महागाया।। लक्षी अवस्त्री वन्त स्माव स्माव। विक मह वन्ति-লাম রতি পতি মার।। পল্লোনি পাদ পতে নতি ভারপর। যেই করে সৃষ্টি করে সৃষ্টির উপর।। ক্রে विक चारि (पव भगवदा। यात में कि विश्ववादत (कवा गाकि धरत ।। (याशीक मूनी क हैक अर पश्रिका ्र हा भाभारक्त भाभ जाभ कत्र म॰ हात्र ॥ माध्य निक मरिनम्ब वाहि नवश्राह। श्राम कतिन यउ ব্যাপক বিপ্রহে ।। অরুণ বরুণ দশ দিক্পাল গণে। विस्ताम विवाकि उ यह दमगर ।। अरवत अ क् তি যক্ষ রক্ষ দল বলে। স্তুতি নতি একান্ত ক্তান্ত सहात्रला। दिप्राधत व्यथ्नत किसत कारनर। शतः

শান পদেহ পদের ভাজনে।। ওহাক গ্লুদ্ধ দেব य-তেক প্রকার। পিশাচাদি স্বার চরণে ন্যকার।৷ ধরার উপরে পরে যত দেবচয় ৷ বন্দনার ছলেতে किंदिर भितिष्ठा ॥ विष्णुत चन्छ लीला किंदा कर जात । भीन अर्थ वताह नृमिश्र खवजात ।। **खा**वि-ভূত হয়ে মর্ভো হরিল ভূভার ৷ বিব্রিতে যে গুণে প্রাণে গণে ভার। বামন প্রভৃতি অপরূপ অ-বতরি। সবপদে প্রণতি চাহিয়া পদতরি।। বন্দিনু পরশুরাম শ্রীরাম দীতায়। অংশকপ লদ্ধণ ভরত चामि जात्र।। किक्दी कोमना वन्स ममत्रथ तादन। আরং ত্রেতাযুগে যে যথা বিরাজে ।৷ বৃদ্ধ জার : বিফু অবতার সেদাপরে। যে যশঃ কীত্নে মত্ত ত্রিভুবনোপরে ।। রাধা সহ রুক কপে লীলা ব্রজ্ঞ-পুরে। যে নাম শুবণে লোকে মনোবাঞ্চাপুরে॥ করিলাম প্রণতি মিনক্তিয়ত দেবে। পরিহার অ-मण्या (पवकी वमुदमस्व ॥ (गान (गानी गरन वन्स নন্দ যশোমতী। সকলে করহ রূপা আনি মৃত্যতি।। কলি ৰূপ কলির প্রকাশ্য অবতার। বন্দিরা যুগল शदम अवि विखात ॥ उपछ दिनानु मण सहा-বিদ্যা রূপে। করাল বদনা কালী অপর্কপা রূপে। বিশুণ ধারিণী তিনয়নী তাপে তারা। ছিলমন্ত।

रवाज्मी दशना बात जाता।। ভবের ভাবিনা ভুব-(नश्री रेखत्री। अपजल विनिम्छ अভाउत ति।। कानक्षा धुमावजी माज्ञी कमना। (य शप छ, दिल याग्र अखरेत ब मना। क्षेठि मृতि नाहि জানে গুণাদি যাহার। সকলের চরণে আমার পরিছার।।পাতালে বাস্কি আদি,নতি নাগানজে। সতীর একান পীঠ বন্দি তদনতে।। ক্ষীরপ্রাম যুগা-দ্যায় ভৈরব সহিত।কোটিং পরণাম চাহিয়া স্ব-श्उ॥ कानौघाटि नक् तनभ (पर्वी जारह कानी। (यनाम जिल्लियां अ अखदात कानी ॥ मधर्ज वि मना (परी वन्न अकृत्कत्व। मत्व इ ७ छेप स रूप स क्ष (कद्व । छोय क्ष्मा मठी मिन क्यानी विछा-मा मक्ति अनुमादा पारम मकरन मखारय।। अभ-ती अगद भेष विक जित्रजाय । जी भक्ष ज मुक्ती নুন্দর।নন্দ তায়।। গওকীতে গওকী ভৈরব চক পাণি। পদপুত্তে প্রণতি করিয়া যোড় পাণি॥ भश्का वाताशी वाद्यम अत्रशृक्षा। शक्षिम् कत-राया गार्ट् शति शृक्षी।। नातायगी म॰ कृत रेखत्व खन्धाम। नमकात हतरन अनलगात थाम।। जून-নেশী সিদ্ধ শিব কিরীটকোণায়। বস্তিতে নাপারি ষার ওণের কণায় ।। কেশজালে ভূতেশ চ্ভিকা

छेगा जाय। (भाषावती औरत वन्म विरयत माजाय।। জলস্থানে ভূমরা ভৈরব সহকার। ক্রমেহ সকলে कतिनू नगरकात्।। त्रामानन टेखत्व कामार्थाः काम-कल्ला (पर्वी यथा विद्राक्तिण (माक कामकल्लाः निभारत कनाशी जव पिती महामाया। कि बात क-रित विजूतन सात्र गाया।। अग्र ही क गामी अत जा कि জ মন্তায়। ত্রিপুরায় ত্রিপুর। ত্রিপুর নল তায়।। 🕮 হ-(छेत्र गर्गनचा आत नक्षानत्म । जिथिनात गर्गटप-वी विकिमक्षान त्का। अभाव निवानी ब्रञ्जाविक यात वाम। भरा भाषा का भूती दब जिनका की जिंवाम। छा हि গাঁয় চহুচুড় ভবানী ভবানী। যে ভাবভাবি**লে ভয়ে** नाहि मदत वानी।। उक्तामन (मानाकी हिखका नम-দায়। যে তত্ত্ৰ কহিতে তত্ত্ৰ গণে গণে দায় ।। অধি-का छैत्रछ (मर्वी (मर जाना मूर्थ। विश्विष्ठ या श्रव खन नाति जनमुर्थ ।। मूनकात मूनन्त। जाइक क्ष ভবে। বন্দিনু চরণ তরি তরি যেন ভবে।। হিস্বলার कि उरी जीत्मद्र अतुराम। मक्त्राय महिष मिलिनी যার নাম।। প্রভাসের চন্দ্র ভাগা ব্রুত্ত শিব। विनिन् याहाटल मम बाख हरव निव।। मान महता-बदा (प्रवी पाकाश्रमी हरत । कतिन्छि यदगर मक्र याद्य इद्रा । छेक्नानित गक्न छ छ किनाचत ।

4

यनकाम निक्षि र्य (पर् এইবর ।। প্রণাম সাবিত্রী স্থানুজ্ঞলা মণি (দবী। প্রয়াগের ভব দশমহাবিদ্যা (परी।। जिथुत भानिनो कानकतात जून। मनि वत्म मक्षानम गायुवी कृषेग ॥ क्षीक्रक रेव्यव चात চা ওকা ৰাহুলা। পরিহার মোর যাহে বিখ্যাত বা-क्ला।। बन्नि द्रामिशदिद मिवामी हछ भाषा (य शाश्व रयाशीच गरन प्राप्त नाहि शाश्व ॥ पूर्ण अश-माञी क्रमुणी देवमुनात्थ । विनवाम वामदनव क्ष रेवम् (नर्थ-॥ উৎकलात विकास कि शिनी आत জ्य। खानादः विवदक वत्न (पर् ভবে জয়।। का-क्षांत्र कालिक। (वष्णुड) क्रब्र ७१। मीन श्रीन गणि ক্ষানে সুপ্রসন্ন ভব।। ভৈর্ব পদত নিবাসিনী অখি-कात्र। भिव मर युगन ठतरा नमकात्र ॥ भाषरवन অসিতাঙ্গ কালিকা অসিতা। আর যত পীঠস্থান নহে প্রকাশিতা।। স্বার চরণে মোর প্রণামাবি-রত। ভব পারাতায়ে পারে হবেনাবিরত। তং-शरत वन्ति व गराक्ति विक् शरम। शिखमारन शा-उकी मन्त्राश विक् भएता। वन्ति अन्तर्श कानीभ जिकां जिवाम । जूवन जिल्ला यात खनको जिवाम ॥ প্রণাম পুরুষোত্তন জীপুরুষোত্তন। জগনাথ জয় (पर पृत् कत जम ।। (मजूवक त्रायमत ब्रीतारमत

কত। সহ শিবে সব শিবে হৈনু নমন্ধৃত !। উপ্রচন্তা চরণে প্রণতি লঙ্কাপুরে। তনয়ের মনোবাঞ্ছা পুরা-ও ত্রিপুরে।। সাগর সঙ্গম আদি তীর্থ মহাধন। যথা শক্তি যুক্তি নতি কৈন্ সম্বোধন ।। বন্দিনু মনস। ষ্ঠী; याकान भीउना। यादात भीउतन इस श्थिरी नी-তলা।। স্বর্গে মন্দাকিনী মর্ত্যে বন্দ ভাগীরথী।পরি-ণামে গঞ্চা নামে পুল্লরথে রথী।। নামের সহিমা किया क्य अधिकात्र। काल देशल कात्नत्र मा भारक অধিকার ।৷ গাতালেতে ভোগবলী পাতাল লমা-ती। तन्त्राप घन्न नाम शक्क अभावी।। वायु विक् অবনি আকাশ আর পয়। বন্দিলাম বকী যেবার-হেকতিপয়।। মহামুনি বাল্যীকে প্রণতি ত্রেতা যু-গে। পরিহার যোর ব্যাসাদির পদযুগে।। সনক প্র-ভূতি শ্রষি বর্গ যেব। রয়। লবার চরণ দাস বন্দনা ক-त्र ।। (गातात व्यन छ नीना धतात छे भरत। (म यूगन পদেনতি করিলাম পরে ৷৷ নদীয়ায় অবতরি নাম म हे हे जन् । मुक देश्व याद की व लिया मुहे हे ज न्या (पव (पवी जाकिनी) (या गिनी जुज यथा। प्रक-लि अगि का त्व वृद्धिरथा।। दक्ष गञ्ज मत्या-ধিতে ভুলিয়াছি যায়। প্রণাম করিনু সেই দোষ (यन याम ।। कति निक अनक अननी श्रम मादत । या-

3.

हात्र क्ष्माय व्यामा इहेन म॰ माति ।। अत्कर विमनाम हत्रगमवात । क्ष्माप्ति क्ष मप्त अदि एवं अकवात ।।
माहि ब्लान मान धन कि हु है महन । छागाय ति हिए
अह कतियाहि दन ।। मानुकृन इत्य (एवं प्यात अि
कृन । एथं (यन (कह ना इहेद्द अिक्न ।। च्यम विकत मदि (हिया व्यामन । श्रीकानीन भात छद उत्त भाग कृन ।।

অথ আত্র পরিচয়।। চৌপদী ভ্ন্দ।। হগলি জেলায় ধাম, বলাগড়ি নামে প্রাম, ভাগা-র্থী অবিশ্রম পূর্বভাগে বয়। সভ্য ভব্য ভদ্র 'গণ, নিবসতি অগণন, নানা জাতি লোক জন, স্থানে২ রয় lì তথায় আছিল বাস,কীর্ভিডণে কীর্ভি-বাস, অঙ্কে বঙ্কে স্প্রকাশ, দিজ বলরাম। সক্তণে ভণনণি, স্লীনের শিরোমণি, মুখটী ঠাসর খুনি, इह यात नाम ॥ जांत पूज हातिकान, महामान महा-জন, অপ্রজ রঘুনন্দন, তুল্য কেবা তার। তদনুজ ভূওরাম, সাক্ষাত যেমন রাম, যশঃভরে অবিরাম, থরা গণে ভার ।। পরে রাম নারায়ণ, তুলনায় নারা-য়ণ, কনিষ্ঠ সুবিচক্ষণ, আখ্যা রামজয় । কিবা আর কবতার, যেন চারি অবতার, সর্পজন সদা যার, গান করে জয় ।। তার মধ্যে ভ্তরাম, পুএ

शक्ष खनवामः मक् (का) है क्ष्यामः मक्ष खनाकता তন্য় তাহার নয়, গুণ জ্ঞানে মহাশয়, প্রকাশিত পূথী নয়, কলে কলবর !৷ দিতীয় সূত তাঁহার, স-চ্চাণের পারাবার, রামকান্ত নাম যার, পুএ চত্ত্রয়। যোগ্য বিজ্ঞ বিলক্ষণ, শান্ত সর্ম সুলক্ষণ, তৃতীয় চ-क्षी ठत्रण, महा महानय ।। मही शृद्धा महिमास, अन ভদ নিগলায়, সমত্ল কে তুলায়, অপ্রমাণ মান। मुक्रिश सक्ल हज, यरमात्रामि शृष्टं हज, उनम वेगान हक, वेगान मयात ॥ उपक्क व्याचि मीन, छान वृष्कि विमाशिन, महस्कर्ण अथवीन, वाक-রণ বাম। অনভিজ্ঞ শাস্ত্র সার, নাহি প্রসঙ্গ পসার, विक कीकालीक गांत, इस यम नाम ॥ वान्ताविष वाज्याम, माञ्च निवादम वाम, ছिल पश्चा मुश्रका-শ, মাতুলের তায়। শিক্ষাপড়া বুদ্ধি বল, যতকিছ্ (मर् वन, (थएस यात यमजन, विकास अकास ॥ किया कव मविद्यायः वद्या প্राप्थ व्यवस्था कर বেশে কত দেশ, ভুমি অনিবার। ভাষা গীত বির-िटिङ, এবে চাহে সদাচিতে, পারিবে কি কদাচি-তে, শ্রীকালীঙ্গমার ৷৷

অথ প্রস্তের স্চনা।। প্রার ছন্দা। এক্দিন প্রস্থা আপন আলয়ে। নানা কথা।

करह निज वक् वर्ग नरम ॥ वाक्तरवत मर्था (कह इह-शा छिल्लाम। इंजिह छनिए इक्ला केन जांत পान।। আর্থ সকলে তাহাতে দিল সায়। শুন বলি গ্রন্থ কর্তা বিবরিয়া যায়।। আছিল বিক্রমাদিত্য নামে নরপতি। প্রতাপে রাবণ তুল্য জ্ঞানে বৃহস্পতি।। নবরত্বে শোভে সভা আদি কালিদান। বিবরিয়া কত তার করিব প্রকাশ।। এক দিন কথায় কথায় নৃপ রায়। প্রশ্নুএক জিজ্ঞাদিল বসিয়া সভায়।। কহ (पथि मञ्जाभा हेशत मक्षान । युदक युद्धी मत्था क्वा वनवान।। काश्रात निकटि क्वा शान भता-अस। विट्यविद्या विवद्ग वन नमू पर्या। अनिद्या म-**ভा**ष्ट्रमद्य कतिन छेल्डा चवना প्रवना क्ली नवात উপর।। প্রুষ যদ্যপি হয় মহা বল ধারী। পরাস্ত कतिराज भारत की ना किनी ना त्री।। ताका करए अरक-মন করিলে বিচার। উভয়তঃ সৃষ্ট বস্ত এক বিধাতা-त्र।। তাহে তার তম্য বলে কি প্রকারে বলি। ইহা-(अ वागात युक्ति (माँ हिर गम वनौ।। विनक्त विदय-छना कत यपि मत्व। दब्ध शुक्रश्य उत्व दन्यान करव ।। পরাধীনা হয়ে রামারছে চিরদিন। সরিরার শক্তি হীন জালে বজনীন ৷৷ এই তনারীর ভেদ मर्ज व्यवना। जित्न खत्न पादक लादक विनशा

व्यवना।। बात (पथकी। विनातकक क काय । वा-ल्या लिखा है तारथ (योवरन खर्जी है।। वृष्ककारन আপনার তনয় রাথাল ৷ অতএব বলবতী নারী कान् कान।। अक किश अन्। अन्न नामितन आ শুয়।কোন মতে নিস্তার নাহিক যার হয়।। তাহ। কে প্রবলাবলা যুক্তি সিদ্ধ নয়। কহ শুনি কি উত্ত-র দিবে সভ্য চয় ॥ নৃপমুথে পৃঞ্চপর করিয়া শুব-१। उन्न इरत त्र हिटलक म्लाम ११। त्राक ल्या इ-টাত কহিতে কিছু নারে। পাছে অমূলক বলি রু% इन जादत।। व्यवस्थिय कानिनाभ शति इति उत्र। म-ষোধন করিয়া ভুপতি প্রতি কয় ॥ কহিলেন সমস্ত आयान्। यटहे ताश् । भताधीन। इत्य नाती हित्रकान याद्या मञ्ज्य वर्षे महत्क व्यवना लादक करा। ज्था-পিপুরুষ তার তুল্য কভু নয়।। গাতিয়া চাত্রী भाग यूवरकत भाग। वक्त कति जनाशास्त भूछ कति আশ।। ছলে আজাবহকরে গুন মহারাজ। বুদ্ধিতে मकन इस वरन किवा काङा।। इवि डाव सक उद कति नाना कल। भवन आ रनरत करत करणरक पूर्व न।। जावापिया नातीतम भनीत व्यवम । काटजर भक्रा के का भिनीत वर्ण।। इंदात व् छाउ थक कतित. वर्षन। रूपा क्रत व्यवधान क्रव ताजन।। कार्यन

নগরে এক ছিল নরপতি। শশী নামে তনয়া পরমা কপবতী ।। এক রাজ পুঞ সহ বিভা দিল তার । আনন্দতে পরিপূর্স্ত মন দোঁহাকার ॥ ইতোম-ধ্যেনৃপদ্ত ভুষণের ছলে। দেশ ত্যাগ করিয়া গো-शास रहन हाल ॥ यन। कान बाष्क्र। धक बाक कर्ा मह। मधी कुला भिनिया तिहन अहतह।। এথানেতে निम्थी सामी অনে্যণে। পুরুষের সাজ করি ভূমে সঙ্গোপনে॥ বহু কুেশে পরিশেষে মদান পাইল। কামিনীর বেশ ধরি পতি যথা ছিল।। (म (परभात तो छ। मह मिलिय़। युव छी । दि-राइक किन (मह नाही क्या थि ।। युक्ति रान छन-िया পতि देशन नाती। नातीत काश्नी जूश कहि-यादा नाति ॥ किन्न दिक्यापि ७१ छन कानिपाम। বিভ।রিয়া কহ দেখি এই ইতিহাস।। এমন আশ্চর্য্য क्या छोन गाह् बार । जृञ्च कति পृच्च कत পाद र्वत्रकात ।। य णांखः विनद्या कवि कतिन श्राजाः। मङोभूष मकल रहेल हमदकात ॥ এই गल डेश-রোক্ত বজুগণ যত। গ্রন্থ কার মুখে শুনি বাথানিল কত।। রচিতে পুস্তকে ইহা স্বাকার মন। বিশে-, विया का निपाम कि इन (यमन।। व कु भएना त क्षनार्थ বন্ধুরানুজায়। প্রাহ্কার শ্রীকালীসমার প্রস্থ গায়। অথ গুণিগণের প্রতি নিবেদনী। পরার ছন্দ।। मिवनद्य निर्वपन मूथी मिल्यान। कृथा कति कर्छ যুগে কর ছান দান 11 বর্ত্তমানে বঙ্ক ভূমে বছ বিজ্ঞ গণে। প্রকাশিল নানা প্রস্থানা বিবরণে ।। গদ্য পদ্য ছন্দে বন্দে কবিগণ যত। সুবিস্তার করিলেন পরাক্ষকত।। আমি অতি হীনবৃদ্ধি নাহি শাস্ত ক্তান। কি কণে রচয় প্রস্থ নাজানি সন্ধান।। বলের অতীত হৈল আশাবলবান। শলুকে শভের যথা क्रा पि कान ॥ वायन (ययन शृष्ट हुन्स चारम थाय। मिर् क्रथ यम छव घरिन या गाय।। कि क्रि-ব যথা শক্তি করিনু বর্জন। ইহাতে অবজ্ঞানা করি-বে কোন জন ॥ রচনাতে থাকে দোষ করিবে মা-হর্ন। দবে কহে ভুম মতি হয় মুনিগণ।। আমি ত। दर् इत्व जून जून शरप शरप। तरिया कि जुनिया वकान बिश रूप ।। कि छ अक निर्वपन खनर् नक-লে ৷ সাধুর চারত যেবা আছে ধরাতলে ৷৷ গুণ লয়ে অনুক্র দেয় আলিঙ্গন ৷ সলার যেমন গুণ সাধুর তেমন। পয়ে। মধ্যে পয়সা করিলে সমর্পণ। তেজি নীর ক্ষীর পান করে হণ্সগণ।। গুণির স্বভা ব সেইৰূপ অবিকল ৷ পরিহরি দোষ ভাগ করে नित्रमण।। यमाथु रहेल इस ठालनीत आहा ७१

शर्त उत्राक्त करत (पाय धार्त भागा। च उथन मत-नजा कति निजत । (जिक्क प्राय मखाय कति रव नुश्व गा। । भाग ছत्म तीजि क्रस्य कति नृति ना। । (पाय खा निख्छत निक कि नित्य हना।। मात कथा है जिथि हिन् नातर। याना शृष्ट कत कर र कि को निक्यात।।

वाथ श्रष्टात्र ।। मीर्व विभनी इन्स। কাঞ্চন নগর পতিঃগৌরীকান্ত নরপতি, শান্ত মতি चिं जिल्लाभाषत । धरन करवरत कि नारनः पर्याधन नम मार्न, ज्ञागना धना नृष्टत ॥ উভाव कामक লবে, ভল্য নাই শীলে লবে, প্রভাকর প্রভায় হা-तिन । विकास विकास मिख्न योग युक्त यदम নিত্য, ক্ষিতি তলে নুবিখ্যাত ছিল ৷৷ দেব দ্বিজ অনুগতঃ সজ্জন সন্ধিধিনত, অভিমত অভিম উত্ত-य। जीव मत्र वृष्तियान, पान कर्छत म्यान, खरि-রত ধরন করম ।৷ নগর রক্ষার জন্য, সেনাপতি (मनागर्) नियुक्त थानाय यात्र । उक्षे थत ह्य राठी, कञ्चल नांगा कांछि, श्रम गख वषा होतर ॥ युष्क मुलिकिञ हामः शहाक्तव मानि याय, नृश मान न्পতि मकन। পृद्धं चर्षा व्याःकम, कि कद ভূপের कंग, অতিক্র পৃথিবী মণ্ডল ।। দইপুএ

ভূপতির, मुन्द्र मुख्पशीय, এक कन्। क्रि भोषा-মিনী। রাম সম রাজ্য করে, প্রজা ভষ্ট করে২, সুথে याश पिरम याभिनी ॥ (काष्ठमुख शृक्ष ठळ, धता-তলে পুর্স্ত চক্র, কনিষ্ঠ মোহন নাম ধরে ৷ হেরি সে মোহন কপ্ত মোহিত সন্ধদা ভূপ, অপৰূপ পুলকের ভরে।। তনরার নাম শশী, ন্থর প্রথর শশী, দিবা নিশি সংস্থতে বিরাজে। দিয়া চম্পকের দল, র-চিত অল্ কোনল, অভরণ মণি ময় সাজে ।। লয়ে পুত্র কন্যা ভূপা, কিছু কাল এই রূপা, রাজ্যকরে গৌরীকান্ত রায়। কর্ম যোগে এক দিন, অভঃপুরে रेपवाधीनः (पथित्वन चालन मूजाय ॥ विभया म-किनी मक्ष, वोक्यानाथ नान। त्रक्ष, त्रक्ष खक्ष वछ-विधकदा मूर्थ मृन्र हाम, इतन हलना अकाम, (र्बि त्रांव हमत्क चलता। अतर्ति कल्लवत्र हिला-যুক্ত নৃপবর, আইবড় যোড়শী তনয়া। আসি বাহি-त्र (पश्यादन, ডाकि मिवापि (पश्यादन, ভाটে जान কহে অনুতয়া ৷৷ বুঝিয়া রায়ের রায়, ডাকিয়া দৃত্তে जुताय, मजी दल जाक भीषु जाटि । (यह मोज আক্তা পায়, কত শত দূত ধায়, মল্ল গণ ধায় মাল-माटि ॥ नत्क कम्भवान धता, मत्व करह कार्ह धता, वार्य बारम त्राक पृष्ठ भरत। खरा वह अका कन,

পলाইল जल जल, नाकानिया मृलाञल शरा।। যমদূত সম দূত, রজপুত মজবুত, ভাটে ধরে পরে ভূত প্রায়া ভাট কহে একেমন, সুচি ন্তিত মনেমন, বিনা দোষে ঘটিল কি দায় ৷৷ কেবা শুনে তার বাক, করি সবে ডাক হাক, তীর সম ভূপতির ঠাই । ভা-ট্কে হাজির করে, দাঞাইল যুক্ত করে, ভাট কছে बाजाब (पाराहे॥ (रुबि छांग्र पर्छ्यतः कटर भाव वाकाध्यः, नाहि ७য় अन निविध्य । उनशः इड्ल কাল, বিবাহের যোগ্যকাল, পাত্র দেখ অনে বিয়া দেশ।। এত যদি নৃপবর, কহিলেক জ্পবর, আ-निष्ठ कन्यात्र (याग्य वत्र। विषाय रहेशा छाउँ, रहे-তে রাজার পাট, চলিযায় ছাড়িয়া দহর ৷৷ হেরিয়া সুপাত্র পাত্র, সন্ধান করিয়া মাত্র, নানাস্থান করয় ভूमगा ताक क्यांत्रीत कल, (ययन उमनुकल, नाहि পায় রাজার নন্দন ৷৷ ফিরিয়া২ দেশ, লোক মুথে व्यवस्थिम, अनिल व्यक्त शूद्र नाम । विथ्या नगत অতি, প্রতাপানিত ভূপতি, গুণধান আখ্যা গুণ थाम।। তার পুত্র মনোহর, রূপগুণ মনোহর, পরম শুণ্ডিত নববয়।কে হয় সরস তায়, সরস সর্পদা कांस, तमिरकत हुए। तमयस।। मक माज विमातम, सम्होन मुश्रमप्र मर्बकन महिल म्हाव । बजारव

শুভাব ভরে, ভাবকের চিত্ত হরে, সৈ ভাব কহিতে বস্তাভাব ৷৷ শুবণে শুবণ করি, ভাট বলে হরিং, रहन क्रन रहित कान कार**ल । जुता याव रम**नगतन নাহিজানি দে নাগর, ছিল রাজ দুহিতার ভালে॥ পরে আলি বহু দূর, শুনিল অরুণ পুর, আগত रहेन (पथा याय। श्रून क श्रूतिन काया, महत्र निः कर्दे थाया अध्यम जः পिएन थानाय ॥ कानाख का-লের প্রায়, পাহারায় পাহারায়, ফিরে যত প্রহরী শকল ৷ নয়নে রুধির কণা, ভানু শম বিবেচনা, ছেরি তাर्ट् रय अधिकन ॥ नाठी (माँहा उत्रवान, वाम করে ধরা ঢাল, বসুন্ধরা চমকে ভ্স্কারে। করেতে नर्या पर ७, प ७ नी य गरन पर ७, पर ७२ ऑकार्य हाँकारत ॥ किरत यठ अल्लामाङ, हत्रत वाङ्गारम बाँकः ता गाक मम माज कति। कारवनी वाकानी র্ত্রীক্ ফরাস ফিরিঙ্গী শীক্ চৌকি দেয় স্বস্ব বেশ धति।। (इति वि विषमी जन, चार्य करत जिल्हा-मन, (ठात माथु वूर्य अनुशास । यपि नहे लाक পায়, মারি গুড়া করে ভায়, বান্ধি পরে কারাগারে আনে।। কারার রক্ষক যত, কারার আছ্য় তত, তারার উপনা কিবা দিব। তারার সমান তারাঃ (वज़ाइट्ड पिट्स भाता। नूट्थत्व मात्रिय धतिव ॥

क्रमामात (यन यम, काशांत विनय कम, काञ য়াল দেইৰূপ তার। কোড়া হাতে থাড়া রয়, কত শয় কত শয়, ভয়ে কৈত করে হাহাকার ৷৷ কেহ वरन लाग याय, यक पिन लाग काय, ब्राव नाहि इडेरव अमन। नाथी कोन मूल माल, (थरम कह বাপহ, করি বলে এআর কেমন।। কান্দে কেছ পেয়ে छाल, (काठानिया हुल हाल, व्यन श्रूनः घुताय দয়ন। নাহি যদি গুনে তায়, সোঁটায় লোটায় পায়, গোটায় নাছাঙ্ডে কদাচন ৷৷ হেরি ভাট ভাবে মনে, যাই না জানি কেমনে, ঘটয় বা বিপদ বিষম। विष्मी (मिथिया। भारत, भारक् क्व धरत जारतः এযে দর দমনের সম।। এইকপ ভাবি পরে, বা-किया माह्माछ्द्र, উত্তিল निक्टो थानात । পর-**দেশী জানি তায়, জিজ্ঞাসয় পাহারায়, কোন্** হার বলি বার বার ।। ভাট বলে মোর ঘর, হয় काकन नगत, अथा कि इ चाइ अरमाजन। याहै व ভূপের পাশ, প্রকাশির অভিলায়, এই আশ বুঝহ यहन ॥ अनिया अध्री धति, चानि पिन जुता कति, कामानात काटक् उठक । (म शूनः मुशास उ।स्र ছाड़ि दिन याइवायः वृक्षिया विदन्य विवत्र।। अष्ट्राइमा राज जात, ज्या देशक आध्यात, र्या

এল গড়ের নিকট। আছে সপ্ত দার যার । শীঘু তরে লাধ্য কার, চোর সাধু সবার সঙ্কট।। প্রথম দুয়ারে यङ, जीदान्माज भंजर, গোলেन्माजान्माज नाहि र्य । क्रिया नकल नका, जीत खनिनक नक, (मार्य मस्य मस्य नार्य खया। (मशाई मार्कन गर्न, ফিরিতেছে অনুক্ষণ, নানাস্থানী কিবা কর তার। রুষিয়ারুষিয়া জাতি, করে কোথা হাতা হাতী, হেরি জ্ঞান হয় চমৎকার।। কোখায় রুমান সবে, উথলিয়া মহোৎসবে, ঘুষা ঘুষি থেলে অবিরত। তুরক তুরস্বোপরে, কোন ঠাই কীড়া করে, আরাবী সরাব পিয়ে কতা৷ দিনামার ইলামার, করে কোথা· भात भातः (म भवात विकरे आकात । ভाট वला वफ़ माय, यमिता ছाफ़ि थानाय, चाइनाम अकि পুনরার।। চিতিয়। অনেক পরে, দুয়ারে প্রবেশ করে, গত মাত্র ধরিল সেপাই। কছে কাঁহা তেরা ঘর, ত্রাসে কাঁপে থর থর, মুথে কহে ছাড় মুঝে ভাই ৷৷ শুনিয়া তাহার ভাবে, জানিয়া সব আ ভানে, ভীত দেখি কহে মত্ ডর্। যাওগে किमिक लाग्, विष्ट्य महत्र थाम्, हाय् काम्नि ভाই (वज्ञापत्।। ভाট বলে निहि हाय, लिकन् याजेका नाय , जाई महाताज्य रजूत्। (भाकान्

श्वतर् (पण्) करा তा ज्यांत् (पण्) यात (पर ৰহত্জৰর ।। সাধু জ্ঞানে পরে তায়, ছাড়ি দিল পাহারায়, श्रुभरन रेश्ट आखमात । ভাট বলে রক্ষা পাই, হেন কভু হেরি নাই, পড়ে আসি দ্বিতীয় पुषात ॥ (परथ जाय शूनताय, कानाछ कात्नत आय, रक्टत वर अहतीया गए। हान हान करत मुर्थ, जनवान थरन इन्थ, रहिन रमरह न। तरह की-वन ।। श्थिक गाँ ७ ती ठिक, मुद्रकी अतको भीक, यम मम (थरन नम्क पिया। উष्ट्राभारक क्षाय हानी, কেহ নাচে দিয়া তালী, প্রমত্ত সাদক দ্রব্য পিয়া॥ 'কেই দিয়া গোঁপে পাক, ফিরিতেছে পাকে পাক, জাঁকে হাঁকে নাহি থাকে প্রাণ । গোলেলার সন্২, कार्स वादक सन्रम्बन्ध परस करण ज्ञान अन्।। মারে যোঁটা ধরি ঢাল তালে তালে ঠুকে তাল, নামাল নামাল কেহ কয়! ডলে গুলি দিয়া মাটী, किर्वा (थनाय नाष्टी, श्राकात (र्तितन नात इस ।। (कर्माद्र मालमाहे, मुर्थ क्दर काहे काहे, বিকট খ্রতি স্বাকার। ধ্রধর মার মার, শব্দ করে অনিবার, কেকরে শ্বণ বাক্যকার।। ছাকে शैंक भारत शैंक, (कर किया करत कींक, (कर कारत मन्त्रा नाहि करत । (कह दा धतिया कारा,

আছাড়ে পাছাড়ে কায়, রুষি তায় কৈছ আদি ধরে।। হেরি ভাট ভাবে তায়, এ আর বিষম দায়, হায় হায় বুঝি প্রাণ যায়। ছাড়িয়াছি এক দার, পড़िन् घि छीय वात्र, नमन छवरन श्रूनताय ॥ रहन কালে হেরি তায়, ধরে আনি পাহারায়, পূর্বস্ত লৈল পরিচয়। ছাড়ি দিল হাসি২, তৃতীয় দুয়ায়ে আনি, ভাট পরে উপনীত হয় ৷৷ দেখে তার কোৰ पिकः काकति काँछेति तीकः सोध सीध (दा**ल कद** রব। চরণে বান্ধিয়া ঝাঁজ, বিকটং সাজ, করি ब्राक्ष घाद दाव्य मव ॥ किन्नी ह श्रेशत जान, कत-তলে করবাল, কাতারে কাতার থাড়ারয়। রায় বাঁলে রায় বাঁশ, লোফে হেরি লাগে তাস, এট্ ঘট্ कृति नित्रथम्।। পनाभी পाठान ११५, (थनिट्डर्ड् অগণন, মল্লগণ মাতিয়া মাদকে ৷ ফেরে দিয়া পাক সাট, কেহ কারে মারে সাট, ছুটে প্রাণ শব্দ ठेक्ठेंदक ॥ (कर्थाय नाथी कीन, (कर्राम विन थिन, (कह काथा करत नाना जूग। काथाय का-হার করে, কোন জন বন্ধকরে, কথায় কথায় করিপুম'।। কেছ করে ছম্ হাম্ কলেবরে বছে যাম, যোরে আঁথি যেন প্রভাকর। দবে হয়ে থাক থাক, সবে কহে থাক থাক, ডাক হাঁক বাক ভয়-

ৰূর।। করে টাঙ্গী ইউ বাঁক, ফিরিতেছে যেন চাক, ধুম ধানে কাঁপে বসুমতী।পোশাক হেরিলে কার, জ্ঞান হয় চমৎকার, আকার হেরিলে যায় গতি॥ এই ৰূপ হেরি ভাট, সভয়ে দেহ আকাট, ভাবে মনে কি জানি কি হয়। যদি কেহ করি জোর ধরে করে কর মোর, তথনি জানাব পরিচয়।। ইত-স্তত করে মনে, তীর সম আগমনে, ধরি দারী জিজ্ঞাসা করিয়া। ছাড়িদিল সে দুয়ার, ভাট বলে বার বার, এবার কাইনু উতরিয়া ।। চতুর্ণ দ্য়ারে পরে, ত্রায় প্রবেশ করে, দারি গণে হেরে পদ-স্থির। কাছে আদি দেখে তায়, কোন ঠাই কেহ ধায়, নয়নেতে বহিছে রুধির ।। নির্থিল কোন-थारन, शतिशृक्त वन्युशारन, पारश वीत रमशाहित পারা। কার সাধ্যকেবা সরে, ধমকে জীয়তে মরে, য মকে চমকে বুঝি তারা ।। কিবা কত কব তার, সবে যেন অবতার, প্রকাণ্ড শরীর কেহ ধরে। ছোটে তীব তারা সম, উপমায় নিরূপম, হেন বল রাথে কলেবরে ৷৷ কোথায় করিয়া থানা, কোন জन (पर श्वाना) नाहि माना मादन काइ (वादन । वन्तुत्कत पूम मात्म, প্রহরীর খুम খানে, বাক্য নাহি শুনা যায় গোলে।। আতত্বে পরাণ কাঁপে,

কেহ কারে ধরি চাপে, কেহ চাপে ধরি শোষে তীর।কেহ করে হায়২,মল্লগণে ঠায়২,কোন দিকে ঝোঁকে কোন বীর।। ভয়স্কর কলেবর, চরণাঘাতে বি-বর, ধরায় ধরায় কত স্থানে ৷ হেরি ভাট বলে বাপ্য ধন্যহ বীর দাপ, প্রভাপে তরাস মনে মানে।। প্রবে-শিতে ছারে পরে, ক্তান্তের সন্ম ধরে, কাঁহা যাও বলি দারী তায়। ভাট ভাবে কব কায়, পুনর্বার একি দায়, কিৰূপে ছাড়াই এ বেটায়।। ভয়ে কোন मटा (भय, वृक्षाइन मिवटमय, मका छात्र मिविस्स ভাট। সাধু জানি করি হাঁপ, কহে যাও চুপ চাপ, অবিলম্বে ছাড়িয়া কপাট।। বিষম পঞ্চ দার, ভাট হৈল আগুসার কেবা তার কবে বিবরণ। মোগ**ল** মাগান কণ, ফিরিতেছে অগণন, শিক্ষইয়া পার-সীয়া গণ।। থমকে ঝমকে দাজ, শিরেতে আড়ুয়া তাজ, ভীষণ বল্পম ধরে করে। হুহুম্বারে উর্ক্রে প্রাণ, করে করে থরশাণ, হাতিয়ার ধার শোভা-করে।। কেবাকারে যায় রুথে, নিজ রব করি সুথে, चन। मूर्थ नाहि मस्त वाक । চी कात्र (घत घात्र) কলরব অনিবার, সরিবার নাহি স্থান ফাক্যাকে কা-হারে ধরি টানে, ছুড়িয়া ফেলে বিমানে, ভূমে পড়ে करत्र महानाम। शत्रदम्भी लाक यक, वल वृक्ति मव

্হত, মনে মনে গণয় প্রমাদ ৷৷ ঠুকে ভাল যেন कान, (कान ठाँ है थाय मान, इहे लाहे लए घाय छंड़ा। কেই করে গগু গোল, কেবা শুনে কার বোল, কেহ कात्म (थर्य नाथी एषा ॥ (कश्वा वृकास जाय) (कर जानि जादि धाय, पूर्ण मार्ग कदि मात्रा माति। ভয়ানক ধরি বেশ, কে কাহারে মারে ঠেশ, কেহ कत (कर (कन नाती।। (कान जन (थरप्र माति, न-श्रुटन विरुद्धि वातिः भनायन कटा कान ठाँ है। जाहे বলে এই বার, কিৰূপে হুইৰ পার, আর বার ঘটিল वालाई ॥ ध्रिया माहम काया, याहेट पुषाती जाया, জিজ্ঞাসা করিল কোন্ হায়। জানিয়া বৃত্তান্ত তার, ছাড়িল আপন দার, ভাট বলে বাঁচিলাম হায়।। श्रादि निशा यह घाटतः निर्वाधन श्रुनर्वादतः हे इशाप मिल्लिक आपि भन। याप्ति याप्ति तका करतः, (माँहै। बाठी करत करत, निज निज चारन निरम्भाजन॥ পলি পলশীয়া জাতি, ফুলায়ে বুকের ছাতি, ফেরে করে ধরে অজ শাণ। সুইজ সান্ধব যত, চারি ভিতে অবিরত, সবে করে গুলুক সন্ধান ।। পাইলে ছি-ৰাল চোর, অমনি করয় শোর, বজোরে বিকট করে নাদ । নত্তে গণে কপ্ত তার, সাধুর সন্ধট যায়, ভয়ে প্রাণ হয় অবসাদ।। ফাঁসিয়া ফেরেব যারা।

জীয়তে মৃষ্ধু তারা, মৃহত্তেকে করে গেরেপ্তার ৷ परछ पछ केए भए, भारत शृष्टि मृष्टि एए, भकाम সকলে নবাকার।। কোপে দাপে কাঁপে কায়, পিপা-সায় প্রাণ যায়, নাহি পায় কিঞ্চিত সলিল। তাত্ यि कथा कय, निषंग्र अह्ती जाय, तारंग चारंग ভাগে মারে কীল।। শুনি কন্দনের রবে। কেটা বৃ नीतरव तरवः भरव करव चांश भति भति। अस्त स्त রক্ষক গণ আমারে কর বন্ধন, ধৃত জনে তুর্গু পরি-र्ति॥ रहित छाउँ कस्म थरतः याईरा ना भर সরে, মনে করে তরিব কি ৰূপে। কি জানি দুয়ারি বরে চোর বলি পাছে ধরে, যদ্যপি গমন করি চুপে।। অভএব কার্য্য নাই, প্রকাশিয়া চলি যাই, তাহে না ধরিবে কোন জন। এত ভাবি ছারিচয়ে। কয়ে নিজ পরিচয়ে, তথা হৈতে করিল গমন।। পড়িল সপ্তম দার, হেরে হয় চমৎকার, মজপুত तक्रशु उ इन। मद बादक बादक बादक, क्रदत क्रदत ফেরে পাকে, ডাকে জ্লাকে করে হল স্থুল ।। কোন मान मादा जान, भरक कर्ष्य नारंग जान, उद्य তाल रशक्र कन। ध्रि चक्र (यन काल, मार्खाः ইয়া দার পাল,কত শতকে করে গণন ৷৷ পাহারাহ থেতে, বিরাজে বিবিধ জেতে, কেব। থেতে পারে

তাহে ছলি। পরসীয়া শেথ পাক, ভাগল ওয়ালী काक, स्थानन अधिक महावनी ॥ थाव्य वत्रमा করে, টাক্নাদি অখোপরে, ফিরি ঘুরি করয় ভু वन । मानटि कनि गन, किमाध्य कदा गमन, थ्रूर कदा প्रांग मन ॥ एमथि छाउँ वत्न हास, वन प्रांती পাহারায়, মাছি বুকি এড়াইতে নারে। নির্থে নি-কটে তায়, ফটকে আটকে কায়, ভেল ভেল চাহে चात गाता। वाद्य पाय जुया जात, পतिशृष्टं का-রাণার, হাহাকার শব্দে উড়ে প্রাণ। মরি মরি যাই ্যাই, নিনাদ শুনিতে পাই, কেহ কছে কিসে পাব खाग ।। এই क्र एहिंद्र भरतः । छाउँ नाहि मरतः, মনে ভাবে কি করি তরিব। এবার হইলে পার, धनगदा भूनदीत, ना चामित यञ कान कीत ॥ छ-রসাবানিয়া পর, পূর্কমত সুগোচর, দারি গণে করি সমাচার। চলে অতি বেগভরে, নগরে প্রবে-শা করে, এড়াইয়া সপ্তম দুয়ার ॥ নিকটে কেলার ছল, रेनन। प्ल क्लानाइन, हेन हेन क्राय महत्र। ্হাট বাট পরিসর, অউালিকা আলোকর, হাজার বাজার শোভাকর ৷৷ তদ্য পরে রাজবাটী, শোভে অতি পরিপাটী দরশনে নয়ন युषाয়। বালাখানা সুশোভিতে, নহৰত নৃত্য গাতে, পরি পুরুষ পুরী

সূপ্রভায় ।। দিজ গণ অবিরত, বেদধুনি করে কত,
শব্দঘটাবাজে অনিবার। শুবণে প্রফুলকায়, কিষা
সাধ্য বস্থিবায়, বাখানিল ভাট বারহ ।। সমুথে-তেরাজ দার, হেরি হয় চমৎকার, আনন্দে হইল
আগুদার । যম দম জনাদার, দারি গণ রাথে
ঘার, ভণে দিজ জী কালীসমার।।

> অথভাটের অরুণ পুর প্রবেশ ও রাজার সহিত কথা।৷

পয়ার ।। হেরি রাজ নিকেতন পুলকিত কায়। সা-ক্ষাত করিতে রাজে ক্রত ভাট যায়। কালান্ত কা-লের প্রায় দারে জমাদার ৷ উতরিয়া নিকটে জানা-य नगा हो व । नुथक व नया ए छिनिया चाव भाव । ছाড়ि पिन घारत (यरं यथा यही नान ।। न्रान्त নিকটে পরে করিতে গমন। সভার শোভন হেরি পুলকিত মন।। পাত্র মিত্র দেওয়ান মনসী কার-वन। पश्चतित भाइतित कागदक निश्रुत ॥ शुद्राः হিত ৰিজ বৈমে পণ্ডিতাদি কত। কথক পাঠক কবিরাজ শত শত।। ভাঁউয়ে ভর্ত্তক ভাক্ত ভাঁড় ভট্ট গণ ৷ ভূপতির যশোগুণ গানেতে মগন ৷৷ ফুকারে निकद थाए। यामा (माँही पात्र। हीना शाथा हीत्नर केटन अनिवात ॥ शाहाताय हुल हाशु पाल कटतः

সুথে। দরবার হেরি ভাট হরবিত সুথে !। ভূপের সমুথে পরে করি যোড় হাত।প্রণম্য সভাস্থ গণে করে প্রণিপাত।। দাঞাইয়া দণ্ডধরে সব সমা-চার। বিভার সমন্ধ বার্ভা করিল প্রচার ॥ সমা तित्र विवारश्त नवाम अनिया। क्रिक्डामिल मशी-পাল ভাটেরে ডাকিয়া।। কাহার তনরা কন্যা কো-থায় বসতি। কিবা ৰূপ গুণ যুক্ত হয় নরপতি॥ ক-ন্যার বয়স কত সুন্দরী কেমন ৷ বিশেষিয়া কহ रश्नि विरम्य कथन।। (कमन चृत्पत कल भील मूनी-লতা। আছ্য় কেমন শক্তি কিরুপ যোগ্যতা।। ভাট কহে नवकार कवर भाव। कां ज गाहि जुल-তির সব বিবরণ ।। মহীপতি মহীপতি কাঞ্চন नगरत। अनीन काय्र शाबीकाछ नाम धरत।। बाल खन गुक्र पृष्ठे भूज मुनकन। (का है भूष ठक बात क-निष्ठ रेगार्न ॥ शत्रमा खन्मती अक जनमा जारात। नाम मानी हाटब मानी वमत्न याहात ।। ठाँ छत कि লর ওঠ বিশ্ব সমতায়। হারিল কামের কান্তা ৰূপে-त्र जूनाय।। नीन लग निक्लम मह जात व्यक्ति। ना-সায় নাসয় তুল দিতে সারী পক্ষি।। সচ মস্ত্র গিরি बाजि काम महायदा। मृगान जिनिया रुख भेर कि कत्र। निर्श्न छाहात खन किह्वादत नाति । नाना

শাস্ত্র সুগোচর চমৎকার নারী । বয়স যোড়শ বর্ষ সর্বারমা। বস্থিতে বস্তে বস্তু না দেখি উপমা।। ভূপতির প্রভাপেরাবণ সম নয়।পুঞ সম্ পালে প্রজানবে সুথে রয় ৷৷ নরপত্তি বয়াবিকা দেখিয়া সুতায়। চিন্তিত হইয়া মোরে পাঠান এ থায়। বিৰাহ্যদ্যপি হয় শুন নরপতি। মনোমত কন্যা পাবে দর্ঘ গুণবর্তী।। গুনিনু লোকের মুথে তোমার তনর। মনোহর নাম ৰূপ মনোহর হয়।। হেরিতে দে মনোহরে হয়ে পুলকিত। হজ্রে হা-জির আদি হইনু তুরিত ৷৷ দেখিব কেমন পাত সুপাত (कमन । किया कल किया खन (कमन गर्छन ।। भूवटन হ্**ইলভূপ হর্ষিত মন। অঙ্গুলি হেলারে রায় দে**-থায় নন্দন।। বসিয়া আছিল নব যুবক সভায়। মণি নাহি শোভে অঙ্গে অংশ্রে শোভায় ! গোঁফে-র দিয়াছে রেখা নবীনং। বদন নির্থি চক্ত হুইল ম-লিন।। মনোছরে হেরি হরে ভাট নিজ জ্ঞান। মরি২ বলি কত করিছে বাথান ।। কিবা অপক্রপ ৰূপ না र्हात अभन। क्रि भरत्र नाती भन भकती (यभन।। यात अं ि करत नका এই खनमनि । जीवरन मः ग्र व् कि হয় সে রমণী ৷৷ এই পাত্রযোগ্যতার তন্যা যেমন ৷ काना इंटिं भोजीकार कारे दिवस मन ॥ मरमाधन

করিয়া অরুণাধিপে কয়। কি আজ্ঞা করহ শীষু याव गरामा ।। यहेन रहेरव कि ना कर नज़शिक । শুভ কর্ম পুর্ণ করা ভাল শীঘু গতি।। শুনিয়া ভূপতি অভি করিয়া বিচার। উচিত বিবাহ (पश युक्ति किन मात्र ॥ मजा मुक्त चात्र मवाकात नस्य রায়। পুঞ বিভাদিব ভাটে কহিলেন রায়॥ অনুমতি পেয়ে ভাট হইল বিদায়। দরবার ছাড়ি আদি পড়িল থানায়।। পূর্মত এড়াইয়া যায় সবস্থান। সমাদ কহিতে গৌরীকান্ত বিদ্যমান।। याइँ एउ२ कछ कदिए मनन। शाइन मुन्द बाल রাজার নন্দন।৷ শুনিলে পাত্রের তত্ত্বাঞ্চনাধি-পতি। নাহি জানি দিবে গোরে কত রত্ন মতি॥ তनয়। (यमन रेश्न जनয় ভজপ। সভোষে সভোষ যুক্ত করিবেন ভূপ।। এইকপ ভাবিয়া আনন্দে চলিযায়। উপনাত হৈল পরে রাজার সভায়।। मञामप मह चाष्ट्र भोत्रीका छ ताय । निकटि या इसा छाटे मधाप जानास। कन्यात मधक कति याहे-न् ब्राजन। गुरा कवर मरानम विववगा जानिए বিশেষ বার্তা ভূপতি চঞ্চল। ভাটে ডাকি জিজাসি ল সমাচার বল ৷৷ কোথায় পাইলে পাত তনয় কাহার। কোন দেশে বাস করে কিবা নাম ভার।।

'গ্লাজার তন্য কি না চাহি শুনিবার । কিজপ সে (मर्म वन चाछात्र विछात !! किया क्रिशवत वत्र वि-षान (क्यन। छाँ। करह यहा भग्न कति नित्त मन।। অরুণ নামেতে পুর রাজা গুণধাম। প্রতাপে রাবণ সম দর্ভণথাম।। মনোহর তার পুতা সুকরে সুঠা-य। कार निक्व कथा एक मान काम ।। वश्म न-वीन অতি ननिত গঠन। ह्वित्न नानीव मन इस फेला हैन।। अनवान नई माद्य मुज्युत राम। अधिक কি কব সুধাময় যার ভাষ।। ভূপের নিকটে যবে সব नगाहात । विवाह निर्दाह (२७ कतिन थहात ॥ भूव-(१ विष्ठात कति नुश पिन मात्र । जागरेन मगन देएँ न সভ্যেরা সভার ।। শুনিয়া আমার মধে তব নাম্ ধাম। হইল ব্যালল চিত্ত পাত্র গুণধাম।। বিবাহ য-मालि (पर् अन पर्ने लान। मुरथ तदन निक्नी (जा-মার চিরকাল।। এতেক শুনিয়া গৌরীকান্ত আহ্ন-দিত। হইল কন্যার বিভা জানিল নিশ্চিত ।। ত-থাপি সম্পন্ন বিনা অন্তরে অস্থির ৷ ব্রাহ্মণে কহিল দিন করিবারে স্থির।। জ্যোতির্বে ভাগণক পণ্ডিত या जिला । मत्य भिरम पिन रेष्ट्यं। क्रिया क्रिना। विवाद्य मधान अनिया श्रुतवामी। फिरम यानिनी

ब्रट्ट महानत्म जामि ॥ विवद्ग निथि अक शद्ध नद्रপতि। পাঠाইन धनदाम द्राष्ट्रात अ॰ इंडि ॥ হত্তে লয়ে পত্র দ্ভ হরিষ অন্তরে। অরুণপুরেতে भामि প্রবেশিল পরে।। পত্র দিল খানি ভূপতির বিদ্যনান। পাঠকরি পুলক অতুল পরিমাণ।। প্রত্যু खन्न निथि पृत्उ कनिया वर्णन । महि छि विভान করিতে আয়োজন।। অন্য চিন্তা শশী অন্ত ত্রিত र्हेन। आनमः आपिडा स्पि गगरा डेटिन ॥ युग-ধাম দামামার শব্দ কোলাইল ৷ প্রস্তুত হইল ক্রব্য णाखाय मकन।। এथानে পত্রিকা লয়ে কাঞ্চন নগ-রে। পঁহছিল দৃত গিয়া প্রহর অন্তরে ।। পত্র দিয়া भूरभरत किह्न मभा हात्र। खनिया जकन वार्छ। या-नन्द अभाव ॥ नाना नंदक नाना वाम्। वाकिएल লাগিল। নগর নাগরী গণে দেখিতে পাইল।। চারি-मिर्ण कृष्टिक कामान नुष्र । नक्ष्ठ राममा वा-किट्ड ७५२॥ क गरुष्क पत्क (जान जादक द्वारथ ভাল। নির্থিতে দাজে বৃদ্ধ বনিত। আবাল।। উচ্চ कत्रि जूती (जती वाद्य व्यनिवात । ठेनाठेन वाद्य चड़ी पुशांत पुशांत।। शीउ वाम्। श्वादक शृतिव मक ठाँहै। श्रेतीत रहित्व भाषा इत्र यानाई॥ शाहा-ता दिमल मद थानाय थानाय। पृष्ठकरन मृत्हे वास्क

(याषायर।। ध्रम धाम (मिलाई कतिष्क धात धात। কৃতান্ত ডরায় হেন বৈদে জমাদার ।। ডাকাভ্ চো-রেতে পুর্ম্ভ ছিল কারাগার। হাতে কড়ি পায় বেড়ী করে হাহাকার ॥ রাজাজ্ঞায় বন্ধন ঘুচায় সবা-कात। जतारम निकटि जारम खत्रमा काश्रत ॥ नि-শান উড়িছে হয় করী সুসজ্জিত। ডক্কায় মারিছে ডভাবেড়ে চারি ভিত ।। ঘারে রস্তা তরু পুর্স্ত अ ख वाय मात । विविध नू मृभा इवि भृगा हम ६-कात्र ।। ছाटन२ छाक्त (मौक्त मद थाए। । शामिछा দুলিচা ভাল মজলিমে পাড়া ৷৷ দেয়ালে দেয়াল-গিরি বিস্তর প্রকার। কড়িতে কাঁচের ঝাড় ভড়িত वाकात। धारमर तारथ नाथी नामा अक नाती। সভায় শোভায় বাকা হকা সারিই।। পেঁচাউ সট-কা স্থনলে নব শাথা। যোরছাল চামর আড়ানি कड भाथा।। चारमाञ्जन देश्य मव पिथिए मुन्नः র। সভায় বসিল আদি কত গুণধর।। কালয়াত্ কাওয়াল থেয়ালী টপু। বাজ । ভাঁড় ভাট ভেডুয়া (वज़ाय कति माज ॥ वाई (थम्हे। ७यानी कितिरह ठाँहर। इतिष्य भ्वात्र चात शतिशीया नाहे ॥ मक ঠাই সর্ব বস্ত করি নিয়োজন। সুতায় হরিদ্রা দিতে कहिन ताजन। आछा भाव मकल रहेन जुनावान्। कतिवादत ७७ कम मृथ्य मगाशान ॥ পूतवामी मत्व भत्न यानत्म शृतिन। श्रीकानीयगात शङ् ভাষায় রচিল।।

অথরাজ কন্যার গাত্রে হরিতা।।

পয়ার।।:হরিদ্রা মাথাতে আজ্ঞা দিল নরপতি। রাজ সূতা কাছে থায় যতেক য্বতী ।। চলিতে ভা-বের ভরে তগ মগ মন। এসং শশিসুথী করে সংখ।-ধন।। সবে আসি হাসি২ সভাবিছে তায়। করে মধলাচরণ হর্ষিত কার।। শুভ সমাচার শুনি পুর্ नाती गण। প्यकन्। कत्क कृति यात्र कत्न छन्।। गाना शाम नागा जवा बाट् नियाकन। मातिर नाजी भएव करत्र नित्रीकन ॥ रकानठाई मधि मुक्त एहन। ভারহাসন্দেশ নিঠাই चिश्वेयन সুবিস্তার।। আম জাম कैं। है। न जिल्ली त चापि कन। यदार थरतर कि तिए खेड्युन। करत्र कि॰ करत्र कत्य वारताजन। (य-थान (यमन वस इस अरमाजन।। इन्युनि भाषायुनि করে রামাগণে। পূরিল রাজার পুরী আনন্দ ভাজ-न।। विकिन विकिन माठी शति गंधी मत् । जहेशा হরিদ্রা তৈল খীরে যায় তবে ॥ মল্লিকা অস্ম তৈল গন্ধে প্রমোদয়। বাটি ভরি চঞ্চল গমনে উত-র্য়।। অগৌর চন্দ্ৰ আদি কাঞ্চনের থালে। হরিজা

সহিত্ নিলে শোভিতেছে ভালে ॥ সুগঁ মি পুয়ের भाना गाँथा काब्र करत । यमछ नहेशा मह्ह पाएः इन थरत्र।। नाती मस्या हिन अक পाए। सन्न निया। হেরিয়া কহিছে এক রামাকে ভাকিয়া।। সরম ভরম গেল সর্যের কথা। আইং আয়োজন (इरत शाह वाषा।। वह मन कवा कि ताकात रयाना जाय। मदिलाच्यांत कथा कहिय काहांस ॥ अक् কন্যা ভূপতির আছিল সংমারে। কি সামগ্রী কৈল তার বিভা অনুসারে ॥ ছিছি মেনে কভুনাহি (मध्यिष्ट्रि अयन । यहाँ शूं जा जाहे को जि (याग) चा-स्वाक्षन॥ त्माक्षरभद्र दन ब्राक्ष निक्तीब विद्या।. কুপণতা দেখে যায় বিদরিয়া হিয়া ।। এই কি ভূ-পের মত প্রস্তুত সকল। শুনিলে নগরে লোকে কি विनिद्य वन !! जामत। (य जामिशां हि प्रमान তরে। हেन জন নাহিক যে আবাহনকরে॥ এমত नत्हरां वाभिग्नाष्ट्रि हेष्ट्रायु । वायखन दाथि दात्त चाइन विद्या धरेका कथा कुछ करह दाश ভরে। নষ্টের স্বভাব শিরে সদা বাস করে ।। কিন্ত তাহে সলজ্জিত। হয়ে রাজ রাণী। সাভ্যা করিল তাহে विन भिष्ठे वानी।। नान। कार्या मन। रस चा-वृष्ठ थाकित् । ममापत (महे (एजु नातिन कतित् ॥

তাহাতে দুঃথিতানা হইবা কোন জন। ক্ষমাকর अपा मम अहे निद्यमन।। आश्रनात्र घत वाहे ने आ-দিয়াছ সবে । বেজার হইলে শুনি লোকে কিব। करव।। এই মত नानाविश्व मिश्व चानाभरन । खिछ नि कि कि जुन्ध करत जन्म जन्म।। कान्यान् विधाती এথা বিভার সমাদে। উদ্ধৃ করে নৃত্য করে পুরিয়া षाङ्कारम ॥ त्रांघव बाक्षण कं छ हाल व्यनिवात । धन लाज्ञ थात्र पुःथी ताज पत्रवात ॥ (पश्चिमवाकादत শীঘু আপনি অমনি ৷ খুলি দিতে ভাগুার কহিল न्षमिति। ताना भित दञ्ज (धन् वञ्ज अखद्रत । अदि-রভ শত২ করে বিভরণ।। জয়ং শব্দ করি করে णानी बीपा छनि यास मद्य नद्य कतिसा आहाप।। এথানে তর্নী গণে কৌল রীতি মতে ৷ হরিদ্রা মা-थाय मनी यम बनागर छ।। (म यदम कि नाउ ছার হলুদী মিছার। তাপে ষষ্ঠ পোড়ে হারি করি-या बीकात ॥ कटात जुनाय ति इहेटव कि॰कती। **ठिक्ना ठक्ना देवन खमरि खमरि ॥ इन (एह मार्का-**ইতে কিবা শোভাপায়। কাঞ্চনে মাথালে কাঁচ কি ফল ভাহায়।। কেহ পরিহাস করি কহে আহা-यति। भागित विवाह इत्व अल्या महाति। यद्या-हत्रा मथी चाष्ट्र निरम्ना जन। हम हम जूरम मनी

कत्रि पत्रभन ।। काष्ट्र जानि शामिर ताजनिक নীর। পাতিল বাক্যের জাল হেলায়ে শরীর।। কহে শুন কিবা দুখ ঠান্তর কন্যার। যৌবনে মিলি-ল পতি আনন্দ অপার।। প্রজাপতি এত দিনে বৃঝি मान्कृत। ছ् दिन भोत्र छान कु दिन मुकून।। यथु-লোভে মধুলোভা ভূমিবে তাহায়। বিধির নির্বন্ধ বিনা কেবা সুধ পায়।। কেছ বলে এত দিনে পুরিল रामना। निवान कतिन धनी कामाशियाजना॥ आहा बाज्याना करण (यगन वभनी। পाईवार्ड्स निज পতि অতি ৩৭ মণি।।পতি বিনাযত দুঃধ সহিয়া আ-ছिল। विदारम्ब क्ल क्रिंग निन मु 5न।। अब वाष्ट्री भाग भागारमत किया चार्छ। मूरथत मईती वृति (পाहाइन काष्ट्र।। मटन इ (वपन (वटन विष्क्र हरें-ল। কালেতে ঠাসর ঝার ঠাসর মিলিল।। প্রাপর चाट्य अहे भारत्रत निधन। पुःथ विना गूथ कञ्चा र्य घटेन।। यपन জानाय धनी फिना जानाउन। তাহার দে শরে বল কি করে এথন।। দে দব আগ্ড ণ এবে হইল বিগুণ। সুথের সঞ্চারে সব প্রকাশয় গুণ।। রক্ষে ভঙ্গে রস রঙ্গ করি কত কয়। লজ্জায় कमन मूथी चरधामूथी इय़।। मिनित निकटि चामि কেহ্ হাসি কয়। আইবড় ভাত থাবে অদ্য মমা-

লয়।। মরি মরি যে যাতনা আছিলা সহিয়া। পতি লয়ে যুবতি শীতল কর হিয়া।। প্রেমাধুজ প্রস্কুটিতা হইল হৃদয়। মনোমত হৈল আর ম-অথে কি ভয়।। হর কাল চির কাল সুথে সহ পতি। চাহিবানা এর পর আখনবা প্রতি।। নাগরে মিলি-যা স্থ সাগরে ভাসিবে । আর কি সুমিষ্ট ভাবে এ मद्य ভाषित्य।। श्विया धनीत यांनी कट्ट बाज-বালা। কেন গো দিওণ আর জ্বালাইছ জ্বালা।। যুৰতী পাইলে পতি কথা কি না কয়। বাক্য যন্ত্ৰ किन जर्व वपरनटज तहा।। आत (पथ जाहे यि हहे ত প্রমাণ। কে কাছারে কহে তবে কথার সোপা-ন।। ভামি কি আনার সহ করিতে আলাপ। অকা-লেতে কেন ধনি দেখিছ প্ৰলাপ ॥ চিত্ৰে সখী কছে চিত প্রফুল হইল। যেখন কহিল ভাল উত্তর পাই-ল।। কিন্তু ধনী নিজভণে চতুরা যেমন। চতুর नाशत यामि भिनिन (उभन।। विधाउ। निधुत नटह জানাগেল ঠিক।রসিকায় দিল ভেট রতনরসিক।। যত সাধ ছিল পুৰুকৈল মহীপাল । নাগর পাইল ভাল ধনীর কপাল ৷৷ এইৰূপ কৌতুকাদি করিয়া नकल। याथाइँटउ र्नुषी मिन काट्ह छल ॥ যত मधी माজि पिन मरका यन (पर्। नरेशा क्षन

महकात्र। मुगिकि हन्पन हुशा भाष्ड करत कात ॥ वजन वाक् नि कून याना (कर्नश्र) नृशनकरनत का-ছে উপনিত হয়।। জীআচার পূরাপর আছয় বি-ভায়। সেই হেভ নারী গণে হরিদ্র। মাথায় ।। দাস গণে প্রস্থান করিল অন্য কাজে। সমারে যেরিল বামা অপৰূপ সাজে।। হলু ধুনি যত ধনী করে অনি-वात । श्रीतन भर्षत नाटम खवन ताजात ॥ रिक् ্কাসি হাসি২ নৃপতি সমারে।কপালে হলুদী দিয়া हाट्याथि ठाटत ।। (कर्वा मर्पस टेजन यानियः সুগন্ধ। পরিহাস করে কেহ যেরূপ সমন্ধ।। কেহ বলে শুন ওহে ভূপতি সমার। যেমন কপাল তব হেন यात कात्र।। भद्रम्भाग्न श्रिनिवाम भोत्रीकाछ मुजा। काल महीयान। नाकि मर्व ७० यूछ।।। जाहाद्य न-: दीन। श्रुनः खिरा नदीन। इहेन घटेन ভान एड रिहन किन।। कामिनी नहेंसा फिरा यामिनी याहेरव । छा-কিলে তথন আর কথা না কহিলে ৷৷ একেত আমরা অতি স্ক্রণা হভাব। মজিয়া থাকিবে পেয়ে নবী-নার ভাব।। সুভাবে সে ভাবে সদা মিলিবে স্বভাব। मिनर वाजितक मृत्थेत প্रভाব।। পুলকে পূরিবে ছয় ঋত অনুরাগে। রাগিণী ছত্রিশ ছয় রাগের সো-क्राल ।। युक्ति मूत्र छन्न। अप्पर्वत मह। बाक् ठक

চক্রবাক্ কোকিলের মর।। ভুমর মন্ধার এবে কর্ছে লাগে শ্লা সেই সৰ কালক্ষে হবে অনুকূল ৷৷ ্ঞ थन नामरह मन्द्र मभीतन। ७थन इहरव हेहा मुरथत कातना। अत्य करनयत परम् नाशित्न छन्मन। भौज-न क्रिद्ध (प्रश्न श्रम: ज्थन।। स्रामनन यखन। इ-हेन झाना छत्र। स्मरस् जेमस हरव त्थाय मिवाकत्र ॥ य्वजी नहें दा यादव हर्ष छित्रकान। जानर तमताज ভাল তব ভাল।। একে তব নব বয়ঃ মিলিবে নবীনা। मरखाय इइटव किटम डेलयुक विना ॥ अतीना का भि नी (याहा (म नव (पानिटल । काटकर ना छाहित्व আমা নবা ভিতে।। আছিল পুরাণ যাগী আর ক প্রতী। সে পুনঃ হামিয়া কছে যুবরাজ প্রতি ।। না-তিং বলিয়া করিল সন্তাযণ। ক্রপযুত্ত নৃপ সূত করেন শুनग।। करए ভाল এकिर ভূপতি नन्मन । दिवार इत कुल कुटि किरब्रष्ट् गठेन।। अकि रयन हिना ভाর स्म ভাব কোথায়। আগে ভাগে এভাব সূভাব নাহি পা य।। कामिनी जामिनी পाद्य वदन कि अमन । छि अ নিলজ্জ বড় পুরুষের মন ।৷ নাহইতে সুমিলন এত ভাল नয়। বিবাহ কোথায় আর কার কি না হয় ॥ অভিমান অহঙ্কার শোভা পায় তার। যুবতী যৌ-खक यूगा करत करत यात्र ॥ आत अक तमन जी करक्

যুবরায়। পাইলে উত্তম কাল কালের প্রভায়।। त्रमी मिनिन नाकि तम्भीत मगी। अन्। नाती मत्न नाहि इत्व खनमान ॥ नव तम जासामतन यख एटव यन। পুরাতন প্রেমে আর কিবা প্রয়ো জন।। একে ভূমি তৃষিত চাতক সমতায়। জী-वन পाइवा (পয়ে জीवन यायाश्।। इत्रिव इति-ষে কাল পুরিবে বাসনা। সাক্ষাত পাবনা মোরা করি উপাসনা।। নবোঢ়া নায়িকা ছবে প্রৌটা মো-ता मव। याथित शनक जिना इटव यम खन ॥ এই ये करत इन कथाय कथाय। हामिया यूवजी गरा कट्ट युवद्राय ।। किनर धनि मद्द कट्ट रहन दानी । অসম্ভব সম্ভব নাহয় কভু জানি।। বিবাহ হইলে প (इं कथा कि ना कया जिल्हाम (याना वाका कि कदत প্রত্যয়। নবীনাকামিনী যদিকোনজন পায়। খন্য নারী প্রতি দে কি ফিরিয়া নাচায়।। একি বিপরীত কথাক হ অন্ক্রণ। কেনাহি রজত চাহে পাইলে कायन।। नातीत ममान नट्ट् शूक्ष भाषान। এक छा-दन ছাড়ি অন্য জনে দেয় প্রাণ ।। প্রথম পিরীতি यद कदत मीग खिनी। कथात्र कथात्र मृतन श्रांग न-य किनि।। कि बू पिन जात मर (अम वानाभरन। वि त्रक रहेशा शूनः ७८क यन। जन्मा ना करत वामना

তার কভু আরবার। ধেনু যথা নব তৃণ চাহে অনি-वात।। (पथ कछ मूक विन तमगीत आग। पिया निया প্রাণ মন অন্যে করে দান ।। যথন যাহার কাছে সে-ই মত তার। धनार नाती जाटन घित्रिन म॰ नात ॥ যুবক হইল তাহে সফরীর প্রায়। লোভে পাপ পাপে মৃত্য নাহি জানে তায় ৷৷ কেলিছলে যৌবন জলেতে नमा जुरम। একে বারে জালে বন হয় क्र मर ॥ ७ थन हे हु जन् । लाइ करत हा सर । तूषि (करत (ठात यदन शन दिया याता। कामिनी अर्क তপ্র কে বুঝিতে পারে। ত্রিভূবন পরাজয় মানিয়া-(ছ यादत्र।। (कवला मत्रना नाती गत्रलात (भष। थः भग्न जुज्ञ भिया नाटण व्यवस्थ ॥ व्यवस्य विकार वटन कानांश व्यवना। नाती रेश्टल वनशीन काटत विन व-লা।। বুকের উপরে করে ভূধর ধারণ। কাঃকেতে क्ष भए जब रहा नय बन ।। (इन वनवर्जी (यह किकार्भ मुर्वन । मयन জनের বল নাশে প্রতি পল।। আপনা র গুণের বৃতান্তনাহি জানি।কেন অনুচিত ধনি বল नाना वागी।। चात (पथ कामिनीत (श्रायत संভादत) পর রতা হয়ে নিজ পতিকে নাভাবে ॥ সল মান বিসর্জন অনায়াসে করে। নাচাহে পতির প্রতি সর-মের তরে।। একে ছাড়ি আরে আশা করে যত না-

নী।পুরুষ জাতিতে মোরাইহা কভুনারি।। যদ্যপি विवित्र विवि घटेय अगन । शूर्व ভाव उपरी भटन उत् ज्यान मन।। अक्रात यातकरत मं शिशा हि आ।। जी-रन थांकिए नटह अना दावशान ॥ नृजन भाइतन जूदन पूर्वा छन तम । युवक रुहेशा छाहा ना करत शत-मा। देमटवत घर्षेन श्रुनः जाहे यपि हस्। अवीगात मु-अग अवीन (क जूनशा च ज अव खन थनि नवीनाश भित्न। (छाभामरव ना ठाहिव (कमरन कहित्न।। धनी कि कथन नाहि ठाटर अन्। धन। এक छेलार्छन করি আরে বিভ্রন ।।.তোমাস্বাকার গুণে বৃদ্ধ চির-কাল। থাকিতে বকেয়া কর কেবা লয় হাল।। গ্রহণ করিব আগে তোবাদের কর। তবে ত লইব সেই কর পাতি কর।। এতেক শুনিয়া যত নারী গণে क्या जानर तमताक किला ममूप्या। विनाल विन-তে হয় থাকিতে নাপারি। নাগর কঠিন যত তেম-न कि नाती।। युवजी জनम मिट्ह পরের অধীন।। नटर मूथी शदर जाय मूथ पिटन विना।। शतपुःत्थ पूक्ष भी महा शत नाशि मदत । औ लाक कतिन विधि যাতনার তরে ৷৷ গত তেজে আগতকে অনুগত ক-त्त्र। युव्दक रयमन नाजी किया मिकि धरत ॥ शूक्ष चु-মর সম প্রস্থাটিত ফুলে। মধুপান করে তাহে পুনঃ

याय जूरन।। नाहाय जाहात भारत (भरेय नव बन। भत्रवा युवजी जतू मण्योजित वस ॥ (पथ (पथि ना-शत कि मान करत जाय। उँ र ति मान नाहि तरव যুবরায়।। নৃতন্থ ভাবে তুমি হবে ভাবী। পশ্চত না চিণ পাছে তাই মদা ভাবি । এই মত কত শত কহে কত জন। আনন্দেতে স্বাকার পরিপুর্ভ ম-न।। পরে যত न। রী গণে হরিছে। মাখায়। भी उन मनित्व मु:न कड़ा हैन छाय ॥ बार्ब्डन कत्रिया फिन সুকোমল কায়। সুগন্ধ২ চ্য়া মাথায় তাহায়।। পরি-न नदीन नव वनन मुन्दत्र। नाजिन मुन्दत्र किया (प-থিতে সুন্দর ।৷ এয়ে৷ গণেতৈল কুঁড়া লয়ে জনেই 🕻 প্রস্থান করিল সবে নিজ নিকেতনে ৷৷ বাজিল বাজ-ना नाना भय क्रम क्रम । तो क्रमु उ मन्दर शुन कि उ হয়।। নৃত্য করে পুরজন উদ্ধৃ করি হাত। গুভক্ষে। দিল ভূপ আইবড় ভাত।। রীতি মত ধার্য্য কার্য্য किल ममाधान। गगत्न डेठिल मन्नी पिता व्यवसान।। भी ज राम्। भून किंद या मिनी (भाराम । निकानी সমার গ্রন্থ রচিল ভাষায়।।

অথ রাজ পুত্রের কাঞ্চন নগরাগমন।। পয়ার।। পর দিন শুভ লগু পূর্বে নরপতি। সুসজ্জ ইইল যাত্র। হেত শীঘুগতি ।। ধুম ধাম কোলাহুদো

श्रीतन नगत। जनद्शत विकामित् हतन नृभवत। जय जय नियम मुरथ जारम প्রदामी। जुती (जती मानाशी वाजिन कुछ वांनी॥ वाम्यकदत्र वाम्यकदत्र नद्र एक एवन। अदक वाद्य मह्द्र हहेन सहा (भा-न।। खतन गाउन तत्व महिम गाइउ। माजाहेशा बाद्य क्र बघु वयु छ।। छेर थत थकदत एगता ডকা বাজে। থাসাদি পতাকা তার মাঝে মাঝে সা-জে।। অপৰাণ সাজ করি সাজিলেন রায়। মোছ-नीक्षा (लामाक एइदिएन ब्यार् यास्।। मरनाइद मा कार्रेन गत्नार्त (वन। हीता गिंठ जहता उ अखत-न (दम।। किवा (माञ। मिन कर्छ मुझ जात हात। (यन (कांग्रे) निगालि ममान वाहात।। धूक धूकि মাঝে তার জুলে ধৃক । শিরেতে আড়ুয়া তাজকরে Dक मक।। शहक अनुतो करत मीशक नभान। एक ि युर्ग वीत्र दोनि एर्द्र इर्द्र छान।। পরিল উত্তম रख छेखम (भागाक। काकन कलगा यु हि द्रार्थ। क थाक।। জড়াও জরির জুত। চরণে পরিল। বাজী चाद्रारियां कदत हा युक नईन।। मङ्जा (मृद्ध नङ्जा যুক্ত হয় রতি পতি। যাতা করে পুত্র বিভা দিতে नद्रभाजि।। कदि भृत्धे छेभविष्ठे वद्रयाजि ग्रा । खद्रक मायात मदक हटन वागान ।। वागनि डेठिन वक

অশে নৃপমণি। সুরব গৌরব লোকে করে জয়পুনি।। সিদ্ধিদাতা গণ্দেবে নকলে প্রণামে। শব শিবা शृक्षं अस रहित्तिन वात्य।। त्र ए एक मत्य मत्य চলে বহু চর । বাই থেষ্টা নাচে তকারামার উপ-র।। বনাতি কানাত্য গ্রাভীত সঙ্গে চলে। আসা সোঁটাদার ধায় নিজ দলবলে ৷৷ চামর আড়ানি ছাতা মতির ঝালরে। চলি যার জ্বলে তায় ঝিকি মিকি করে।। বাজার উর্দ্সত্ দ্রব্যভার ভার। (मिंशाई लक्ष्त कछ हाक्रांतर ॥ भूनक शक्क मुब क्राय अपसा अख्याना जाकत कृष्टीस ममुद्रस्थ नाना (दम अफ़ाइेशा यास नृश्वत । उभनी उ देइन পরে কাঞ্চন নগর।। সহরের শোভ। দেখে সুথী হয় मन। वाथानम् भूनः र यक लाक जन।।। भूज मर हत्न ভূপ হেরি বহুতর। এথানে বৃত্তান্ত বলি শুন তার পর।। সুতায় হরিদ্রা দেয়া গৌরীকান্ত রায়। আনন্দে মগ-ন হয়ে যামিনী পোহায় ॥ পরদিন সুপ্রভাতে উঠি দুর্গাবলি। প্রস্তুত করিল দ্রব্য আজ্ঞায় সকলি।! शान्यक्त वाम्यवाम्यकत मत्व। चारम्यक्त अ-য়োজন যেমন সম্ভবে ।। বেশ ভূষা অন্তঃপুরে করায় কন্যার। হেনজ্প তিভুবনে ব্ঝিনাহি আর ।। চাঁচর

हिन्दत वादक (वर्गी विनाइशा । काल क्यी चिनानी শ্কায় হেরিয়া।। পরিল জড়িত শিথী তড়িত সমা-न। चाँ हिल सूचका (छँड़ी युड़ि पूड़े कान।। कश्चक्ल वाना (दोनि मिनिन जाइ। सं। (मक्न एइतिक युव कीवन शताय।। का दिन जुन्नत दिन जादन लाएं छाटन। माजिन शानारव चक् मर युग्न गाटन॥ নাসায় নলক নথে করিল উজ্জল। নয়ন ভরিয়া দিল (मात्रमा कब्द्रना। इतिगीत इटन पर्भ (इतिहा याहा-श्राकिटें कि केटें कि भरत मूमि त्या इया ।। अपत छाषुन मारन करत हुँकर। छितुक नी छात्र (थरक एन शिष्ट्र कोज्का। कर्छिमिन कछेशान। नीन मिन इति। **5** थनार रुप्त राहाद याहात ॥ मूरदेश राज्य वानि वास्तु वाश्विन। थारकर जारं श्रुनः साम्या साना-ફ न १ मर एक मृगान किनि म्लनि छ कत । ভূষণে खुविछ रेश्व बाब (भाषाक्त ॥ बाँ हि पिन मर् क्रियों कक्षन जाराय । सक्षात बाकिया छेटे चनिषन याम् ।। मृद्यु भवाहेल चक्ठ ताल। मरनाह्त । व्यात र অলম্বার হেরিতে সুন্দর।। হীরার অমুরী পরে করা-क्नी भूटन । (इति नत्थ निमाकत तरियाए जूटन।। পয়োধরে কাঁচলি কসিল অপরূপ । রতিপতি ছাড়েরতি হেরিলে সে কপ।। उन অতাে জুলে

হীর। চিক মিক করে। নির্থিতে প্রাণ যায় মদে-(एउ भट्या। विष्णं ह कतिया करें। वितिल वमटन १ **5म्**रात पिन शद्त निज्य खर्दन !। शतिन हत्रन পৰে मुन्दत गृश्व । कृष् अनु कृषु अनु वारक मुग धूत ।। निक्रणम (वन कब्रि टेंबरम विद्नापिनी। ठाकि-দিলে বেরি তায় বলিল সহিনী !৷ এথায় মহীপ करत यन। यारताक्रम । প्रदेश ठ केन मन। (इस्त হরে মন।। উজিলপতাকা জয় ঘুড়িল সহর। করি-न मुन्दा नद इतिन व्यख्त ॥ दाक्ति वान न दाका রাজার আজ্ঞায়। দাজিল বিস্তর লোক নির্থিতে जाय।। ছুটिन अर्जी निष्ठर भाराबाय। यूपिन षिखन मर्खन्याम जाउँ।। करिन **चामि**या पृज পৌরী নূপবরে ৷ আইল কন্যার বর সহর ভিত্-রে।। याहेन अपनक अन एहित्रवादत यह । পाहेन मु-পরিচয় হেরে মনোহর।। স্থা বাড়াইতে পাত্রে পাত্র মিত্র গণে। প্রেরণ করিল ভূপ আনন্দিত মনে। অনুমতি পেয়ে মবে উপনীত হয়। বরে रहरत नग्नटम भागवा भाग ।। युवक युवछी चामि निवामी नगत । वाम वृष्त मत्व छल (पशिवाद वत्र।। मत्नारुत्त (रुतिया कहिए या नाती। मतिर अक्टल मम्न भारत हाति।। (कह वटल (मधर ७८%)

शकाकन। किया कथेमृतन रात करत कुनर ॥ कि जुन्मत करणवत्र मति श्रष्ट श्राप्त । विधि वृत्ति गिष्-ब्राट्ड निर्साद ইशाय।। (यमन यृवजी देशन (महे मज পতি। হেন আর নামিলে ভুমিলে বসুমতী॥ কিবা मुश किया युक किया नामा कान। किया नशरनद्र हो है क्टिं नम्र था।। क्ट्रक्ल ख्ला मिमि ज्य বিশাকর। ও বদন সদনেতে প্রকাশিছে কর।। का छ दक्ष का छ दि (इति इति व (5 उन । कि रन व 1 हि भारत महाकरत पत्रभन। किया मुकामन (पर् अ-वुक्ति वादम् । शुनः तटल व्यदमत् इत नाहि व्याद्ध (मर्।। ভেষা হয়ে আরবার ধরিল কি কায়। কিবা অপৰূপ ক্প হায় হায় হায় ৷৷ কোথায় বহল ফুল হের দেখ आमि। यत्नाइत मृत्थ श्रनः यत्नाइत श्राम।। देक्। হয় দাসী হয়ে বিকাই উহায় । ঘরে পিয়া পোড়া চকে দেখিব কাহায়।। ভাতারের দশা সেই সতিনী वाचिनी। ननपी नामिनी काल भाखणी जामिशी।। कथायू२ मन वित्रियम वान । প্रতিत पूर्वि (इदत अक्षेत्रज आव।। यत्तव वामना कति जीवरण अरव-न। बात (मत्न नाहि मद्द अवाक्तात होन ॥ अद् छ विख्य कृति मम्दनत नदत । श्रूनः र मन्त्र छाद তাহে ঘরে পরে ।। তেজিব সে জল নহে ভ্রজিব

উহারে। দয়াকরে যদি বিধি মিলায় সামারে।। (कर् करर में ७) यह कि कि ला थिन । यह किस यात (इत्त यह अगमि ॥ जातित जामित जात চকে বহে জল। বাঞ্চাকরি তেজি প্রাণ ভথিয়া গরল।। নত্বা হিয়ার মাকে রাথি ও নাগরে। শুরু-छन गञ्जन। (इनाय (इना करत।। यपि ७ यूवक ताय হয় চাঁপা ফুল। যতনে থোঁপার মধ্যে পরি বেন্ধে घुण ।। रणुमी इइंटल (यथ्य दाथि कटन वटत । नज्जा ভয় হল মান বিদজ্জন করে ।। কোন রানা কহে क्षेश्राद्धराज्या माहि। यपि ७३ क्ष्यत युद्दद পাই ৷৷ এইমত কত শত কহে,কত নারী ৷ অনিমি-(थ पाश्चाইয়। (ছয়ে माয়ि२ !! मुद्रक ভয়য়েশবয় हत्न युवदाय । लाक जन चगगन **चारंग পाছে** षाय।। मञ्च ७ १ दाय नृश अन्तक या राज्ञ । कि आज কহিব শোভা বিবরিয়া তার ॥ গৌরীকান্ত নৃপ-তির পাত্র মিত্র তবে । সমুখেতে দরশন দিল আসি मद्या। প্রণমিয়া মহীপালে আগে২ যায়। কাঞ্চন नगतवामी इतिविज काय।। कत्यर त्राजवाही कार्छ উতরয়। হেরিল অপূর্ব পুরী অউালিকা ময় ॥ নানামত সুশোভন শোভে নানা মাজে। বালাখানা উপরেতে নহ্বত বাজে:।। ছারে২ ছারপাল কাতারে

কাজার। খাড়া রুহে করে২ ঢাল তরবাল।। উপনীত देश्न अंगेराम नृलदास । ছाড়ि निन चारह (यटक যুত পাহারায়।। প্রবেশিল বর্ষাত্রী সহ মনো-इंब्र। जन रेहर जुमि उल नाम यूववत ॥ जानि উতিয়া গৌরীকান্ত নরপতি। সমাদরে সকলে বসা র শীমুগতি।। আপনি বসিল পরে লয়ে মিত্র পাত্র। নিকটেতে জনবাম মনোহর পাত্র ৷৷ অভঃপুরে নারী গণে করে ছলুধুনি। দেখিতে সুন্দর বর ধাইল রখ-ণী।। গৰাক্ষের দ্বারে গিয়া করে নিরীক্ষণ । চাহি অপরাণ রূপ হার।য় চেতন। কিবা শোভা সভার क्हेल वाथानয়। युवताक (यन भर्मी जाता गात्भ রয়।। তাসর ব্যঞ্জন করে চাকর দৌকরে। শিরো-তাজে बानत (थलिए ब्रायर ॥ मुत्रक्षन वत मर्द ননে নুর জেন। আঁথির পালক তেজে হেরে রামা-মন । লেরে দরশিয়া কেছ কছে রঞ্জরি। আছা-मति कालत वानाहे नया मति ॥ नवीन वसमा चि मुन्द्र १ छेन । हा शिदल वादतक नाहि कित्र म नयन।। কিবা মনোণ্র বেশ গত জিনি মতি । মনোমত ্শশিমুথী পাইয়াছে পতি। হেরিয়া বরের ভাব বিভাব সকলে। পরস্পর কত নারী কত মত বলে॥ পারে পেরে গৌরীকান্ত হরবিত মন। দুইভূপে কৈন নানা কথোপকথন।। বেছায়ী২ বলি উভায় সভা-যে। জীকালীকনার গ্রন্থ সুভাষায় ভাবে !? অথ জীআচার ও পতি নিক্ষ।।

পরার ৷ ওডকণে ওডলগু হৈল উপস্থিত ৷ কন্যা দান কহিতে নৃপত্তি আনন্দিত। বাদ্যভাগত কল-ब्रुट्ट श्रुद्धिन अवना अकित्यन महाविद्या ग्राम ब्राम জন !৷ বাক্ষণ পণ্ডিত গণে দিল জনুষ্ঠি ৷ পাত্ৰ লয়ে প্রবেশিল পুরে নরপতি।। বয়ণ করিল আস নারীগণে বর। বদিলেন পূর্র অভিমুখে মনোহর।। নিকটে পশ্চিম আনের পৌরাকান্তরায় চবলিছারি শোভন সুন্দর হেরিবায়।। মনোহর ন্বব্য পরা-इन वरक। यूदवरत का नाती सारतः वरता। इन् इनु শব্দ মুখে করে শখ নাদ। অন্তরেতে শব্দকার পুরি-न का शाम ।। कन ११ चानियात जुल फिन अनुभा छि । नथीं जानि हत्न (धरश जरनक युवजी ॥ दनिशादक रथथारन मुक्षा एक्षी नभी। डेमनी उदेशन उदा य उठक क् नमा।। नाना म उठ नाना क दन क दत्र। मरशः धन। (करु रतन अम स्ति क्रिक्श भिन्न।। आह (कन অকারণে কর কাল কর। আইল যুবক হৈল বিধাতা সদয় ।। যুচিল দূরত পঞ্বাণের হতাশ। এতাদিনে প্রজাপতি পুরাইল আশ।। কেছ ক্ছে ঠামর কন্য

গোচল চল। এল তব প্রাণপতি প্রাণের সম্বল।। অ-(क्षामुधी मिनमुधी छनि नाष्क्र रय। मरु हत्री जुल ধরি উঠং কয় ।। রাজার সমূথে আনে আনন্দ দো-লায়। আগে পাছে নারী গণকাছে কাছে ধায়।। वमाइन मरनाइत एरतत टारमरछ। नित्रथिरन मन খার নাহি চাহে যেতে॥ অপৰূপ হৈল শোভা পরম সুন্দর। রতি যেন বামে করি বৈসে পঞ্চার।। श्रु देश्न नद्रशिक कति मद्रमान । द्राभागरण करत नाना सक्षाहित ।। जानतम् स्थाना श्रुष्ट श्रुष्ट यङ नाती । जीचाहात कतिवादत हत्न माति माति॥ **ख्नुर करत मूर्थ मुर्थ ভारम मन । जानिन निक्**नि ভালা করিতে বরণ।। দাড়াইল ঘুববর কিব। ৰূপ-वड़। वाटन मानी (यन मानी ध्वाद छेलद्र ॥ निद्रिश्च-য়ামনোহরে কহে কোন রামা। হের ও ৰূপের প্রভাপোড়াইছে আমা।। ইচ্ছা হয় হল মান যাই পরিছরি। পুয় মালা করি বরে গলদেশে পরি।। किवा जाम। मृष्ण। मृष्ण। जुक ठाय। (इद्रित्न म-पन थन् (फलिय़। भलाय ।। किया कत (भाजाकत হেন পদ কার। প্রাণ যায় পোড়া সুথ ভাবিয়া ভা-जात ।। (हतिया इंहारत रेव्न घरत माख्या जात। ভাষায় ভক্ষণ তনু বিরহপাতার ৷৷ মনের বাসনা

गटन रित्रि मत रहत। इन्तर देवन (मर् चटमरहत मद्ते।। (कर् वदन उटगा मथि यमि अत भाई। जिथाती र-इया नास गाम हान याहै ॥ इकेन मन्य जिल (भरथ दाधि षटक् । ब छुवा मामीजु वरस मिछ। धार्कि भटक ।। कटक जाज कलमाजी वर्गाम्य चछता भाई-লে উহারে ঘাই দেশ দেশান্তরে ॥ হই পতি বির-হিলানিত। আঁথি ঝোবে । কঙ্গল করিয়। পরি लाहे भग (६) एवं ११ का भागताल उन् छन्। जना इन्ह করে । অভরণে মিশাইয়া রাখি ফলেবরে ॥ চাঁচর क्तिपत किया **अरब्द गुटाय । अ**ख्यारन इत्यारम च्या देशन वराम ।। मुश्यानम् रहति छन् चरशान्य रशा ভাইবুৰি দিনং ভেবে পান, ক্ষা ৷ লোক নিদা ওক ভয় প্রতিয়া ভিলেকে। বিধি মিলাইলে ভক্তি চির্দিন একে। জোন রামা ক্ছে বিধি কেম্ন পা यात। अनवज्ञान मार्था ना किल्लिमान ।। शुन् वडी गर्मी धना। पतांत चि उत्ता। शाहेल ७ मरमा इत (य अ मन इर् ।। क्रिंदिव ७ मूबि हिन्सू मूर्थ हुए माम ! बालियन डेलाड्सन मूर्थत (मालान।। এक वाह छा-विद्या वाक्षिक रहे यदन । महहती हदस थाति न नित्र मफरना। रहित्र मृद्रश्च वर्ग (मरिव छह्न। कहित 😉

कामनाव्य हामत वाकन।। ভরিব তথাপি হৈতে মদন বেদন। খারিব ওঙা সুখে রহিব তথন।। আর वात्र जावि विधि नामिन छेशास्त्र । क्रीवरन कीवन **ঢালি ভাহে যদি সারে ।। নাছ্য় যদ্য পি মম দে**হের পতন। চির্দিন জুলিব কি করি দরশন । তেই दिन खरगा मधि এই सम झित्र। তে জিব পাণিষ্ঠ দেছ প্রবৈশিয়। नीत ।। করে এক গুণধামা নিরুপমা क्राला भाइत असरमाह्द शांकि हुत्यर ॥ अपूर्य সিংহাদন স্যতনে পাতি। রাজা করি ধরি নব যৌবনের ছাতি।। রাথি নিত্য মুখেই বকেই ওকে। इहरत आरगरङ मञ्चा कहिरत (नारक।। निष्ना করি পরে মতে নিজহ পতি ৷ দুঃথে ভামি কোন রামা ভাবে কার প্রক্তি।। কিকব পত্তির কথা স্থানপ হ্লবেশ। রতি হেত্এক রতি নাহয় আবেশ।। প্রবে-भ कतिया घरत पिरिल (म (वन । आरवन घुिता निद्रादिश পরিশেষ ॥ অগদ পানের ভাবে यपि ইচ্ছা হয়। গার গঙ্কে ছাড়ে ভূত কাছে কেব। রয়।। ভাবের পিপাস। যায় হেরিলে নেভাব। না সরে वपटन दाका अट्न अञाव ॥ आत्र तामा वटन मह ভাল ভোর ভাল। আনারে মিলিল পতি বিষম জ-क्कान । विष्ठा व्यवनाशी करत्र विष्ठा चाटनाहना।

ब विषय विषय स्म अगाथ विषयानना ॥ नीजी পूथी श्वि विवानिक करत्र लाते। तक करत् अ भूगी लाउँ ना जारन रम लाउँ।। दिनर खंडकाल यास तमः उन। नारदह सीवन स्वाह इड्ड विकल ॥ आहा भति (कम विधि केन दिए धरा । आ निद्या नार्टेशन (रुग রস আসাদন ।৷ কি করিব হলনান নাপারি তেজি-তে। বিপরীত দজা আলি থাকে বিশরীতে।। ন-उत्। अटक निरम पिया जन । अभि। इ। जि उक्कम च्य यार्याम हिना। छेखम (म चिर्यादन सहस। গোপনে। করিতাম ভালকেপ র্ণ আলাপনে। আর এক সল্যতা নহানা ঘ্রতী। কান্দির। মুন্তর কথা কচে ভার প্রতি ॥ খভাগির ভাগেচে পাই-নুব্জ গতি। শক্তি বিনা নাহি ইচ্ছা করিবাংর রতি।। দিব। নিশি শণে। গেরে করিয়। শয়ন: জীর্ছ (पङ् (काल भाष्य र हिट्ड प्रभाव ।। नाइश रामना কভুকরিতে রমণ। তাহে কি সস্তোদ হয় রমণীর শন।। তবে যদি চেষ্টাকরি করি আয়োজন। সে वटन विश्वम अकि एडेन घोन !! जुनिएक ना लाइ कि कि कि दिश्वाता आधार गृष्टि ज पास दी हो-ইতে তারে।। ত্রাহিং করে বলে কোথা ওরে প্রাণ। विशाप मागद दक्षा कत (मात था।। ।। (पर धारक

माप्न विनी के पिरु योत । करत गात्र शार विशम यावात्र ॥ याद्र अक का मिनी (माठन छता छन । किर्छ जाशास्त्र इरम ভाবেতে विकन।। कृर्म १% পতি মম আম সৰ্ভাল ৷ করিতে এ কর্ম তার ব্যাধি সে বিশাল ॥ নথাঘাত চুম্বনে যতেক হয় তাই। আলিখন বিসজ্জন সে দকায় ছাই॥ এজা-লা অতর করে বাদন। অন্তরে। বিভূমনা বিধাতার তাহে কিবা করে।। দরিদ্রের অভিলায যেরপ হই-द्या। मफन ना इय श्रनः याय मिलाइया।। (मह्बाप म्नः रथन तरह मरनर। पाइन भाजीत करत मनस शव-নে ।। বুকেই কন্তুচুকে নাহয় মিলন। কিকহিব কার কাছে মনের বেদন।। বিপরীত হয় আর বিপরীত कारन। ध्रतिरम चाँ िया वटन ध्रतिशास्त्र कारन।। बुक् थिन (नर्भ भए इस्य छ। न हीन। अहे क्ष छ। नाउन करत मिनर ॥ (नाटकत (मधिया चात विखन क्रानाय। विवर्ष रहेन वर्ष ठाहात क्रानाय।। यात्र রামারলে সে ভ মাথার ঠাসর। মোর দুঃথ শুনে তব দুঃথ যাবে দূর।। ভাগ্য গুণে মোর ভাগ্যে মি-निन विभिन्ना करिएन मनन वाका इरस थारक जिता। আভাস বুকিতে নারে চাহে মোর পানে। কটু दुबि कहि जादा भरन रहन मारन ।। कि कृतिव

इमिक्ठ। (हरत जात मूथ। (वपनाश वुक कार्टे पृत्त যায় স্থ।। কত করি মিষ্টালাপ না শুনিতে পায়। ঢালিলে ভয়েতে ষ্ত কিবা ফল তায়।। যেমন লো-हनशैरन अर्थरा पर्या । नाजारन जाशांत खग वरन स्क क वन ।। जानृभ इहेल गम (अमतोक शम्ज । ভেবেং চিরদিন আছি প্রায় গৃত।। একবার ভাবি चात्र मात्र हिव घटत ।। वाहित रहेव चन ताथि किया करता। ताथिया अकृष (भन अकृत अकृत । वित्र ह পাঁতারে স্থি নাহি দেখি কূল।। অকূল হেরিয়া কুলে দিতে চাই ছাই। প্রতিকূল প্রতিবাদী এআর रानाई।। आक्म शब्रांग अहे मकन कावरण। क्न-वु छनिनी कुन दिख कज्या। भूकृन क् हिया अद (योवदनं याय। करव चनुकृत विधि इदन इायर।। আর রামা বলে নিন্দ। কেন কর তারে। আসলে विक् उ उर् माद्र कतिवाद्र ॥ विनव कि वात भाम জ্বলি যে জ্বানায়। পুজভঙ্গ পতি পোড়া মুখে হাসি পায়।। দেখিতে সুন্দর কিন্ত চন্দু মুখ প্রায়। কপে-त्र जुलना शिख्या याग्न किना याग्न ॥ मुधा मग हामऽ साम्। वाका अनिवादत्र। এद्यान कि मुधु (महे द्रमा-यदन मादत ॥ फिरम यामिनी दान हानिट उट्ह मात । কি করিব ইহাতে ক্ষমতা নাহি তার।। দল হৈল

कल्वतं जार्गतं चनत्व। ति तक् वानिक्तन मादत क्रान बदन ।। कु हरत का किन मना मुवन कु हरत । बन्नर नभीत्र वट्ट यद्धर ॥ उष्ट्र कद्ध भन खनर बदर।कात्रभाषा (महेंबदर घंदत जिष्टि बदर ॥ था-কিতে চন্দৰ চুয়া পরশিতে নারি। পাছে দহে কলে। বর সেই ভয় ভারি।। রতি আশা করি চাহি পুরা-इंटा आना। याना पिद्या हत्न याय यात नरह আসা।। সে আসার আশাকরে থাকি আশাকরে। नितामा करत (न वामा वामा (छ्रांक् भरत ॥ ज्य-গুলে আসামাত কাশা মাত্র সার। পতি হৈলে রতি হীন বিকং তার ।। অপর শুনহ বিদ্যা আর জिड्डामित्न । यदन हत्व कानि इंडि श्रूमः उ। ना মিলে।। একগুণ মাত্র কিন্তু দেখেছি তাহার। উপ-পতি কৃত গত্ত সে বলে আমার॥ সতী জ্ঞান লোকে ইথে করয় অনারে। সে যে বলে গন্ত ভার দোষ **ঢা**কিবারে।। যাত্উক হবে সরিয়াছি সেই গুণে। পরপ্রেমে মজি তাত লোকে নাছি শুনে ॥ আর রামাবলে দে ত মন্দ কভুনয়। শুনিলে আমার দুঃথ যুচিবে সংশয়।। অভাগির পতি অন্ধ কৈতে ফাটে প্রাণ। দেখিতে নাপায় কিছু রৈলে বিদ্য-भान । इन्हों कांक्न किन जन भरनाइत । जूरक

धतिन धता एवं शरहाधत ॥ कि कर्व कारशत कथा শশী হারে মুথে। সে যে নাহি দেখে ইহা নরি সেই দুংথে ।। হাৰ ভাব কটাক্ষ কিহ্বে তার কাছে। নিশি নম সব হেন জাঁথি মৃদি আছে ।। অঞ্ভল বৃথাশুন রতি সবিশেষ। করিতে চুম্নাধর চুম্মে অন্য দেশ।। কেপণ নাকরি তার লক্ষ্যে আপনার। অপর শরীরে নারে একি চমৎকার ৷৷ দিওণ আও-ন জুলে এই মব গুণে। বিগুণ বিধাত। ঝাঁপ দিব কি আগুন।। एक्क तिष्ठ अनिकुन ७१२ कति। का छ ७१ थरत अपथरत आहामति।। काममस्त भूछ गरक इह করে প্রাণ ৷কবে ভার হাত হৈতে পাব পরিত্রাণ ৷৷ ভাদি দুংথ নীরে কহে আররসবতী। না কহিও কুব-চন ভুলে তার প্রতি।।যে করে কাটাই কাল কালা-गूथ मन् । कल्वतत क्न किन काम नहामन।। कृत्-क्ति म पुछ कर्म कत्र स्र (काथा स्र । উত্তর न। করে क 🤏 কামের কথায়।। করিতে পরের কর্ম কোমল দ-স্ভোষ। ধিক বিধি মোরে তব কেন এত রোষ।। করি यि উপপতি আনিয়া গোপনে। পুড়ে মরি ননদীর वाक। इंडामरन ॥ डेगारत गतन त्रामि माच्छी चा-বার।কে পারে সহিতে এত সাধ্য আছে কার।। षामि (यह (उँह उर् कतिया को मन। वँभू यानि

भी छन कब्रि विक्रानन।। (इन सत्नाइत सन (हार्द्र ना পाইলে। यन इस मनाश्रा पुविष्ठ मनिला।। ভাবিলে পতিকে মেনে মনে একবার । মরি গুম-রিয়া সই ভাব হেরে তার।। ধর্ম ভেবে কদাপি না करत भत्रमन। मुख्य । ज्या कालोत वत्र ।। जि उ रइ।। अक नवीन। इस्मी। कट्ट जादा (कम मन्म বল২ ধনি ॥ পণ্ডিত ত্রাহ্মণ পত্তি থাকে চতুয়াঠী। পরিপাটী ভূনির নারাথে কোন পাঠি।। পোষ। পাথী ঘরে তার না পড়ায়ে তায়। চতুর্দ চত্রাঠা পড़ाইতে যায়।। বার মাস মধ্যে আনে দুই তিন দিন। ভাহে ও সম্ভোগ নহে ভেবে ভনু ক্ষীণ।। বা-ছিয়াং यपि ভাল দিন পায়। তবে রতি নৈলে পতি নিজ স্থানে যায়।। কি করিন চিরকাল গণি হ। হ তাশ। থাকিয়া পতির বাদে যেন বনবাদ।। বেশ ভূষা চিখর বিনায়ে কিবা ফল ৷ জ্বালায় শরীর যেন ञ्चल अन्त !। उद्भन्न चर्म किছ्ना भाति कति-তে। তেজিতে वामना क्या इस जात्र द्वीटक ॥ এक नव (योवनावनिक পতि जाय। वमछ इहेरल इय প্রাণ साम्रशा जुमत (काकिन ममा निजर त्राय। जी-वन विनाम (र्जु माक्षिय़ाष्ट्र मत्व ॥ अखत निवामि पुःथ अष्टत ना इस्र। नित्रष्टत (म अष्टत्त ज्ञादास्टर्ज

त्रेया। मृत्रेष्ठ कृष्ठाष्ठ मम सम्दन्त्र खर्ग। श्रामाछत् **হতে চাহে প্রাণ দেখে গুনে।। মনান্তর করিতে সদ**-उ हारक भन। उतु भरन निक्क करन कति निरम्भाकन।। কৃষ্ণক নিশি প্রায় হেরিতেছি কাল। কালেং গত কাল আগত দে কাল ৷৷ আশা করে রহি তার আ-मिनाइ काल। कि मकाल कि देवकाल किया मक्ता-कान। भिजन इहेटन एम् जुड़ाश की दन। जान नाहि (पथि टेनटन मनन मनन।। कटर बाज नाजी छनि छा-হার কাহিনা। চির রোগী পতি অংমি চির বিরহি-भी।। कारकात विगन्न जात नाहि रहा भरन। छन् कातर मना कत्रस मन्दन।। कि कति ছाড़िया পতि केन छैन. পতি। তাহে পুনঃ রোষানিত হয় মোর প্রতি ।। ক-রিতে ভাষার বংশ রক্ষা চেষ্টা করি ! সে হয় বাধক তাহে সেই খেদে মরি। ভেবে মরি যার লাগি সে ভাবে বিভাবা কার সাধ্য করে এ রোগের অনুভা-ব।। চুরি করি যার তরে দেই চোর বলে। হায় বি পাতার দৃষ্টি কতই ভূতলে।। রোগের দেবায় যায় पिरम महत्री। ति जित विटब्स्ट के छि अगतिर ११ क्टि ছিল পদ্ম এক ৰূপ সরোবরে। প্রেম ভানু সহবাস कतियात उद्धा। निज्ञानम निभाकत निज्ञिथ क्यन।

हिखियार खबु देशल मह पन ११ छपस शिविट यदन **मिर्गकंत्र। উ**पन्न इहेशा छिन छेत्रत छेशत ।। पृथ्य घटन व्याक्तिति (विविधा यथन्। (धटम निवि मुर्च) জায়ে হইল পতৰ ৷৷ খণ্ডর ভাশুর যেন অসুরের প্রায়। কসুর পাইলে বলে কি জার বেজার ॥ করি-তে राजरत मधः वहेश (कामखः। युफ्श करीकः षञ्ज मनन (मार्च छ ।। अस्मिहिन (म स्म (म छ चा-भाव क्लात्न । विलम (इदिया लूनः (मरह (मन काला। बाहिल महान बाद शाथी कठ महत्र। **लेकि माहि (मृद्धे छटन ट्यट्ड (काथ) महत्र।। जिल** खान बना घाटे किया करत मान । शतिशृक्त रेमवा-**ज**रक भरक (महे इंगि।। উপद्रम हिन जात निकटी कट्डक। जुशु देश्व भाषा पन पिनर अक ॥ वन विना भितिन मार्दित अतिकारी। उत्तरी जूदिन उटि शिन विकि किनि॥ थाकिएन का छात्री जान रेर्ज कि अ-अन । विभूथ (म छ जुम् थ कि कति वशन ॥ शामा मुना (थाए। वाव) चारि यात পতि। कान्मिया कहि-শকত কতেক যুবতী॥ পরে যত রামাণণে হইয়া মগন। জী আচার করিবারে সুথে ভাসে মন।। আ ইল আপনি রাণী করিতে বরণ। করে যত স্থীগণে मक्लाहद्रण ॥ (कान मधी चरशोत हम्मन चानि

অথ রাজকন্যার সহিত রাজ পুত্রের বিবাহ। পয়ায় ।। নারীপণে জী আচার কৈল সমাপন। বর-क्ना आनित्वक यथाय ता इन ॥ भा अवङ लोबी-काछ कति आठगन। ज्ञानु शति भटना हदत कतिन यदः। ণ।। পুরোহিত ভউ।চার্য্য মত্র পাঠ করে। নমর্পণ करत कन्छ। युव कण्वरत ॥ नियमि अ मख मुर्थ करत উচ্চারণ। মনে২ নরপতি হর্ষিত মন।। এয়ে। গণে আনিল বরণ ডালা ভালে। ছৌয়াইল প্রত্যেক-তে যবকের ভালে।।ধরিয়া আনন্দ দীপ তাপ করে नद्य। रामिर (पद्म (कर् वद्य क् प्रद्य ।। (कर् श्रूनः **দেয় শিরে কেহ ভালোপরে। কেহ্বা আরতি** করে দীপ লয়ে করে ৷৷ কেহ পরিহাস করে কমা তামনি-क। (पर्थिव मुन्दत वत (क्यन तिमक।) क्ष (यह (मह मुज थारक यपि ७१। जरव कानि जान मुब ७८१८ज

निश्व।। (कर्वदन ७८२ युव किरत कथा कछ। (क-মন যুবতী পেলে বুঝে লুঝে লও।। আছিল ভোমা র ভাগ্যে শশী ৰূপরতী। সে পাইল পুনর্বার ভোম। হেন পতি।। মরি কি বিধির বিধি হেরি চমৎকার। যুবতী যেমন পতি সেই মত তার ৷৷ হইল ঘটন ভাল मुत्थत वितारका (कह वृत्त हैश जिस जान नाहि সাজে।। যুবতী জনম ছার সদা পরাধীনা। না হয় সুছির মতি প্রাণপতি বিনা ।। ভাছাতে ফৌরন कारन यमि नाहि शाया अमरन विनी अ लाग मीर्ग খ্য় কায়।। পুনঃ তাহে হৈলে পতি স্বাপ সভাব। দিনং বিনোদিনী হারায় ৰভাব ৷৷ ভাবের অভাব (मधि नाहि भाग **ভाব! कात्मर अ**खकान एग जि-রোভাবা৷ ভারতে বু**ঝিতে পারে** ভাবের বর্ম্বন ৷ স ভাবং ভরে ফেরে অনুক্রণ। কোন বনী কহে ওংং भारताच्य यत । भारताच्य नाम जव कर्ण भारताच्य ॥ समराती सत्नाम उटेश्य जाटर नाती। रजासात मन्त्र म मुख कहिबादा नाति॥ कामिनी यामिनी पिता नदा मुत्थ त्रत्य। व्यन्तः नाती मर् वात कथा नार्दि कत्य।। भुक्क निम्म श दक् किल क्या वर्ता मधुणान कति ल्या व भि इस श्रे ११ अथरम युवक शत् करत नाना छन। পর্লার প্রাণ মন হর্ম সকল ।। কুটিয়া যৌবন যবে

শৌরভ ক্রায়া তাহে ফেলি আরবার আর জনে हास ।। ना हास नसन (मनि युहास छन्नाम । शूनःश ধায় অন্যরমণীর পাশ ৷৷ তাছে ফের দিয়া ফের रफरत सन्। ठाँहै। यूरात यं जात साम दिनहादि যাই।। নাকরে মরণ কভুকাঘিনীর থেদ। প্রাণ নাশে अवनात विषय विष्क्र।। अथना अवना नाती मतन অন্তর।পরের পিরীতে মজি ছেরয় ফাঁপর।। পরম সভোষ হ্র পর পরশনে। পরকাশ পায় মনঃপদ পর মনে।। পরস্পায় শুনিলে পরের গুণ গান। পূর্বা-भारत नाहि एक वर्षी इस आ।। भारत यहि भारत वादन করে গরবাম । তথাপি পরাণ কা**ন্দে** যেতে পর পাশ।। পরে করে পরাৎপর পরব্রক্ষ জ্ঞান। সদত পরের কাছে পরের বাথান ।। পর দে পরশ্বনি ভাবয়রমণী। পরাশার হার গলে পরয় আপনি। निक्नी मगृह मट्य भिनि পরস্পর। পর প্রণয়ের কথা কহে পর পর ।। পর কিন্ত নাহি দেয় পর করে প্রাণ। পরাধীনা নারী তার না পায় সন্ধান ॥ পর मुः त्थ मुः थी नमा मुशी भन्न मृत्थ। भन्न माम गत्भ मत्न পর পরাঙ্মুথে।। ঘরে পরে গঞ্জনা করয় পর লাগি। তথাপি তৎপর হৈতে পরের সোহাগী।। পরস্ত . शर्तत ७१ र: न चात वृति। शरत এত करत शरत च-

পর मकान।। जुमना युवजी ना जात পরिচয়। (मेरे भेते क्राय क्राय क्र किल भेते रहा ।। भेत रम यहें भेप মম অন্যে না পরশে। পরিত্প্তরহে পরফুল ফুল-রনে।। অপর যথন তার দে রম ফুরায়। পর পুনঃ পরজ্ঞান করে পরে তায় । পরে ভজে পরে পরে এ-পরাণ যাবে। তব্ কামিনী পরে পর ভাবে ভাবে।। পরপ্রেমে পরমাদ কহে পূর্বাপর । কোন নারী তাই বলে তেজিয়াছে পর।। পরে দিয়া হান নিজ স্দয় উপরে : তার পরে নিজে স্থান নাহি পায় পরে।। পরলাগি পরলোক কত লোক হয়। পরে২ পর ভাবে একি প্রাণে সয় ॥ পুরুষে নিদয় তঁই বলি ওংহ বর। নিমান নারীর ভাব সরল অন্ত-র।। আর রামা বলে ভন ওছে যুবরাজ। বিচারিলে পুরুবের নাহি আছে লাজ।। আগে এদে ললন। ম काम इननास । विष्कृष जूकक पिन्ना नात्म (नार्य ্তায়।। নাজানে চাতুরী মন্ত্র যুবকের মত। দুরন্ত ম-मन তাহে পুनः कत्र रुउ॥ ভरा कत्र ছिन रुत्र (काश मृष्टि পাড়ি। তথাপি সরল নহে লটিলতা ছাড়ি॥ একে পতি বিরহ তাহাতে পঞ্বাণ। অবিরত বরি-্ষণকরে পঞ্চবাণ।। পতির চরিত্র ভেবে করে হা रुजान। काष्ट्रिर कामिनीत था। इस नाम्।। चित्-

ति छीवध किति किति किति। शूक्य पुगत जाणि घरतर किति। এই जाण कथा कछ कर नाती गण। यू वत्र श्राण्ड किति । अहे जाण कथा कछ कर नाती गण। यू वत्र श्राण्ड किति शिक्षण ।। ज्ञारन ज्ञान जान वाकात कोणना। ज्ञाव ज्ञाव ज्ञाव किति । किति । किति ।। भारत नी मिलि ।। भारत शृक्षि कर्य (भोन्ति । वाकात व्याप्त वाकात वाय। मिलि ।। भारत श्राण्ड श्राण्ड कर्य (भोन्ति । अहा ना वाय। मिलि ।। भारत व्याप्त कर्य । मिलि क्या । या नाम वाय। स्व क्या विक मात्र । अस्य नाम वाय। वाकी क्या किति ।। वाक क्या । स्व व्याप्त कर्य । स्व व्याप्त क्या । स्याप्त क्या । स्व व्याप्त क्या । स्व

चथ वत कन। ति वामदत श्रम ॥

भग्नात ।। विधिव टि ने माधान क दिया विकात। প্রশ্ব हिठ প্রেমাস্থল ক্দে নবাকার ।। नृপতি হইল দুথে হর্ষিত মন। ব্রখাজী কন্যাখাজী করান ভোজন।। আনি নানা আয়োজন দ্রব্য ভারহ। সারিহ বৈদে লোক হেরি চমৎকার ।। করেহ পরিবেষ করে কত জন। জলপাণী কীর চিনি মিছরি মাখন।। নারি-কেল বেল জাম কাটাল বাতাবি। মিষ্ট অগ সহ দিল মিঠাই রাতাবি।। বিদিল গণ্ডু যকরি যত দিজ-গণ। অন্যদিশে বৈশে অন্যহ লোক জন।। জিলাপি কচ্রি পুরি পেট পুরি থায়। যত দেয় তত আর ি ফিরে২ চায় । দিল কত নিখুতি নবাত মনোহর।। वर्ताक वामाय जिस्त में भारताहता। (इना (इना-वजा तमर्गाञ्च। तमकता। थाका गका वर्ष कीत मत नता खता ।। हर्द्य हर्ष्य (वंश्व श्रिम याहा हान। আনন্দে ভূপতি করাইল জলপান ৷৷ ভোজনাত্তে मुथ ए कि मिटा छाँ हि लाग। क्रिक शयन मरविकर ञ् । । अष्ट्रेष मञ्चन १८० कति मगाप्त । वामा पिया (भाराइन नाना भरगाभव ॥ नियुक्क कविया नव निक लाक करन। याशाइटेंड उटन पिन येड श्र-রোজনে ॥ অমাত্য আত্রীয় আর লোক গণে নিয়া। মজলিসে বসিলেন আপনি আসিয়া।। আর-खिन भी ज वापा नृजा अनिभाग । (पथिएक चाहेन ধেয়ে কত শত জনে।। অপর্প কত শোভ। (ছরে ক্ত হাঁই।রজনী হয়েছে দিব। হেন রোসনাই।। কড়িতে২ ঝাড় তড়িতের প্রায়। ঝলকে উজ্ল করে शांभत्र (सावाय !। प्रमादन (प्रयानिशित्रि छ्नुतन चंदत घटत। यिन जाय मिताकत तमि मिताकदत्र।। चानकत (नणं निर्ण किया जान करत्। नित्रिधित ख्टन मम वाशन। शामत्त्र ॥ नुउ। कत्त्र मर्छक (पशि তে मरनार्त्र। ज्वन र्रेण (यन र्रेन्द्र नगत्।। छ।-**फामी कब्रग्न कांफ़ नाना यक छाट्य। ठाति निट्य**

(वाक जन हिर कित हारम।। शाहरकर भान करत करत जानभूता। वाज्य स्मन् मश्चता मश्चन्ता।। हेशावाक गाम हेशा भूवरा गशुत ! (वाद इस मिह मूद्र मुक्ष जुतानुत ।। এই काल भूवन मर्भन कदत गदव । वामरत्व विवत्र एक कहि उद्य ॥ इति य गर्गना নারী হয়ে অন্তঃপুরে। ভোজন করিল সবে মনোবা-इला शूटत ॥ माति शदत व्यन । कार्य व्यापि श्रद्धाकन । वज्ञकन्ता वामद्वरक कर्ताश मधन्।। इंदिन क्रुटक बाफ़ चारि (तामनाहै। (हितित दादतक यास बरनत यानाई। अशूर्व अर्या इट यूनक यूव छी। क्रा হেরি লজ্জাযুক্ত রতি রতিপতি।। মনেই উভয়ের হর্ষিত মন। রহ্দ্য করিতে রঙ্গে চলে রামাগণ।ং खेलनी छ देशन चानि यथा कना। रह ! मृद्र शानि कथा करह পরস্পর।। উঠে বৈসে মনোহর বামে লয়ে শশী। হেরি ভায় মোহ যায় কতেক রূপদী।। অ-দেহের শরে দেহে হয়ে জ্বালাতন ৷ একে ভাষি मुक्त्य जामि करह यात्र जन।। अत्या मिथ हेन्हा हस নারহিতেঘরে ৷ অবিরত দেবি অই ৰূপ যুৱৰ-রে।। আহামরিমরি কিবা কপ নিরুপম। বিধির ঘটন পতি যুবতীর সম।। এইমত কছে কত নারী **পরম্পরে। কেহ আসি হাসি২ কহে মনোহরে।**!

कर ए थि अटह यत बे ज़ क्यवत। यहन क्यन खनि ् जुड़ाब चंडत ।। चाथा ठत मताहत पृथा मता-্হর। গোটা দুটাকবিত। শুনাও দেখি বর ।। হাস ভাষ আভাসে दुबिशा जात श्वन। कि कर्ह स्विटिं যুব। আসে কত ধনী।। নাগরের কাছে আসি বসি-ल मक्दल। ना चार्ष्ट्र (इतिरंक (इन नम्न युगदन ।। এক প্রশু উত্তর না দিতে যুবরায়। পুনঃ২ ধনী সবে अभ्वत् जात्र।। यत्र मरन नात्री गरन कर्णा गक्यन। चिविष्याम मुधाजाया इस वृतिष्य !! क्ट्र अक मन-বতা ওছে মনোহর। শশির সহিত অদ্য বিদ্যা-नाल कत्।। व्यतमिक कि तमिक वृचित वथनि। निज नाजी मद्भ यमि भात खनमनि ॥ कि छ यमि हाति र्स विठात उरात । প্রতিজ্ঞা করহ দাস হয়ে মবে जात्र।। (म यमि इंशां इंदि मामी इंदि जर। वि-**Бात्र भीभा॰ मा क**ति भाता भव कर ॥ ताम वल विना मृत्व ७ भए विकी छ। श्रांतित्व इट्रेंद माजा (य र्झ विफिछ।। निर्वाम छन कि ख क्रक्रनशरन। विजात क करत वल कानिनीत भरन।। विजूतन असी হৈত্ত কটাক্ষেতে পারে। তাহার সহিত পুনঃ কে ित्र विष्ठाद्र ॥ वुद्यत छे शद्र शित्रि ए कदत्र वर्-म। जात रन छन। वन इम (कान जन।। (नाटक वरन

खनना (म यम्। नि खनना! जत्व खात कान् छ ए वन। याय वन।।। मद्कि हजुता नात्री कोनल नि পুণা শাভে বলে বি ভোদনে কামে অইঙণা !! चतरन श्रवनः चिं विक्रितादा गाति । त्रसः (मध তার সঙ্গে পারি কিছা হারি । ছারিয়াছি টেই ক্র माकां उपथन। नृथा चात िहारत कि करत श्रद्धा-कन।। मिन्यो सनिहा नात्यत मुक्लोमन। साद भपर मन इत्म हेलर ।। किन्छ नत्वाहाह वर्ण गड्डा चामि यद्या अका निर्क नाहि लाद्य करुत छम-(त ।। नाना ভार ভार्ति शत्त्र मर्थी मत्त्रा दिशा। मृतु-प्नि कवि पनी कहिए शिमदा ॥ स्थान मधीनन अकि छन ६ का वा । नाती कि नासक न इ कत्र विछा-इ। जारह अरव खनिनाम वाका याद छ।न। जवना व्यवनाञ्चन नाकि हित्रवान।। अञ्चादत स्वादत खाद्य ভ। य छे প জिल। পুরুষ অবল বল কি ৰূপে হইল।। मिছा नारक। वर्ष नाही बहारधत अकाज। विठादतत कथा कৈতে नाहि इय लाज।। भवाशीमा नदीना हा-थीना रुग्न करव। शूक्रव रुहेरज जाहे वनवजी हरव।। লাজে মরি সহচরি হাসি উপজয়। শুনি কামিনীর वानी कटर तमग्रा। अकि । छन्। नटन कर चातवात । अशक्त छे भक्षा मन छनियात ॥ नरीना वर्षीनः

কভুনাগরে কি হয়। পায়২ প্রেমভরে রহে নবব-य।। অভিমান কৈলে মান ভাঙ্কিবার তরে। কোন্ পতি যুবতীর পায় নাহিধরে।। প্রেমরারি আশা করি নারীর অধীন। যুবক জনেরে কভ হেরি চির দিন।। তাছাতে কহিলে বড় পুরুষেরে কিলে। যুবতী युदक (यन सर्ख जांत्र भीरम।। जाननात खन धनि (क करत वाथान। शुक्रव कथन नटह नातीत जमान।। (भार् मख (माहिना महिना मही उतन। अवनार मूर्थ उर् ममा रान।। পতि वाका स्निधनी नेयङ् र्गिना (उक्ति नाक्त मधी (ছড়ে नाथ मस्त्राधि-ল।। শুনহ প্রাণপতি করি নিবেদন। যুবতীর বশী-खुं युव कि कथन !! পর पुः थ्य पुः थी मपा मूथी अत भूरथ। अमस्य वाका जारह **स्वि उ**व मूरथ।। भिन्न। (कन कामाउन कतिक मानीदत । शांतिमाम शांति-ब्राइ किन कर फिरत्र।। त्रांस वटन किन धनि कत्र इ क्षि । शुक्ष यद नाहिक्य नातीत निक्षे।। श्रांत्रल विठादत यमि इस अভियानी। भूनः পতি প্রতি नार्शिक कां कार्यि ।। वज् इक (क्रांग्रेडक (क्रां জিনে তায়। যে মান ভাঙ্গিতে হবে ধরিয়া দুপায়।। राताहेल रात्रिल उछग्र मूमऋरे। काष्ट्र राति. मानि नादींद्र निक्रे ॥ युवजी स्थोवन जादश

(माइनीया तम। महस्कट्छ युव इस सिख्याम वन।। (मट्ट्र यथन পूनः चामि श्रथमंत्र । **जु**त्र कद्रश् शनि भथभद्र।। विद्रष्ट्र मञ्द्रा हुइ पुरुद्द पाय । তরুণী তরণী বিনা না দেখি উপায়।। অতএব নারী मर् कि रुप्व विठात । नातिनाग रातिनाम वृत्य (पथ नाह ।। श्निष्ठां २ धनी कट्ट आंद्रवात । अदि-চারে মান হারি একি অবিচার ॥ না হইল শাজের প্রদক্তব নহ। কিনে নাথ পরাজয় হইয়াছ কহ।। প্তনি কহে মনোহর শাত্র কিমধিক। নার্গর সহি-ত नाति किल्लाम ठिक ॥ अईक्ष नानाविध कथासु कथाय। चटल भन निमाकत मंदती (भाराय।। चा-পন আপনাগারে যায় রামাগণ। রীতি মত শ্যা करत करत्र উच्छालम ॥ शीरत २ वाश्वित चाह्न छन-ধীর। পুলক প্রমোদে সম অন্তর বাহির।। বাসরের বিবরণ করিতে শুবণ। আইল ভূপতিপত্নী ক্র্যা-त्र गपन ।। नरुया प्रिजा काल हु चिया वपन । न्या-পন মহলে আনে হর্ষিত মন ॥ कारा বিনা পতি भागी वपन भनिन । त्रक्रनीत कांगतर जार जन् की।। (इति मुजा पुःथयूजा करत किछामन ! कि कातरा वियामिका अस्त आगवन ॥ अकारसङ् चामा श्मा नाहि (कन छाया। मरनामुः १थ मति वाष्ट्रा वन

ला बागाय।। नमीकर जनमि अनर भात वानी। य जन् इटराट्ड (मात्र व्याजन शतानी ॥ चान्धर्य) (इतिन् थक विधित्र मृष्टिष्ठ । असन व्याभात नाहि পড़श पृष्ठित् । यदि जाभि मधी मद्य जाभन भर्-ল। থাকিতাম দিবানিশি নানা সতুহলে॥ সহ-छती मूरथ अक छनिम् ठठन। कामिनीत काया नारम আছে এক বন ৷৷ জনক রাজার রাজ্যে হ্য রয় (यह। शूनः नाकि यन्। यधिकादा याय (महे॥ थाटक তাহে नानाविध পশু পিক গণ। শেণীবাদ্ধ কত মত क कद्र वर्छन ।। अथमा निमु (म्नी मर्व लाटक वल। यतान भाजद (थटन পদগতি ছলে।। विजीय শেণীতে করিকর ছলে উরু। পরে কটি করি অরি আকে বলি শুরু।। চতুর্থে ভূষর তাহে রহে বিষধর। ছলে বুঝ বর্ণিলাম যুগা পয়োধর ।। পঞ্মেতে ক্ম-(नत भूगान यूगन । जुरममंखर वात्र मकन ॥ वृ-बिर्द तिनक शा कद्र विश्व छ्टन। यट किर्द्र अनि बाब ७४ विषक्त ।। थणशिक नामा शत ब्रह्म नय-ন। তদুপরে বেণীছলে ভুজ ফিনী গণ।। আর কত मुख (भूगी मर्प्य)र चाह् । मत्व नाकि वुद्री अक बादका र्रेयाद्या। (योवन जारात नाम नत्र भि পতি। बताका भागत जुल बाहेन मन्त्रि॥

ना १८७ (करबंद कंद कि कि जामीय। विष्कृप विशेषक नाकि जाए। हेन जाय।। अजुरक पिथिय। पार्के जूपाल नयदा। नारक्तिया अत्य व्याहि (जैरे वान) मतन।। सिनया मुजाद अहे कथाय को मन। वाथा। निन वापी जाय हित वृद्धि वन।। वाना कर जाव भाव वापी जाय हित वृद्धि वन।। वाना कर जाव भाव वापी कर वापी

व्यथक्न ग्रा।। भ्यात्।। मुअलाट वाश्दि बामिया युद्राय । निठा कर्य আদি কৈল হ্রাযত কায়।। নরপতি গৌরীকান্ত इत्य जुजावान। वानि विछा चानि कम देकन मंगा-शान।। कतिन जक्षे गरन मझना हतन । जरनरक्त মন বরে করিতে বরণ।। অবিরত কোলাত্র হয় ता भागात्त । कात माध्य मविष्णव विश्ववादत भारत।। সুথে প্রভাকর পরে চলে অস্তাচলে। নিশাকর প্রযোদিত গগণ মগুলে।। কালরাত্রি হেতু मেই अञ्चर्भ शिन। मूञ्रजारञ अञ्चित्र रेश्न भन्न पिन।। यवात अख्दा यशानम अलक्ष । ध्र शाय (शन विपाकि पिव अंकण ॥ तकनी एक शृहं मक देशन (अभिनाई। अनुमान कति जात ममजून नाई।। किल

क्तान्या दिन प्रथिष्ठ मून्द्र। नादी शए अस्टः-श्रीत इतिष वाउत।। कृत्वत्र भाज्यन मत्न करत म्थ-कत्र। कतिन विखत जाहा कहिए विखत ॥ अति ब्रम्भ क्रूप क्रवी काभिनी। काक्षन कलिका क्ष्क नी कमनिनी।। कम्य (कनिकम्य मुठमम वक। अगुम কেতকী ভূমিচম্পক চম্পক।। গোলাব দেঁউতী কৃষ্ণ-हुण यथी जाजी। बिला का देश लिका लगाउँ नाना काि ।। (मानात मामजी वाक्षा मामा जङ्गला। मग्राम् हिं जा की अभावनी नजा। क्यांत्र अभ वािका पाणां ही होशाही। नार्शन देशव किया · लाएं পরিপাটী।। পুয়াগ নাগকেশর জবা সেফা-লিক। তিল বেল পারুল গুপ্তকী সুকলিকা।। অত দী আতদী লঞ্লতা আর দ্রণ। বাঞ্চলি বাক্স ছল-भगा घन२ ।। অশোক कि॰ छक सर्क हो। मुम्मा छन। हम्मनी मृर्यामनी थाउँकी तक्रम ।। यक्रम लिउँकी निमिशक शक्तराजा। जनुमूर्याम्थी जनुमूर्या भार লাজ।। প্রস্টিত কোন ফুল কাহার মুসল। 'মধু লোভে হাঁকে বাঁকে ফিরে অলিফল।। आमिश्रा आनि (वन वानिम क्रिन । मिम्रकात ৰালা করি শয্যায় পাতিল ।। ফুলের গড়িল বাট। ফলের ব্যজন।ফুলময় ফরসি করিল কোনজন।।

ফুলের পয্যক্ষোপরে রাথে কড ফুল। হেরিলে ভা-বক ভাবে হয় দুল২।। আতর গোলাপ চুয়া সুগন্ধ **6 जन।** थरतर माजाइया तार्थ (कान जन।। अकृहा ফ্লের গুচ্ছ করে নৃশোভন! বাটা ভরি থিলী করি बार्थ मथीनन ॥ जाति कारन काशाताम कृ िएक ननिन। मन्पर वर्ष्ट् छोट्ट मन्य खनिन।। भन्पित इक्व यिन दमएख इसाम। (क्तिया दिशाणी প्रकः वाग हात्न काम ॥ ভाলर चानर कटन वें हर। ही द्र-ক দীণক তুন্য তু**ন্য দিতে** নাই।। এইৰূপ মাজা**ই**য়া त्राधिन मुन्मत । (इन काल्च चारम घरना हत यृवयत । १ कि कद कारभन्न कथा नारमण्ड श्रांका । एक निमानी গণে মনে লাগে প্রেন ফাঁস ॥ তাছাতে সুসজ্জীভূত অপর্প সাজে। সে বেশ হেরিলে রতিপতি মরে नारक।। विनन भर्गारकाभद्य यानि पुवताश। शामि शमिननी वीदार वादम याहा ॥ भाउन चाउदम পতি হেরিয়াপলায়। চঞ্জাং নার কপের তুলায়। প্রণাল করদম করি দরশন। জীবন তেজিতে देश्ल की यटन भगन।। भूरथंत्र उनना नाशि निवधि ভূতলে। তর। मिनाक (शन গগণ মঞ্জলে।। কর্ম্<u>ডে</u> (पाटन कर्स्ट वाना नामाग्न ननक। काम जनामन मम वांथित भगक ॥ मार्क्टन मार्किंठ एस भारि

শোভাকর। পুক্ষুকী কঠহারে জ্লেপ্রভাকর ॥ বাহ युर्ग स्वारम संगि राजु मरनाइत । कां हिन विजनी भरशाधरतंत्र डेभन् ॥ विভূষিত। इरम धर्मी वमरन **ज्यात । दिनल निकटो जामि প**ेजित जानरन ॥ হেরি যুবভীর বেশ বলে যুবরায় । একিং চন্দু মৃথি নিরথি তোমায়।। করিয়াছ ভূধরের ছটা বুঝি চরি। তেঁই রাথিয়াছ জচ কাঁচলিতে পুরি ৷৷ হরিয়াছ কোকিলের খুনি বুঝি ধনি। তেকারণে চুপ করি चाइ कि समित। मंडा निया त्या गाद छनित वहन। शूनः अकि किन मुख्य काँ शिष्ट दमन।। नादग्र कर्क जान পां जि कि क्षेत्र । मक्ते कि दिया अकि থরিয়াছ শশী। রাজার তনয়। হত্য হর পরধন। ছिर् ইহ। তবে। 6 ज न दर क्षा हन।। (हा दायन देन ल ংকৰ চেকে রাথ দিবে। হয় নয় কহ কথা একে বুঝি छट्या भागी दरन अगमित अ आज (कमन। नागिन **क्रमर्य पड़ कि विन वहन ११ हि कि कि कि बाह्य कि कि क**े ্**লের ধ**ন।চোরের উপরে তুমি চুরি কৈলে মন।। সত্যবটে দগুযোগ্য হয় চোরচয়। কি হয় তাহার ৰল তার যেবালয়।। আগে ওহে মন চোর। ফিরে (एक मन। जब ७ छा छती भारत वृक्षिव जथन।। मरनर गुरनाहत यन हरत नरम। এरव कि अफ़ारक हा हर गारत

চোর কয়ে।। অবাক হইল যুব শুনিয়া উত্তর। আর বার কত কথা কহে কত তর ।। জিজ্ঞাদিল কছ প্রিয়ে কিসের কারণে। পাষাণে গঠিল বিধি রম্ ণীর মনে 11 কোমল সে কলেবর কোমল গঠন 1 कामन कमन उन्। यामा मूट्शा छन्।। मकन छेखन रहन कतिया मृक्षन। किन शूनः (म (पर्हा थाप-রের মন।। শুনি শশী হাদিং কৃত্যে কিরে ভায়। रिठक १ रुख (इन केटल (कन द्राय ।। यथन विश्राज। देकन द्रमणी भटन। अथम उः मुक्तानन एक अङ-त्रा। महन। अथनाञ्चन अख्य मदन। निर्मा । क्रि या ज्ञिन मक निर्मान ।। कि एमाय जा स्टाइ पिया করেছিল ভাল। ঘটিল বিষম মনদ রমণীর ভাল।। এবে থাকি সদত পুরুষ সন্ধিবান। দিনে২ মন তাছে र्वेन পायान।। आছ्य मास्यत वाका नार्य थ अन। यमन म॰मर्थ यात घটेस (७ मन ।। दिव्यक्त। कदत **(एथ १য় कि न) इয়। পল হৈতে পুরুষের পা**ষাণ স্থ-पश्।। (पथर् पृष्ठाख जात ७१२ तद । मूक्त ना देर ज फूटन फिरत अनि मरव।। अञ्जूषि छ इस (यह निह स्व न हरा। यकिशा जाहास यथुनात्य यख इस ॥ पिया বিভাবরী বাস করিয়া তথায়। ফুরাইলে মধু তায় (फ्लाइंग्र) पाय ।: (प्थर् श्रामान कठ श्रूटयत मन्।

এত যার সনে তায় না করে স্বরণ।। কি করি বিধি-র বিধিনা পারি তেজিতে। নতুবা কি যুবরাজ मिक ७ महीरछ।। भन्नाषीना भरतव कतिव छेभा-मना। एक्नी कतिन विधिमहिट यञ्जना।। शाकि-তে চরণ মনে निष्य कल्वद्र। नाणाय ज्ञित् थग (यसन পिछादा।। कि चात्र किह्य नाथ जान ह मक ल। नात्रीत वाजना कजूना इस मकल।। थाकस याहा-র পতি চির পরবাস। ছাডিয়াছে সে রমণী জীব-<नत वाम।। यपन मपटन वामि क्रत इष्ट्रात । ना পাইলে কর করে বিভর প্রহার।। দামন্ত সমন্ত হেরি ক্তান্ত ডরায়। একে পতি বিদেশে তাহাতে হেন माय।। কाकिन भातम कीन अञ्जद कति। भरनत मः १ थ एक मात्री भन्न सु खमति ॥ ७ १२ कति व्यक्ति व्यक्ति ্ন লাগায়। ময়ল মরুত মন্দ আহতি তাহায় ॥ বিনা নাথ অন্যে তাহা কে করে শীতল। জরং করে কায় বিরম্ প্রবল্য দে কি তাহা মনে করে বারেক कथन। मूक् ठिन गन दए शूक्रायत मन।। यपि शिक् बाटम वाटम इक्षा ममग्र । मन्न जावि भूनः उाटक् कामाप्त इप्या (म वाक) नागय (मन रेट्ट ७क. उत्रा कीर्श (पट्र यादवात विविध मत ।। कन्यव आणा कति ठाउँकी (यनन । उष् ठिक्षू कति करत

নীর নিরীকণ্য অষ্ট্যাস এইকপ তেজিয়া আহা-র। অনুক্ষণ উপাসনা করয় তাহার ৷৷ দেথহ কেমন जनभरतत्राहत्य। यात्रस्थि वत्रमा करत्र मिना वृद्धि-যণ।। হেন কি উচিত কভু হয় তার প্রতি। সেই মত জেন নাথ পুরুষের গতি ৷৷ রায় বলে কেনং এড अ वहन। शुक्र त्य कहिला धनि मा (जारन काअन ॥ वि-र्पय (यमने नाही चात्र (क (उमन) अन्दर्कामिनी ভার বিশেষ কথন।। পিরীতি যথন করে প্রথমে রমণী। কথায়২ হাতে দেয় দিনমণি।। হাব ভাব কটাক ছরিয়া লয় প্রাণ। ভাসায়ে তর হ পরে नाशिकदश्वां।। आद्याद्यांत्र आद्र अद्भ कद्भ आडि नाय। मटक हिन बार्ग (यह जात गरन माम।। यह-ৰাপা কথায় করিয়। নানা ছল। ঘুরাইয়া দল করে भौनिक कमल। जनान मृखिका माथ विश्वा यउ-নে। গৃহে আর্নি যথা পুনঃ প্রহারে চরণে ।। খুরার চুক্রেতে পরে দথ্য করে তায়। নারীর তেমনি রীতি नाति विश्विताय।। ना प्रिथिएक शांध धनि व्याणनात দোষ। উচিত বলিলে শেষে উপজিবে রোষ।। হাসিং শশী বলে এ আয় কেমন। কোন নারী পতি তেজি घरना करत भन।। यमाभि काथास एन क्दत (कान जन। (वन्य) विन (नाटक जाटक कतिरव

श्यान ॥ अञ्चर पक তে कि यादि कदि मन । य दक 'स्यमन इंदेथ नाती कि उमन ॥ कहिएल यथार्थ कथा क्टन (कात (द्राप । अ व्यादात कि विवादन (मथाकेटन साय। विद्याय जाहार जुनः ७८६ थ्रियवत । कि হুইবে মমরাপে তোমার উপর ।৷ অনুরাগ নছে যোর তাহে কদাচন। রাগ ভরে বিরাগ বাড়িবে অ-কারণা। অধীনা ভোমার আমি ভূমি মোর পতি। (छदद (मथ इत्थ नाथ कात इस क छ।। जुनि यादन वारम চ्वि मगन शाहेम। धनक এ वद ताजा व्यटत क्रिनोहेशा !। नगर नि वामि गर्ग कतिरव छाए-न। नश्च ७ ७ ६ १ व जाका विरुद्ध दाक्रम।। (क करत শাসন ভাষা কেবা প্রজা পালে ৷কে শান্ত করিবে मात्र पृत्र छ (का गिरन ।। (का किन (का किन वा मानि পাড়িবেক গালি। প্রতিবাদী হাসি গালে দিবে চূণ কালি।। পতিত রহিবে ভূমি কে করিবে চাব। काटकर महल इइटिंग जात थामा। ना शाइट छेश-अञ्च जादर मार्थिकवा। महित्कु रहेत्व (याद्र कि निर्मि कि पिया।। कि जानि बदन। द्व यपि कत्र श्र भ-खन। शाहेर इइ रव भारत पुः तथत की खन।। निर-রিয়া বলে রায় কি কহিলে মরি। ইহাতে ক্ষতি কি मन इरवन। मून्म ति ॥ नहेरव आगात त्राक्त यन्।

मही भारत। कि पुःथ हे हात वाष्ट्रा विष्यु क भारत।। कतिरव बाभात थन बरन। ममर्थन। बानन्ति उर्दर कि रहेरव भार भन।। कि शादा (पथिए हेरा कि পারে সহিতে। অহিতেরে হিত বলি কে পারে ক হিতে।। তুমি যদি কর কোণা কিবা নাহি হয়। বর-क्ष क्रिंड भार याहा मरन नया। वाथितन ताथि उ পার বধিলে ববিতে। অসাধ্য কি আছে তব আ মাকে ক্রিতে । যত দিন বিলন ন। জিল তব সহ। তथन चाहिन এक याह्य दनह ॥ এतে १६ मत्रान তব লয়েছি আশ্র। করিব তা হজুরের ভ্রম যা ह्य।। या इंडेक अन्ताथ इहेल क्रियत । सहराज्य নামে নৈলে কলম্ব রটিবে।। দেথহ দৃষ্টান্ত তার করি-य वर्ष्टन। भर्ज जल्नत (यर्ङ्क्र चाह्रन ॥ कनक जाशिया **5 न् कन हो** र्ह्न। (म कन **ह** कन रहत खरा ना (छिजिन।। त्यात (मथ पिया छान यछ क्रिवदत्र। नीनक्छे क्छेहात त्राथिया एक् करत्।। नाहि करत् श-রিত্যাগ সদাশ্রিত বলি। নাহি লবে মোর দোষ (महे (रुजू विना। चान्धर्य) इहेशा धनी नत्न व त्कम न। जुनि कि अधीन मम किंका कथन।। न। नहेंव তব দোষ তাহে সে कि क्रभ । गुवजीत वन गुव। একি অপৰপা। (হন অসম্ভব কথা কে করে প্রত্যয়।

नाबीत निकटि नज शुक्रविक इस ।। প্रकास कि পারে কভুরাজায় দণ্ডিতে। বিধাতার বিধি কেবা পার্য় থা ডি:ত।। করীতে ধরিল সি॰ হ অনল শী-তল। গিরিশ পতন হৈল থাইয়া গরল।। ভেকেতে ধরিয়। ফণী করিল আহার। বোবায় পড়িছে বেদ একি চন্ৎকার।। পঙ্গুতে লঙিঘল গিরি কবে কোন্ ঠাই। অনায়াদে দেখিতেছে চকু যার নাই।। সৃষি-क मार्ज्ञात मारत हरस काशान्त्रि। পশু रेहन वैकः জ্ঞানী একি বিপরীত।। রজনীতে হৈল প্নঃ আদিতঃ গ্রহণ। কে কোথা হেরিল ছেন দুর্ঘট ঘটন।। বিশ্বাদ 'कि करत याहा नरह कपाइन । পতि कि कथन करत ভাষ্যার সেবন।। অতএব শুন নাথ করি নিবেদন।। অধীনীকে কেন কহ্ অক্থ্য ক্থন ৷৷ মনে মাত্র ক্লেথ नादत এই ভিका हाई। चूनिया (थकना (यन थाकि কোন ঠাই।। দেহের ভূষণ পতি শুন প্রাণপতি। ৰাহি পতি বাদে যার কিকব দুর্গতি।। অমিলন र्य यपि ना ब्राट्य जीवन। किश्लाम इंग्ला याहा कति दब अथन ।। রায় বলে হেন কভু না হয় সম্ভব। কারণ विरुद्ध रुप्त कार्याद्व डेफ्टव ।। कटनवत मम बामि स्त्रि भी की दन। (क्यरन विष्कृप इरद निहत्न मद्रग्री डामिन यानत्म (पाँटर् क्रांशिक्थरन ।

পশিল প্রেমের রস উভয়ের মনে।। বান্ধিল দোঁছা-य (मार्ट् श्रीिं तब्बू मिया। कात्र माध्य (करा थारक কাকে না হেরিয়া মাবুঝহ প্রেমিকগণ সত্য মিথ্যা হয়। প্রেম ভানু যেই দিন হুদে প্রমোদয়।। এই রূপ चानाशन देवन वङ्ख्य। विविद्या विविद्या वाङ्गा নিস্তর ।। যুবক যুবতী পরে করিল শয়ন্। ছেরি **যত** नातीशन कतिन शयन।। करनक विनय मणी हला **अ**खाइन । निर्मि (इति अवमाना उँ छ दत्त ५ थन ।। कि করে ভাবয় মনে নাপায় উপায়। পিরীতে বিচ্ছেদ কৈল বিক বিধাতায়।। শীতকর কিরণে প্রফুল সবে ह्या कलक जाहाटज फिल अकि आप्त मय ।। य वाति वर्षरण इस धता मूनी उन। अगन वाति वि मरध वाफ़्य व्यनन ॥ (य शक्तत शक्तर कारमान कर्न কায়। নীরস কাষ্টেতে বিধি গড়িল তাহায়॥ সুথে-त नागिया नाकि रुष्टेन मर्बत्री। कान क्ष किन जात মনোথেদে মরি।। হৃদাৰুজ যাহার সৌরভে সূঞ্ काम। हाश विधि (इन फूल द्राव वनवान।। स्थानित्न বাঁশীর ষর সুথী হয় মন। রাখিল ভাহাতে ছিত্র করিয়া গঠন ।। থেদ করি ছেন কত কছিল বিধিকে। रुन का**रन প্रভाকর উঠে পূর্ব**দিকে ।। कि করে প-**ि ७ इट्स वियम मङ्कि । ताथिल मुद्यत मन मुद्यत**

निकर्ते॥ ছाডिया भयाय ताय डेटिन जुताये। নিশাকর তেজে যেন চকোর পলায়।। উঠিয়া কা-भिनी शूनः धतिश्वा दमाश। काषा यात्व ७८६ नाष তেজিয়া আমায়।। রায় বলে কেন ধনি ভাব আর বার। দকলি ত কহিয়াছি সাক্ষাতে ভোষার।। না-र्दि विष्क्र कञ्च विरुद्ध मद्रग। भात्र श्री श्रिय ভবথাকে যেন মন।। ভোমায় না হেরে আমি না-तिय थाकिए । (छकात्रण दियामिछ। ना इहेवा চিতে ৷৷ ভিমি পত্নী আমি পতি প্রেমের মোহাগ! ত্ব অনুরাগে ধনি মোর অনুরাগ।৷ তোমার হই-লে সুথ মোর হয় সুথ। তব দুঃথে প্রাণপ্রিয়ে বাড়ে सात पृथ्य ॥ उँहै वनि सात नागि नाहि छाव भारत। हा कित उनव रेहरन हव रमहेकरा ॥ अजा কর উদয় হইল যেন অরি। না দেয় তি: গ্রতে ভায় मक्कां कल कही।। भभी वत्म उदय यिन छे ठिरव नि-শুচয়। তে। যার বিরহ নাথ প্রাণে নাহি সয়।। শীৰ্ क्रि अधीनीटक पिटव पत्र मन। कर यपि छाड़ि उव সুগল চরণ।। ভার্য্যার বচন রায় করিয়া শুরণ। म। खुना कतिन करि नृभिष्ठे वहन ॥ मामी नाम डेका-রিয়া শপথ করিয়া। উঠি তথা হৈতে গেল বাহিরে हिला।। छानिया मन्दित अथा धनी निक मदन।

महिती गरा डाक कार्छ यत्नर ।। तासमुडा मूःथयूडा रहित मथी गरा। जा जारम वृक्षिण ठात दिरम्य
कात्रा ।। रिपर्य प्रताहेल मद्द भाजि नाना छ्रल । उथाणि धनीत हरक (अभधाता गरण ।। श्रीकालीक मात्र
करह मडा हैहा नरहें। अथम भिनन कारण अहै
क्रि घरहें।।

অথ রাজা গৌরীকান্তের সভা বন্ধনা।। नम् जिलमी।। यानिनी अভाउँ, উदिया में जाउँ, গৌরীকান্ত নরপতি। বমিলেন আনি, শোভা পর-কাশি, পুলকে পুস্থিত মতি॥ মভামদ্ যত, থৈমে রীতিশত বিক্ষিত মনঃস্থে। কত লোকজন কে করে গণন হেরয় ভূপ সমুথে ৷৷ বসিয়াছে পাত্র প্রবীণ সুপাত্র, মিত্র মিত্র যোগ্যতায়। গুরু পুরো-হিত, নৃপ পুরোহিত, সুবিহিত করি চায় ।। দিজ দুশিকিত, বদিল পণ্ডিত, অমাত্য আত্মীয় গণঃ नर्बभाजी कज, देवरम भाजर्, द्धांजि करेष मह्द्रन ॥ विष्णाग्न व्यालक, कञ अव्यालक, भगक भाग क भरता छाइ रक् छन, बापि दङ्कन, दिनन भराव সনে।। উক্তিল মোক্তার, আমীন পেস্কার, নাএব সে-(त्रष्ठापात्र। (पश्यान मून्मी, थाजाकी वक्मी, मदव देवत्म पत्रवात ॥ शिमादव निशून, देवत्म कात्रवन,

কানওঁই কাজি আর ৷ হেড মোহরির, সদর নাজি-র, দপ্তরির দফাদার ॥ বিবরিতে নাই, পারি কত हैं है, रेर्टन दानी अिंडवानी । यामा मों गिनाइ, थाएं। क्रमामात, नर्श (ठानमात जामि॥ भाठक क-থক, বসিয়া কথক, ভাউয়ে ভক্তিয়া যত। স্বার नम्दन, जांग्रे शिचिशर्ग, जूलयम दर्ख कड ॥ डीट्फ অবিরত, ভাড়ামীতে রত, বৈদে করি নানা সাজ। क करत रखन, महक उखन, ताख देवपु क विद्याज ॥ थू अप (थयानी, का ख्यान का ख्यानी, कान ख्या छ है भावाक। मदव देवतम माकि, चापि भाष्यायाकी, गर् नरम् भारथामाञ ॥ भूनः काष्ट् जातः, त्ररह दीन-কার, দেতারী সেতার লয়ে। নানা যদ্রিগণে, সবে লেনে জনে, রহে হরষিত হয়ে।। চাকর নৌকর, করি ধোড়কর, নিজহ স্থানে চায়। চামর আড়ানী, মোর-छान यानि, कं अन्त हां कताय ॥ (कह करत करत) মৃপশিবোগরে, রাজছত্র ধরে থাড়া। সভা হেরি-বায়, কত লোক ধায়, ভূপভয়ে নাছি সাড়া।। অপ-क्ष भारक, मत्व ब्रह् मारक, निक कारक निरया-জনা সভাজন যত, এইমত কত, আদি যত লোক জন ৷৷ হেরি দরবার, হয় চমৎকার, ভূপ অপরূপ সাজে। করিছে বিচার, দেই মত তার, যাহার যে

बन मारक ॥ ताकात चाळाय, कांग्रेन काराय, মারিছে ধরিছে রোধে। পেয়ে অনুমতি, কোন জন প্রতি, ধনে আলাপনে তোষে ।। বান্ধিয়া কাহায়, মোড়ায় মোড়ায়, কোড়ায় প্রহার করে। वইয়া কাহায়, বেড়ী দিয়া পায়, কারাগারে **আনে ধরে।**। প্রহরী প্রহারে, কেহ হাহাকারে, কহে মরি প্রাণ यात्र। (कर् दल राष्ट्र) चिन कि नाव्र, धिक निया বিধাতায় ৷৷ কেহপায় তাপ, বলে বাপ বাপ, দুপ-मान भारत कीन। (कर्यत्व छ। है, यदि यारे गारे वुदक् लिट्टे नारम थिन।। (यन यमधाम, एन पूम-ধাম, মাছি নাহি নড়ে ডরে। প্রজাগণ যত, হয়ে নমাগত, কর দেয় করে করে।। আনে অবিরত; ममाशत कडा (प्रभाविष्यभीय अन ! पिया नजताजा कति (याष्ट्राञ, तादक कत्त्र पत्रम्म ॥ यावपरि-পতি, নহে অনুমতি, সরিতে শক্তিকার। নকিব कुकादा, जानाश ताजादा, তবে चारम पत्रवाह।। পাইয়া থেলাত, করি প্রণিপাত, কোনজন ফিরি যায়। হাদে ভাষে কায়, হেরি পাহারায়, চুপ চাপ করে ভায় ৷৷ পাঁচ হাভিয়ারী,রহে সারি সারি, দিগে দিগেতে সেপাই। পুকাগু শরীর, নয়নে রুবির, क्ज वीव क्ज ठाँहै।। यपि शाश छल, छुटि पल वन-

स्पृष्टं का करत गाति। ज्या कठ जनः स्य अरहा जनः नार्यिकात जूबी जाती। এ करण ताजनः मस् मजाजनः विहात शुहात करतः किया हमश्कातः स्विकानीकगातः वमुजियनी विवस्त ॥

अथ धनदान जाङ्गात ऋष्यत्म शूनतागनन॥ नीर्ष कि भरी।। अथः ७११। म जाकः माति निक निज् কাজ । মহ মুত মনোছর রায়। যথা গৌরীকান্ত ভূপ। নত। করি অপক্প: বৈদে বাসা হৈতে তথা যায়!। मद्य माना लाक छन, हिनद्यक अभगन, आज পাত্র মিত্র আপেনার : বর্মাত্রী আদি করিং নানা: িবিধ বেশ পরি, বাইতে হইল আওমার ।। হরিষে প্ৰভাষন, কত ভাবে কত জন, নৃপ কাছে হইতে বিদায়া আশা করে অবিরক্তঃ পাবেধন থেনু কত্য ছিক্গণ ততোধিক তায়। **আগে যা**য় নৃপ্ৰৱ.কাছে যুব মনে ছের, অপক্প ক্প মনোহর। ছাতা আসা (माँगेपाह) यह मय जपापातः आश्व शास्त्र कत (नोकत्राः अश्रेगेक देश्व श्रातः निकट्यण्य उदेकः-चद्रा, भोजीकाट्ड कटक् मचाहात्र। वार्छाटशद्य मृश-वृद्धः व्यापनि উठियः शद्धः मञ्जायग देवन स्वाकात ॥ অন্তরে উল্লাস মতি, করি বহু ব্রতি, নতি, বসাইল মভার ভিতরে। যুবরাজ মনোহর, মহ পিতা

पञ्चवत्र, देवदम जामि दाकामदमालद्व ॥ (माञा देश्हा **চমৎকার, দেখিবারে অনিবার, ধাইল অনে**ক লোক জন। कि কর বিশেষ তার, সংখ্যা করে अध्याकां इं श्रूषी नाटफ कतिए वर्शन।। निक्यम म्राज्य, मङाक्षि भरणनः वाधानिन करन জনে কত। নৃপদ্ত ৰূপবরে, যুধরাজ মনোহরে, (ह्दा (क्ट क्ट् यह गठ।। बेहक बरद फार्कि কয় • হের দেথ সহাশয় । বলিহারি বিধি বিধাতার । যেমৰ নৃপের দুক্তা শুনিয়াছি রূপযুক্তা, পতি পুনঃ নেই ৰূপ তার ॥ কেছ ৰলে ভালহ, ভূপ তিয় ভাল ভाल, ध्रम भारन आश्रीन (यमन। क्रिशार्ट्य क्रम्हा-দান, বছ্রপ ধনবান্, ভূপতির তনয়ে তেমন ।! मछ। (भाषायरनाकरम, अहे मछ कछ छत्म, कछ কথা কহে কত জনে। নূপ গৌরী গুণধান সহ নূপ গুণ**বাম, ছর্ঘিত নানা আলাপনে।।** বেহায়ী২ করে, হাদ্য পরিহাদ্য করে, পুজুতের সমানে মনান ! **সভ্যগণ দমুদয়,শুনিয়া পুফুজ হয়, কেবা ভার কর**য় वाथान ॥ याईवादत निक्षत्राम, उपख्टा खा याम. (गात्रीकाट्ड माणिन विषाय । श्रुव श्रूधवपू वात्रः बार्स (यटक मिष्वातः मन बाना शुकानिव छ।स।। শুনি পৌরীকান্ত রায্য রাখিবারে বতু পার্য থাসন

पित्नक पृद्दे विषा । यपि देश्व (पर्ण वामा, शूर्ख कति मम बागा शत निक (परण यादव हिंग। (इन क उक द इ इ । सः । कथा त शु जि द । सः । ना रि फिन গুণধাম রায়। অবশেষে কোন কপে, রাথিতে না-রিয়া ভূপে। গৌরীকান্ত কহে পুনরায়।। তবে যদি भश्रामां सा हेटवन मूनिक्छ, वत कन्। हरव सम दाम। कि जुमिन १९८त १९६६ नर कन्। मरनार्द्यः পাঠাইয়া দিব তব পাশ।। এবে বড় সাধ যোহে। যামাতা দৃহিত। দেঁছে, নিবাদে রাথিয়া নির্ঘি-তে। শুবণ করিয়া তায় । গুণখাম দিল সায়, নৃপ হয় एत्रियं उ हिट्छ ।। विषाय कतिए छुटल, धनस्त जलन्द्रभः भोत्रोक । इत का बाद्या कन । इत का जी প্রতিক, দিল ধন ততেঃধিক, কিন্দ্রিক করিব বর্জন। বর্ষাত্রি গণে২, কত দিল কেবা গণে, মনে মনে সকলে উল্লাম। ব্ৰাহ্মণে করিল দান, রাথি मदाकति भान-धन शान् आफि नाना वाम।। आभी-द्वाप कति ७६७ निकर (१९६६ मध्द, छनि याशु महम অন্তরে। ওপর্যানরপতি, সন্তাবিয়া সরা প্তি। 'मुर्भ। विन डिटियन शरत।। भितीत मिरक गरन, जू-যিয়ামিষ্ট বচনে, হাসিয়া দিলেন পুরস্কার । দীন पृथ्यी विद्यापान, कतित्वन वशुवान, गतावाद्या

भृति मराकात । भू कि मिशा बाणिक्न निष् निष् लाक कन , परण याका कि तिलन भरत । जूती (कती छक्षा वारक , मिकिमा छ। भगतारक , श्रणामि छे ठिन बर्धाभरत । वास , यरण बन्ध वास , बारण भारक लाक यास , कसर भक्ष बनिवात : रगेत्रीका छ बर्ध (भरम , नृर्थ भारे। हेस (मर्थ) वास कर्म बाण-नात । कार्य । भार्य । ममार्थ । राजा (क्ति बिल्मस) मर्ष्य वरस यून मरनाइरत । मुखा कार्क छे ठियास । निक्रावरस मरन वास , खिक कालीक भारत विद्रात ।।

অথ ননোহরের নগর ভূমণ ছলে কাঞ্চন নগর বস্তুনা।!

नम् जिलमी। मृल लोती शद्य, नद्य भदमाइद्युः मान मान मश्रालिन। यहत्न मुजादः मानी मिश्वादः यागाजादः लाठाहेन। व्यालिन छ ठियाः भूदी श्रद्यः विद्याः व्यालिन यहत्न । व्यालिन छ ठियाः भूदी श्रद्यः विद्याः व्यालिन यहत्न यादः । नामा व्याद्याजनः नवादः व्यादः । व्याप्तः व्यादः विद्याः । व्याप्तः विद्याः । व्याप्तः विद्याः । व्याप्तः । प्रामी भद्यः व्यादमः माञ्चाहेषा शासः । व्यादः प्राचीः मह्याः भामः । व्यादः प्राचीः मह्याः भामः । व्यादः प्राचीः मह्याः प्राचीः । व्यादः । व

পরিহাস। অপুর শ্যায়ে কিছু কাল রায়, সয়নে পু-ताश वाम।। निका छव शत, युव भटमाहत, छे ठिशा वा-হিরে যায়।নশর ভুমিতে, ইচ্ছাকরি চিতে, অধ্বে चादराहिन ताय। निक लाक करना ना नव्या मरना এক। কা গমন করে। হেরিতে কৌতুক, মারিল চাবু হা, ছুটে ৰোড়া বেগ ভৱে ৷৷ পথে যেতে২, দেখে ক-ভ জেতে, কে কহিবে পরিচয় । ব্রান্ণের গণ্ স্তি ব্যক্রণ, পতনে মধন রয় । শুনিতে দুরব, কৃছে কি-বা সব, গৌরবে পুরিল দেশ। বেদপুনি হয়, আলয়ং, মৌরভের পরিপেষ । ক্ষতিগণ কত্য করে মনিরভা अत्र शिकाटा है हैं। डीया एकि यास स्विति स्वान याहा, जुननाह याहि शाहै॥ देवसा सनवान, शिक्टि লিদান কভ ঠাই কভ জন। যেন পন্তরি হেনমানে कति कि कहियं विवत्तर ।! विविध काश्रष्ट, (मर्थ अन्तर्भ ग्व इहिष्ठ नव। कामाद अभात, कीमाति ষ্টাঠার, জনা কেলে কলু কণ্যা কৈবর্ত্তকপালী, কো-इक् क्षानी, स्यादो कनक काम। सत्री काहात, কহে কে কাহার বৃতি করি অনুমান।। বৃণিক বৈক-यः वाइँ जी वादनः स्थाय (यटम कं छ भ छ । वा की कत वृहि, वागमी वाकहें विविधः मछ । यान मानकत्र, अवसा भागद, मुठी नाकी गाणी गरन । जामनी

তহিলী, তুরী তাঁতী তিলী, তিওর তেলী কে গণে। (यानी (यानी हाबा) (कृत्न (थाना हाबा) नहेंद्रा ना-ঠক পোদ। সেক্রা শাঁথারি, শতং মারি, দেনকার न् ७ (मार ।। नालिउ नाख्दी, बाहीती बाख्दी, চাড়াল গাড়াল হাড়ি৷ ভোম ডাক ডাঁড়, ভকভিয়া ভাড, नहेक नर्लक नाष्ट्रिया हामात हुमाती, छूडात ছिनात्री, लायाना गाविता खंडी। खोशा शेंह हो हैं। কাঠরে কাঠাই,ভাউয়ে ভাষর শৃড়িয় কতমত জা-তি-দেখে কৃত জাতি,নগরেতে আছে দেড়ি ! বিদে-শী বাঙ্গাল, ডাকাতী ছিনাল, হাতে কৰি পায় বে-ছা।। নহ কোটালিয়া মাটি ফেলাইয়া কেরে রাজ পথ ময় ৷ র'ডে বেওয়ং কতে দেখেশত শত নিজ निकानरम इस ॥ का वालाधानाः किताकात्यानाः ঘর ঘার দুর্থচিতে। বারাগু। বাহিরে, শোভিতেছে ফিরে। হেরে হয় সুথ চিতে।। তাহে মারি সারি। শ্যামা শুক শারী, আদি করি কত থগা। যাতে নির্থিয়া, হ্রিষেতে হিয়া, করে উঠে তগমগ্যা কত करी वाकी, कछ कति वाकी, चादत्र थाकि (धरन : **ठब्रटार, दम्रत्य, मिनाइँग्रा एएटन रहरन ॥** य-**छानिका मश्र, कटलक आनश्र, वर्स्सि वादश मारि आवि ।** (इति (प्रवेताक) शूही लाग्न भाक) भरत भरत भारत

হারি।। অপরপ সব,করি অনুভব, ভূতলে তুলনা नाई। रहित हित्रिश आम्म मिति मिति। वर्ण विन होति याई।। (मदी (मदानग्नः कान थात तम्र शृकाती-তে পূজা করে। কি তার বাহার, ছেন কোথা আর, বসুকরে নাহি ধরে। শেখ ঘণ্টা রবে, সুথী হয় সবে, विश्विषया किया करवा धृश धूना धून, शूरत महाधूम, याथ यक मरहादमरद्या अविद्या मरदः यानम শক্তবে, ভালিয়া চলিল হায়। কিবা অপরুপ, হেরি-ভার ৰূপ, নগর বাসিরা চায় ৷৷ কেছ বলে ভাই, বেথ নাকি নাই, এমন তনয় কার। কি মোহন বেশ, বেশত, কভগুণ বিধানার ৷৷ কভ জন কভ, কছে কৃত মত। শুনিয়া যুবক যায়। নিক্টে রাজার, দে-থিল বাজার, প্রবেশ করিল তায়।। লোক জন সবেঃ क्लर त्रद्र, श्राहे वार्टे किरत थाय। आत ज्ञा श्रिश ধরি ফিরি ঘুরি। প্রহরী সবে বেড়ায়।। যদি ছল পায়, বাঙ্গে হাতে পায়, রাথে আনি কারাগারে। কোটা-লের ডরে, কালে খরে২, কে তাহে ছলিতে পারে॥ (হরিয়া শানিত, হ্যে হ্রষিত, ধন্য করে রাজে। যেমন রাজন, বৃদ্ধে বিচক্ষণ- এই সে উচিত সাজে॥ বাখানিল রায়, হাটের শোভায়, মোহিত করিল মন। দোকানহ, গিরি পরিমাণ, প্রবাল মৃক্তা বসন।।

হীরা মণি কত, আদি মরকত, আর কত কেবা জানে ৷ মুসতা মিশাল, শোভে ভাল ভাল, কেবা দেখে কোন থানে ।। যাহার ছটায়, তমোরাশি যায়, আলময় হয় ধর।। যেন প্রভাকর, হেন প্রভা कत्र, वर्स्ट ना याद्य कि कहा।। कार्याती नाम, कतिया বিশাল, রাথিয়াছে কোনখানে ৷ কি কাজ-তাহায়, गति हास हास जाहाई दा कि वाबादन ॥ मात्य एक्टि, (माভिट्ड ह् वृक्ति, क्लगा इंतिया हास्म ! করি জুল জুল, করি বুঝি ছল, পথিক জবে কি ভা-যে।। অপ্রায়েজন প্রিদকারণ হেরি ঘুরি কিরি যায়। করিয়া এমন, হরি লয়ে মন, ডেকে আনে तुबि जाय।। (यमन कामिनी, श्रजादव जाविनी, न अ्त পाजिया काँप। शनकर, जुनाय युवक, अपा-নে ইশারা ছাঁদ ৷৷ তাহার সমান, করি অনুমান, তে্ রিলে আপনা হারি । নানা রক্তায়ঃ কিবা রক্ তায়, ঝুলিতেছে সারিং।। মকমল মিন, সাটিন भू हिन, मटनाइत मन मन। (माइन मारान, करुएए-शो थान (मानानिष्ठ यनमन।। (अठ नीन भोज তাহে সুশোভিত, তড়িত জড়িত জরি। शाध थरत थरतः, रहति मरनाहरतः, मरनाहत करह मति॥ जाटर मदना इत, कि॰ थाल मुन्दत, बिकि मिकि कति

জুলে ৷ যেৰ ফণী মণি, রাখিয়া অবনী, ফিরিতেছে अञ्हल ॥ वाजानमी माही, अछ পরিপাটी, आइ वुटे। कार्छ। जाया (यस विशिद्धारक, भाषा (शरकः) লতা লতাইয়া যায়।। ভুরি২ সাড়ী, আর কত পাড়ী, দাঁতে মিশি খুসি হাসি! কিবা তার শোভা, मूनि भरना लाखा। राम कि छाविए शामि॥ नान কালা কন্তা, কত বন্তা বন্তা, আতা হতানৰ প্ৰায় 🛚 কিনারেতে ভাল, পাড়ী করে আল, নক্সালেথা তাহায় ।৷ কট্কি চুট্কি লে পাড়ী কবকি, সক্ল চিক্ৰ-রের সমা বৃষ্ণ যে জন্য হেরেছে ক্থন্ চারু যার ি নিরুপম।। মনোভোলা পেড়ে, কত বেড়েহ, সাজা-(शर्ष्ट्र (कान जन। यन जुटन याश्र) नित्र थिटन याश्र, অপর্প স্শোভন ৷৷ ধূপছায়াজাল, ডুরে ভালং, পেড়ে কিবাকারিকরী। হেন মনে গণি, মণি সহ কণী থেলিতেছে তদুপরি ৷৷ সুমধুর হাসি, তোরে ভाলवानिः (इति एव इत्रय छ। न। चारामति यात्र, জগত মাঝার,তুলনা নাহি সমান ॥ শশী ক্ষিনাম, আরাম বিরাম, আদি করি পাড়ী কত। শশী দুরে যায়, যাহার ছটায়, প্রভাকর প্রভাহত।। চেনির **চটक,** रहित्र हिठक स्वाप्तर छे प्रश्न हरा। श्रित्रा-ণাতীত কত সুশোভিত, তমর গরদ রয় ৷৷ ঢাকাই

বিলাতী, ধুতি কিবা ভাতি, পেড়ে হাতী ঘোড়া লেখা। যেন পশুগণ, করিছে ভূমণ, মাঝেং কত (तथा ।। कमलशाल्मी, जाहार काश्मी, पाकारन माहिक शैंहै। रहाँत चाहिहाउ, वाथ हस हिट्छ, কোথা আদিয়াছি ভাই ৷৷ কভুমনে লয়, বুঝি সু-तानंश, आईवाम किक्टिश्टल । श्रिवीट (इन) नाहि एषि रानः जुद्धा सनाहि मृत्या छ।। एए थ लिल शाही, थाना घरे विविध माङ्गीय कान पाकारन । পাজু ঘড়। ডিবা, তক্তক্কিনা, করিভেছে কোন থানে ৷৷ রেকাব গেলাস, শোভে তার পাশ, পাণ-বাটা পিক্দান। কাঁসার কাসর, ভাবর ভাগর, নাগর করে বাথান ৷৷ অস্ত্র শক্ত কভা যেন ঘনগেত, বিদুৎ তের চক্মক্। বিকে কোন ঠাই, সমতুল নাই, ছে-রিয়। চলে যুবক।। কত মণি হারী, সুনি মনোহারী, मারিং সবে থাকে। আরক্ত আরশি, চিরণী ঘূন-শি,রাথিয়াছে থাকেই।। দিশ্র কোটায়, রঞ্চের ছটায়, तक वादक का भदन। मिन्नुत हुनकी, रहाहैर कि , गांथिशाष्ट्र कान करन।। दनिक दनिश् । एण विदम्भीशा काशक कनम (वटहा मनी मन)।वात्र কেতাব কাতার, কিণিতেছে কেহ যেচে।। কোন ঠাঁই তায়, বেণেতী মোড়ায়, রাথে মাল মশালায়।

জীরক যমানী, মরীচাদি আনি, ধন্যা তেজপাত তায় ।। (वमाना वामाम, वह वाना काम, मिथी (योती हरे हिट्छ। नवस अनाही, विकि किनि याहि, करत (करू अक ভिতে।। ि माकि निन, करू नम हिनि, भिष्ठति कारावहिनि। (नाए रत्नी उकी, जा-য়কল টকী, লইতেছে কেহ কিণি ॥ কিশমিশ সূর, থাজুর আহুর, আদি নানা মেওয়াজাত। বিবরিতে যায়, ক্রমে বেড়ে যায়, প্রতি বিবরণে পাত।। নির-थिया मर्यः हिन याग्र छर्यः युव रुत्रयिछ मरन। श्नः (कान ठाँई) (मिथल मिठाई) भए विम (कान करन।। हान्य (पाकान, त्रह (कान श्रान, जिलालि কচ্রি পুরি। হেরি কেহ তায়, কিণি লয়ে যায়, খাইতে উদর পরি ॥রস রসকরা কত রস ভরা, থোলায় করিছে পাক। কেহ লয়ে তায়, দোকান माজाय, রাথে করি থাক থাক ।। এই মত কত। হেরে অবিরক্ত, হাটে বাটে প্রবেশিয়া। অপরূপ তর, পুনঃ ৰূপবর, দেখি স্থী হয় হিয়া ।। কিবা পরিপাটী,রহে কত পাটী, ফল মূল তুল নাই। শাক मदिक्ताल किंगिए विकास के जिल्ला के किंग्स के जिल्ला के किंग्स के किंगस किंगस के किंगस किंगस के किंग ঠাইনা পাছে করি রায়, তথা হৈতে যায়, সমুখেতে खेशवन। (रुतिया जारायः, वटन राय रायः, कि न**नि**ज

मुर्गां जन ।। विर्वेशीन हरू, रहित्र मदम नर्स, यु विर्वि **Бल्डानन । अवन मृक्जन, विलाम कांत्र**ा, कति अथा সদারণ। বিবরিতে তায়, মৃথে না জুয়ায়, কভ মত তার চার। ছলে ছায়াকারী, রহে সারি২, আদি बाडे (पर्वाकः। भान मान्मनी, भनाम शिशुनी) भाअ ए भारेनी करे। कुषाय कीवन, थिनिए भवन, यथाय अध्य वरे ॥ कन कृत पुष्ठ, अयुष्ठ२, तरर क्ठ उक्रमा भन्त दांस् वस, महत्र श्रामस, का-নিনী স্বৰু কাঞ্চন।। থাজুর কাটাল- আম জাম তাল, পিচ নিচ নারিকেল। নানা কল তার, ঝুলি-उड़ वाय, कामोब खवाक (वन । ति कामनकी। বালা হরীতকী, বেদান। বাদাস জল। কামরাহা चांठा, बाब्रुत मुद्रांठा, नव काय्यक वन ॥ वसन विश्वरन, वाक्षनि तश्रदन, जुमत अगलगास। हिस्जान त्रमाल, लिशान जगातन, विरुग दिस्भी भाश। दि-পিন ভিতর, কিবা সরোবর, চারি পাড়ে বান্ধা ঘাট। मंत्रान मतानी, मृत्थ कति चानि, (थटन दिशाशाक-मारे।। मात्रम मात्रमी,मद्रामारङ शिम, डाङ्क डाङ्की मत्न। थक्षनी थक्षन, कत्रम जुमन, इत्स महा मुधी म-(न।। करह कछ वाक्, मह ठकवाक्, ठकवाकी श्रूलिक-তে। সরোবরে তারু, পদ্ম শোভা পার, খেত রক্ত

नीन भीरज् ।। (रितिन कीवन, जुड़ाश कीवन, बकरभ কজ্জদ প্রায়। পিক কল গায়, বিলাসিতে যায়, নিয়-তবসন্ত যায় । নানা অনুরাগে, সহ ছয় রাজে, ছত্রিশ রাগিণী ধায়। মলয় অনিল; নাহি ছাড়ে जिनः भे छ एश शूनः जाश।। नगत दामिनी, गर्जन् लामिनी, अगमृभी नाती शरण। लहेवादत वातिः আনে সারি মারি। তথা হ্রষিত মনে।। হেন কালে রায়, আসিয়া তথায়, বৈদে সরোবর তটে। হেরি ध्वक नात्री, चाद्र चाँथि ठात्रि, कट इ उदक मथि वरहै।! त्व करिन चाहे, जान नाकि नाहे, ताजात यागा তা হবে। হেন জ্প আরৈ, জগত মাঝার, কেবা দে-থিয়াছে কবে ॥ কহে আর নারী, চলিতে নাপারি, दांदिश ना कलमी त्रा।नाहि याव घद्ता अहे क्रायद्ता সেবি তেজি লাজ ভয় 🔃 এই মত কত, ৰূপবতী ঘত। মানেভেদ বিবরিল। নগরের ভাব, ছেরিয়া घ छार, नागरतत छेणिक ।। भूगरनानिरदरमः यति প্রনেশে, কহিতে লাগিল রায়। হে চতুরানন কতই নৃজন, করিয়াছ এ ধরায়।। সামান্য নগরে। किया (माज। करत, विविध भवार्थ गरन । ना जानि यथायः (कर्नाध्यायः) क्छ (भाषा (महे व्रन्। এত ভাবি রায়, বন ভুমিবায়, মান্স করিয়া পরে:

না কহিয়া কায়, হর যিত কায়, উঠিল তুরগো-পরে । শৈলদুতাদুত, স্মারি রাজসুত, প্রণমিল মনে মনে । খ্রীকালীস্মার, করিতে প্রচার, লঘু ত্রিপদীতে ভণে।

> चल गरनाहरतत वन हुमरन याजा। शसात शमाख समक हन्सा।

यदगार्त उपविश्व बदगार्त रहा। किरत वर्ष अक वदन উপনীত হয় ।। নেহারে তাহার ্মধ্যে ক**ত মত** त्रास । (यात्रातंत्वः व्यायं भरतं आद्वरः कृतादा।। वन-জীবী পখাদির ভয়ন্বর মরে। মারোচিত ত্রছের धम नाहिमात ॥ मृगान अकृत मि॰ इताबु दाका । করী। ছানে২ ফেরে নিজ নিজ রব ভরি।। নারিছে বারণ কোপ। ধরি করে হরি। ভয়ে ভাবে রায় প্রাণ यास वृति इति ॥ नाना भएक छाटक नाना तृ टक्कालदत शका । তार्ह वरन पिनमारन निमि क्षशका ।। রবির কিরণ তথা না যাইতেপায়। অন্ধরতের ঘোঠকের বাধে পায় পায় ৷৷ ভাবিরা অস্থির রায় উপায় না পায়।পাইল উত্তম পথ কালীর কৃপায় ।। দ্বিধারে বিবিধ বৃক্ষ শূেণীবদ্ধ ঘন। যেন প্রভাকরে আছে।-पिया चाष्ट्र घन ॥ (इन काटन निक्रे इइन मक्ता-কাল । ভাবে যুবরাজ বৃঝি উপস্থিত কাল।।

পূর্বাপেক। মহানাদ করে কত জীবে। শুনিলে মন্-या शारत कि वा काषा की ति ।। चारकन कत्रश द्यास हरस जीज हिज। अयन अकर्म ना कतित कपा-চিত। কেন অভি গোপনে কহিয়া নাহি কায়। এ বনে এবার আনি বৃঝি যায় কায় ।। নাছি জানি कात करव कि निर्णि (शाहाय । 'किह मृत्थ कार्टि दान (कर्राय राय।। (कन व्रथ र्य भारेनु ना ব্ৰেষ্ স্বহিত। কে রক্ষা করিবে যাব কাহার সহিত।। क बाब कतित्व मशामन बाकि वत्न। निथन १३-তে वृद्धि इइन कीवरन ।। विशाज। यागात भरक कि হেত বিরত। এইকপ মনঃথেদে কছে অবিরত।। कि करत कारोहे काल वर्ख गान तरह। ध्रव्दि करल-च्रात भर्ता ना तरह ॥ जाविष्ठर भरत भुर्छ निमा-কর। উদয় গগণে হৈল বিভরিতে কর।। বাজী হৈতে নামি শীঘু সভয় অভরে । ছাড়িয়া বাহনে पिन याईएक चलुद्र ।। चाद्याइन क्रिन वानि বুক্ষোপরে। আশ্চর্য্য কথন এক শুন ভার পরে।। ্ষরণ্যের পূর্বে এক ছিল সরোবর । চারি পাড়ে ञ्रापन बाइय पिगचत ॥ मुन्दत मन्दित ठाति काट्ड शू ब्रुवन। सन्दर वरह जारह मल व शवन।। घनर अख्त्रव करत शिक अला नाना शरा मरत अल करत अलर।।

मधी मत्त्र उथा अक, मता इता नाती। आईन उ। १।-র ৰূপ বস্থিবারে নারি।। গজরাজ সমগতি মুগ वाक कि । जूदम मानी (यन थिन भए का दिर।। त्रक्रनीट्ड पिया श्राप्त कृत्य चाटना कृत्य । मधी करत मौरा श्रुष्ठ धण् निककरत्र ॥ अक मरन शकानरन (मव्दन्द आगा। निज् यक्तांदा इस् म व्दन्द আসা।। রুণু ঝুনু নূপুরের শব্দ হ্য পায়। তরু হৈতে युनताक खनिवादत भाग ॥ हाहि मिक हाहि दाश करत बनुनाम। (इनकारन पिधि छ शाह्न विम्।-भान । शहरा मुन्नही अवः निक्शमा करण । खगरा चत्रता धनी चाइरम किकाल ॥ डाजात उनसा প্রায় বোধ হয় ভাবে। নাহি জানি বিনোদিনী ধরে কোন ভাবে।। দঙ্গে সহচরী মাত্র নাহিক গ্রহরী। নষ্ট লোকে ভষা লৈতে পারয় প্রছরি ।৷ না করে তাহার ভয় কি সাহস মনে। যা হয় জানিতে পারি নিকট গমনে।। ভর্মা বান্ধিয়া উমাচরণ পুণ্ড (म। जुर्ख जक़ रिरट मटनाइत जल नाटम।। (भार्यन र्हेशा हत्न यथा कना भया। (यन महक्ती हत्न ক্রি জলাশয়।। বুঝাই প্রেমিকগণ কাম পরাক ম। কটাক্ষেতে ত্রিভুবন করে অতিক্রম।। প্রাণ ख्या (यह ছिन वृद्कत माथाय। भाष्क् वराचु कती

र्हि यति जारह थाय ॥ शूनः (महे निर्ज्य कितन উপাৰ্জন। কাম ভিন্ন এত শক্তি ধরে কোন জন।। ज्यमार्भात किया कथा ममानद महा आचार आ-अल देश्ल निटल गटर्णंत्र ।। यनछह यूनक कामिनी হেরিবায়। জ্রুপতি করে গতি যেন চলে বায়।। কাছে আসি সরোতটে বসিল জ্যার। হেরিয়া (यायाय चाटक काणिन क मात्।। मिर्दिन कटनवत দুরত্তের শরে। ঘিণ্ডণ আগুন জুলে কোকিলের सदि । विभान विरुद्धि थाम चयत रहासन । रदन হে বিধাতা শীঘু দেহ মোরে ফুল।। এথা রামা পরে করি সুর্থনী খুরি। স্থান করি সর্বোধর হৈতে উঠে १नी ।। स्थाउन कत्रिल अङ्ग दाति मधी भरत। যুবরজে প্রমাদ হেরিয়া ভাষ্ত্রগণে । ছাড়িয়া নাগ-রী কার্চে বসনান্যপরে। সেবিতে ময়কু পদ যায় ভার পরে।। কোথা স্ব অংয়োজন আন চন্মা-न। । ভাকে हन्त्। चार्य हन्त्रक्षिकात् माना।।। व्यान नाना अनुम शदक्ष अत्माम्य । एतिया ४-नीत रेश्न ভार्व अरगाम्य ।। विद्यमन भूम भूष्य भू-জিয়া শক্রে। মৃদ্ খরে তবকরে যোড় করে করে।। क्रम पर मृजुः क्षत्र खिन यात रतः ना मरह या जना आत भीषु कति इत।। তমিহে প্রস্থনাথ খনাথের

नाथा आर्ग मति बामि नाती विना आनगथ ।! শুনহে ত্রিপুরান্তক তোমা ভিন্ন কই। বেন জন चार् याय बनः तथम करे।। अपनि भारतार उन नाम जिल्लाहन। भारत शत्क विशीन कि इहेरल लाः हम।। दादतक करें। इ. छ। देशत शकाशत। कि आत करिय शक्तु नरक्ष थ्राध्य ११ वृक्ति ७८५ ७व ठव नाम वामरपर । पुर्श्यमीत शक्ति कि इहर जाव रमवा। लात्क वरन अकवात निम् नुर्ध कवा भात रेश्टल शाद्य बद सश्चित छव ॥ जन नाम रसारत পার বল করে কবে। এ অথ্যাতি কিন্তু তব সর্ लाटक करत ।। आज कान आमा गम नाहि प्रिशः भत्र। यादर शांक नीगु शाहे (पर वह तत्र ॥ वह कश মনস্তাপ প্রকাশির। হরে। করিল বিস্তর স্তাতি যাহে मुःथ रुद्र !! अमामी शूक्षत्र याना गति करशालद्र । मधी मत्य गृहर भने। हता वाजः शत ॥ याहरकर मथी भटनदा मुक्षाहा वन (मथि (करा चष्ट् कृतस নুধার ॥ অন্যরসপান করি মনে পায় প্রীতি। मनौ कत नाहि हात्र अन्। कर প্রতি।। কে তাহার। मुद्रे कन अहे रम्क्रतः । अर्कत बाकास वात चूक-क्निनौ **थरत ।। उँथन सम्यमिक** मिलिल (पीर्धि । खति इ अ गलु अक हि निम त (पा इ ।। मु त्वा हन।

नाय अक बाली छिल मर्क। करिल खनर किछ् কহি এ প্রসঙ্গে। উভয়ের হয় যদি উভয়ে আসজি। (म पूर्वात्र शक्क इंहा चरनात कि मिकि।। প্রেমিক যদ্যপি হয় প্রেমের কারণে। দুরন্ত কৃতান্ত নহ যায় একারণো না করে প্রাণের আশা পশ্চাত নাচায়। निज जन जानि यपि नयन ना ठाय।। यपि वटन अम मधा कद्र दिय शान । दिलंब ना मह भाव अनुभिष्ठ भान।। भान क्रियाभन श्रियाह योक। इस । यत ইহা শতওণে সুধার সরম।। নাহি তার ভাল লাগে मुधाक्त कत्र। शत्रभन यज्ञका नट्ट (महे कत्र।। यपि मে लाकित काष्ट्र कमाकात र्य। उथालि ভाराव চক্ষে উত্তম রহয় ৷৷ তাহার হাসিতে সে বিদ্যুত नाहि गादन। यमन धद्री (इस जाद विष्णुमादन ॥ े अक्त पृश्याल वर्ष्ट् चात्र क्ष्म श्रा । चज्यव শুন ধনি প্রেমের এধারা 11 উভয়ের মন থাকে উভ रा (य भिला। अभन जुलल किन्छ भिला कि ना भित्न।। (य जन ना পाইয়ाছে এ রদের তার। विक शिक जा हादा जनम विक जात ॥ अहे नव वाक। यद अनिलिक धनी। अक्रिनीत शुिक करह कति शृष् धनि।। মোর সমা অভাগিনী কেবা আছে বল। নাপাইনু পাণপতি পাণের সম্বল।। পতির নিকটে রৈল পুণয় পরশা मर्व বর্ণ সূবর্ণ পাইয়া যে পরশা। হেন ধনে विष्ठ क्रिन विधि याय । कि भूथ अ (पर छात्र थाक चात्र गाय।। विश्वा (विष्ठाई मिट्ह (योव-(नत जात। मिलन ना इस यिक साभी मिनजात।। कि काञ चारात अहे चुवर दमरन। (इन कारन नाहि (पथा रेश्व युव मरन!। कि क्न পाइला गाउ विश्व कान। अयद्य कि कार्य भी फिरजब देश्य कान।। अहे या यन स्थिम कहि वात वात ! नयुन यु-शल शल दात यनिदात ॥ अनि व्याहीत दानी कान मधी यान । अवारिया या का का कता कि दरन ॥ ताजात निमनी जीम जागरक नवीना !. नाहि পारद পতि धनि नृशधन दिना।। ऐरथ दिनाः দিতাকেন হও অকারণ। সকলে চিন্তিত তব নি-ভার কারণ ৷৷ মহথে কি ভয় পাবে মনোমত প্রি। যোগ্য পাত্র দেখি দান করিবে ভূপতি। उत्त (य विनम् र ७३। विधित्र निर्मंत्र । कृ हित्न विरा-র ফ্ল কে করিবে নয়।। ভূমি ত চুভুরা ধনি শাস্ত্রের এ মত। তবে ছেলে প্রায় কেন করিছ এমত ।। **এই क्रश** नानाविश मिश्रे मिश्रे ভाष्टि । नव महि রী রাজ তনয়াকে ভাষে ॥ বুঝিয়া স্থীর বাক্র ক্রয়গ্মন। মল্য় মারুতে করে ডগ্মগ্মন ব

छकाहेन इड्या मिन्नी गरंग रतन। नाहि करनयरत्र वल याहे कात वटल ॥ भटन कवि প্রবোধিব আপ-নার মনে। কেমন নারীর মন চাহয় রমণে।। যত ভাবি কভু কার ভাল এ ভাব না। ততই অন্তরে আসি দেরয় ভাবনা।। কোথা পতি কিন্তু সেই পতি मसिवान। सटनर म रनत वामना नपा धान।। दिनाः প করিল ধনী হেন বিধিনতে। অনতর শুন যাত্র। ষ্টে বিধিন্তে ৮ তক্ষতলে যসি ছিল ভূপের তম-র। তেরি তাহে লবে কহে ঘনুষ্য ত নয়।। নাজানি কি হেভ বনিয়াছে কিকয়য়। রজনীতে কভু এবা माहि कात हय।। (कर् रत्व स्ट्रें क स्ट्रेंट भारत नद। शक्षदं रजरा (कर् (कर्वा किमन ११ (कर् वल काहा नरह क्हेरव व्यवत । ऋषे हरस जारब किह करप्यत नत । १ (एव रेप्टन शस्त्र कि स्म भानरवह वास। एए वर कि कम कि इब न भारत वाम ॥ नरह লি দেখিতে পায় যদি হয় **সুর । কোন সখী বলে** লিনি ল্ইবে অসুর ।। এই অপ অনুমান করে স্থী-शर्म। अथ। इन्स् अस्म ७ इड्न मगर्म।। समुमिनी मथात विष्कृत्व मूक्षिण । छेमस काहरण पिवाकत नमु पिछ।। नयर ज्ला भिभित्तत मुकावली। अजा-ভের যত শোভা কিব। দাধ্য বলি ॥ প্রস্ফুটিত

নানা ফুল ফুল বাগিচায় ৷ কার ছেন অন ভাত্ फिरत नाहि हास ॥ विरुग विरुगी मुंदथ निनि नास পায়। ডালে২ বসি নিজ নিজ রবে গায়।। প্রনো-দিত পৰবন প্ৰভাকৰ করে। অ**লিখল ভূমে** ভাছে खन्य करत । किथाय शक्षनी मन् शक्षन नाह्य। रहित हटन वित्रहिनी ए ननना छन्न ॥ भूरथ भूथ আরোপণ করি শুক শারী। কড রজ্ করে কোখা वनि भादीर॥ (काकिना महिउ के उ काकिन भ-र्ष १ विद्यागित्र (भन नम भूति महत्त ॥ सन्दर् सभीतरा मदतायरत कल। केंगल् छत्र करक् करक জ্লজ্ল। শতম্থে হানিতেছে যত শতমল। বপুষার উদ্ধে প্রফুল সহ্ দৃশ।। মধুলোভ। মরু-लाट्ड তाटर পूनः वाद्य। खिद्या तम शिद्या नाहि मुशास म्थास।। मतान मतानी भर चानतम ज्ञाम-या। (व फाय निल्ल क ज जियार ॥ भपुतर प्रत **फाकिए किनाय। अनि वित्र श्रित आग नाहि थारक** काया। ज्ञानद छेप्टय मुधी रुड्न जिल्लाक। निका ভাঙ্গিউঠিল নগরে যত লোক।। নিজং কথে। সবে रहेन भगन । पूर्ण विन आजः शास्त्र हतन विज-ग्रा विभागन (काम। बनी कटक बात कदा ठीव स्य निर्म जोरत आश्रमन करत ।। मान कति विर

'शेखेरळ शतिभाग । मृत्थं नियं नियं नाम चीय धारम शाना। (करं करत्र (यम धुनि कत्रित्न मुवन। मनः প্রাণ তৃপ্ত হয় জুড়ায় শুবণ।। মৃত্তিকার শিব লিখ গড়িকোন জন। গন্ধ পুয়ে বিজ্ঞাদলে করিছে পূ अन्। श्रेकः। मारक् भान वारम्। त्कर् (उपि रुद्धः) ব্বমহ রবে স্বকার সিহরে ॥ পিতৃ তৃপ্তি করে কেই मजिल खुरान। क् उठाँ है कछ (ना छ। रहेल खुरान।। প্রতি প্রাণ জাগিল ইষত্কলরবে। কে হেন এ ছেন কালে বিযাদিত রবে॥ গোট গোচারণে যত গোপের গোপাল। পাঁচনী করিয়া করে চালায় গোপাল।। ব্থন্যগণ ধাইছে গাভীর পাছেই। থেৰু তার ফিরে চার কেম্পরে পাছে।। মুথে ডাকে र्षा कति छटन मुखी मन। क्षि कटम क्यान कति-ছে আগখন।। রাজ ভ্তা রাজকমে চলে করি नाज। निक প্রয়োজনে সবে করে সাজ সাজ।। গুহহ সমস্ত ব্যস্ত আংপন আলয়। নিদ্রা তেজি উ िटेशा चकार्य। करद नया। नादी गर्प इड़ा बाहि घरत **घरत** करता (य (य**मन ला**क कात कत्र क्रिक्र दि।। যামিনী হেডিয়া অন্ত কামিনীরগণে। পতি ছাড়ি যাইবার পরসাদ গণে। এক পদ রাথিয়া শয্যায় ভূমে আর।পতি প্রতি এক চক্ষুরার মে দুয়ার।।

লজ্জা বলে উঠে যাও কেবা পাছে চায়। প্রেম वरन श्रिय मञ्ज रक ছाড়িতে চায় ॥ नार्थ्य निकर्षे वात्का नरेट विषाय । काशाहेट निका रेहट यरन शरी पाद्य ।। तदि चाहेल चति हरम छेपस चछ-লে। সাত পাঁচ ভেবে সতী পতি ছেড়ে চলে।। অ-তিথি বৈষ্ণবে প্রতি লোকেরে জাগায়। ভক্তি-ভাবে রসনায় হরিওণ গায় ॥ রক্ত বলে কেহ নাচে ক্রিহায় হায়। কেহ্ বলে রাখে বল রঞ্লী পেছো-য়। নৃপালয়ে নহবত লাগিল। বাজিতে। ভুরগ **मোয়ার গণে দাজিল বাজীতে ।! ন**কিব জাগায় ভূপে ফুকারে ভৈরবী। কত কব যত হৈল সমুদি তেরবি।। পরে য**ত সথী গণে এ**ছেন সময়ে। ছেরে चनुभारकश्वार्य व्रमभरता। (कङ्बल इदन महे अभीनक्छन। किह् वटन नत किछ काथा निक-তন। আর স্থাবলে সইকাম জিনি ক্পাকত জন কত মত কহে এই ৰূপ।৷ অনুমানি ছির নাহি পায় মবে নেলি। রাজ নূতা এক দৃষ্টেথাকে আঁথি মেলি।। নির্থি যুবার ৰূপ হইয়াকাতরা। সঞ্চি-नीत প্রতি বালা কহিতেছে তুরা।। বল দেখি স্থি কার আছ্য় অরণ। শুনেছি না হর কোপে ফারের দরণ ॥ ভব্য হয়ে পুনঃ সে কি ধরিয়াছে দেহ।

बिथ्डा (मई वाक्ड इंप्य ना हिक मत्न्इ।। এरव वृक्षि र्व भव (महे প्यमंत्र। र्व ভाবি মোর অঙ্গে বিজি তেছে শর।। শুন কাম একি ভাস্তি আমি নহি হর। বিনা অপরাধে মোর প্রাণ কেন হর।। কপালে মি-न्द्र हिरु एंडा भन नरेश भिद्य (वर्गी क्री) छ।न क-तिष् (कन (२१) कानक्षे नष्ट् कर्ष्ट नीनमणि हात। व्यविष्ठाटन किन वान कि बिष्ट श्रेशन ।। वाषा इत नर्ह কটি শোভিছেবননে। কি লাগিয়া শত্ৰুভাব তবে भग मान्या जगा (निश्न नाहरू चार्क कलारन किथि ज। মিছা বোধেবৰহ কেমন তব চিত ॥ তোমার দ-हिं अभ ना आहरू विवास । वाबसाब किन आब সাধিতেছ বাদ। যদি ওছে ক্পবর হও পঞ্বাণ। लकानत्न अहात कत्रह लक्ष्याण ॥ ना हक्ष यम्। ल নার তবে কেন মার। হেরিয়া তোমার অঙ্ক বিনা-শে আনার ৷৷ ইথে অনুমান করি হবে শালু তার ৷ নেই হেড প্রকাশিছ ওণ শতুতার ।। তোমারে যে মিত্র ভাবে ভাবে রূপ রীতে। অনক সে অক চাত্র অনম্ করিতে ।। এবে নাকি তব মুথচন্দের সুধায়। षागा कति सानम हत्काती (सात्र धात्र ॥ गव, मह প্রণয় হেরিয়া বুকি মার। তেই সদা আমারে ক-ब्रिट्ट मात्र मात्र ॥ थाटक यमि वीत्रमर्थ ७८६ तम-

ताय । कन्म लित मर्गित कतर जुताय ॥ शूनिक चिनाव वाष्ट्रारय भवरव । स्मोतक कृष्टिय कान রৌরব না রবে।। ওংগা স্থি বৃঝিলাম ও নহে আ (मर्। नर् थान (कम कर् बहे छत्न (मर्।। य-(मह এटमहमह शवान विनादन। छद किन यांबर পরাণ বিনা দে॥ যে হয় সে হতে স্থি ভাহে পারা-चारत। এবে ওরে মোরে দেহ নৈলে প্রাণ যাবে॥ खुलवान वान चात नानाति निह्टि। यपिना मिनन इस छेश्र महिट्छ।। ना ब्रिट्ट क्यानि क्यांना तकनी প্রভাতে৷ দ্বিভণ বাড়িল অই কপের প্রভাতে ॥ नाना तदव थग थगी करत एए हात । रेपत क धति एक পারে এত শক্তিকার ৷৷ মলম্ গিরির এই অনিল প্রবল ৷ প্রাণ যায় প্রাণ মথি কিবা করি বল ৷৷ ক্লেং चिन्निक्तं करह ७१ ७१ । अञ्चि बुर्ग विम स्यात्र জ्यानि ছে बाखन।। घरेन निह्ल सङ्घ्वत मह! नद्रना (तापन ठकदादकत पुःमश।। अधिक कि शांत वन कर विवत्न । (छरवर भूदत्र देश्व विवत्र।। উহার বিহনে লথি প্রাণমন যায়। কি দোব ভো प्तत मिव नश्रदन मञ्जास ॥ वाद्र १ न। मारन चौथि कतित्व वात्र । मञ्च इत्य एक्त (यन श्रेम ख वात्र ।।। चारक (पारक श्राण्डि काक काक करत्र मान ! वर्यामि

ने श्वाद करत कि मर्दनाम ॥ यक वित छन छत युगन गुरुष। (कान फिर्ण कात कथा कतना गुरुष।। তত ভবে কোকিলের বজু সম রবে। বল দেখি লথি ইথে প্রাণ কিন্দে রবে।। পুল্ল বনে যাইতে বা-রণ করি পদে। যার য়ুাণে বিপদ ঘটয় পদে পদে। অবজ্ঞা করিয়া বাক্য তথা গিয়া ভূমে । বুঝাইতে নাহি পারি কভু তার ভুমে।। এবে উড়ু ২ মন হেরি। য়া এহারে। কি কাজ ভূষণে আর কি কাজ এ হারে॥ কি ফল হইবে ছার রাথিয়া জীবন। পরিত্যাগ করি গিয়া প্রবেশি জীবন।। হের দেখ কিব। রূপ अरंगा हम् याना। यह हम् मृत्य वृत्विहारत हम् - খালা।। কিবাৰয়নের শোভা কিবা চারু নানা। व्विमाम अनामा नाबीत कन नामा॥ कि श्रीक कि ওট যেন পল্লবাভিনব। জ্ঞান হয় স্মধ্র রদের व्यर्व । किटा म्लानिज वाङ् श्व नान कत्। म्य নথে প্রকাশিত অন্ধ সিত কর।। উরে উরু দুরু দুরু করয় আমার। নাতি মূলে বাসহান করিয়াছে মার।। ভাহার উপরে কিবা শোভিছে তিব্লি। কোটি মুখ হৈলে কটি বিবরিয়াবলি ৷৷ উরু আর लाम निर्दाशितन लाउम लाउम । अथितन नाती कि ह লিতে পারে পদে।। আহা মরি বিধি কত তোমার

मृक्षन । জগতে नाहिक कजु एहेति (हम छन । ध বিলম্ব নাকর নুলোচনা আশু ধাও ৷ কাছে পিয়া **यहे मनः (ठात्रक मुश्राक्षा) किर्ह्स अधारन क्रिता** (काथाय निवाम। कानदन कदतन (कन खनमनि वान।। नाहि जानि कोन तारभ प्रेट्ट विद्वाग । कि जामह তাহার কি বা হয় সুরাগ।। অধিনীর প্রতি যদি कृषा विर्जातसा। नितरथन उरव साहे अ मु:रश्च छति। য়া।। কহ পিয়া ও নাগরে আতে ভাল বাসা। জিজা-সিলে নাম ভার কৰে। ভালবানা।। বাল যদি হয় তথা করুন প্রস্থান। মুমান্তর নগরে বিরাজে দেই श्रान II **आर्फ़ मित्र मरतादत त्थ्रम** नाम छात्र I चानाकन अक्षिक क्षूक निकात ॥ यांग क्रस বলহ করিতে মধু পান। জানাও যুবকে গিয়া ই-रात (मापान ।। भनन (वमन नटर नट्टन नायाधः । छनियां वनीव धुनि भूरवाहना याय ॥ मन्दर कवि हत्न (यन करी हत्न। श्रेष्ड् बार्ड बाम्। करियः व्यक्ष्य ।। ताक्षनिनीत क्ष क्रि नितीक्षा । क्रमा-त्र एट उट्ट अथा मुक करन कना। करए किना कहि अटव भक्षभात भदत । जात्र देकल (पर वाका नाहि गता। यारा यति मृगनयमीत किया कुण। नाहि जानि अमान कतिन विश्वबाश । विनाशीक (वनी

কণী বদৰ কমল। হেরি হারি প্রবেশিল সলিলে কমল।। নয়ন নাসিক। ওই হইলে সার্থ ১ মৃগ থগ বিহু বনে মনে মরে রণ।। ফিবাক্ট কর পাল য্গা পরোধর। ভেবেই পাষাণ ইইল ধরাধর।। আগে णामि नाहि जानि कि काद्र १ इति। कानरम दर्शाख करत धाया वाग हति॥ अरव ब्या लाल वृत्वि कह कि जिला। पत्र निम किति (पर निकास कि तिसार एक (वय ।। নাতি কাম কৃপ উরু গঞ্জরাজ কর। গতির ভলায় इ॰म इइँदि किन्नव ।। (इन श्रम एम क्रम क्रिया वाहि আর। হেরিয়া কেমন করে মধেতে হিয়ার।। বিক বিধি তোরে মোর প্রাণ কায় ধিক। এ নারী বিছনে रवँ एक कि मुध क विक ा। या हाब बमनी अहे धना তার ভাল। সংযোগী ইইয়া সুথে কাটাইল ভাল।। क छ शूपा कर इ ছिन नाहि याय वना। स्परस था इप বেই করে এ অবলা।। কিন্তু এই ভাবি অর্নিক क्टव कि । निनिटिं क्रा ज़िशा (इन जार्य) चारक কিলে ৷৷ এক দিন একবার চক্ষে হেরি যায় : ফিরা-**८न नयन** चात्र कितान नायाय।। मप्छ उहादा (य रह्त्रय थाकि मरन । ना जानि कमरन तरह विना দরশনে।। তিলেক সহিতে নারি যে কটাক্ষ বাণ। मरह (य अधिक (म (क्यन यनवान्।। भाषारा गिष्न

वृशि विधिजात हिया। ই हात वित्र स् न दह कि न दह त्रशि।। यार्य अयात नाती धन। जात कात्र। मप-(नत जरत (म कि कथन नुकाश ।! कतिवादत ताक **स** थामाश कलता का रिनन। मण निक्क बारका कतिया বিরাজ।। ইহার নিকটে যবে আগমন করে। অ-(धामुद्रथ तु कि किरत छ इ इ एस करत ।। कि इस्त का-মের শার আর শার।মনে। তার কাছে খেই আছে **এই नाती मत्म ।। तृथा अ की**यन ब्रक्षा कवा नहरू বিধি। ইহার সহিত যদিনা মিলায় বিধি।। প্রবো-পিতে नाहि পারি আমার এমন। হায়২ কভু কপ না হেরি এনন ।। ইহার মিলনাভাবাণ্টের নাহি क्ना (क पिरंद बान्न रल क्ल रस बन्क्न।। এउ विन वनास पूतस मगृद्हदत्र। मिन्छ कतिया कर् मবা প্রতি হেরে।। শুন হে অনিল তদ নাছি করি यन । जिया किन वर श्राप वर्ष यन यन ।। अभि য়াছি নাম সে তোমার জগৎপ্রাণ। তাই কি ছে চে**ষ্টা কর নাশি বারে প্রাণ।। ওহে পিক** ভব খরে সুথী সর্য চিত। মোক কর্ণে বজু হান একি ভবো-চিত।। মধুলোভা মধুর তোমাতে ছিল খণ। তবে क्न ७ छत्र क्राना ७ या ७ ग। यू विन् के भाग ७ त विख्श (इ मत्। यञ्जिन (एइ भव न इ मत् भव।।

यपि अकामिनी बार्थ छेहात्र विद्राह । पिथिव नक-ल क्वा क्यन वीत रह।। वित्रहित्र काट्ड मिक ভোষা সবাকার। তাতে মারি কি পৌরুষ যেই শ্বাকার।। শীড়িত করিতে যদি পারহ দম্পতি। **उ**द्ध बिल थना भद्ध समा अंजिलिं ॥ अदस् भार बाना केटल कमालि खन छ।। खन्न किन इत (रहत **भरे भिष्ठनजा।। उ**त्र नाहि नक्का देशन अ यात्र (क-মন। এত শান্তি পেয়ে থলতায় থাকে মন।। এই वारा मनः रथेटम नानाविध ভाष्य । मरवाधन कति खन्दर के छ। एवं।। एवं काल मुर्जाहरा हेनर **ভাবে । निकटि चाइन यथा विम जा**म जात जात् ।। জীকালীদমার মনোহর প্রতি ফিরে। কহে যুর-রাজ বুঝি তব ভাগ্য ফিরে॥

चथ मूटना हन। मथीत महिल मटना इटतं व कटथा भक्थन ॥ मीर्घ हज्जमी इन्म ॥

तक छल खाक माथि, मुहर्मू ह पूरत खाँथि, यमन श्रक्षन शाधी, नाट्ठ मृथ मागरत । खलरत श्रन क श्रम, मूरला हन। मृत्र शभी, कार्ड आमि शामिश, किन्छा मिर्ड नागरत ॥ (शर्ड नाना हरन वर्ण, खन्ड न कर्ण खुडरन, विम्हाइ उक् डरन, क वह देन मनि। उव नावना विकृती, खरकत क्ष भाषूती,

कतिशाष्ट्र सन हाति, (ভবে মরে রমণী।। এ নহে ভ-দ্রের রীতি, কোথা শিথিয়াছ নীতি, সন্ধান করি-লে ক্ষিতি, হেন আর না নিলে। অনুমানে বোধ इश, अदमगी कथन नश, यन छट् महामग्न, कन अथा **क्रिन्न ।। कि द्रार**श विद्राश **पिन, मिटन एवर** अचारेन, किया आभा श्रामामन, आभा देश्न अ-থানে। কোথায় তব নিবাস কিবানাম কি আভা-म, अनिया श्नीत जाय, भटन याद्य दाधादन ।। ज्याने পুनर्वात्र कञ्च, (कन ७८६ द्रममञ्ज, नाहि (५६ शति-**छस, क्वां कि एक इक्षाटल। नुकिस। धनीत नास, का**-সিল রসিক রাল্ল, নুলোচনা ছেরি তায়, চম্পু পায় षि हाटल ॥ ভाट्य धनी घटनर, यपि পाই अहे अतन, রাথিব অতি গোপনে। না কহিব কাছারে। রাজত-নয়ারে পিছে, ব**লিব** যাইয়া মিছে, করিলাম ওর পিছে, না পাইবা উহারে ।। যদি এ নাগর রায়ঃ চাহি রাজ তনয়ায়, পরিচয় তার চায়, না কব বি-लियिया। मिनदनत मगाहात्र, नाहि कतिद अहात्र, ওবে ভনয়া রাজার, বিবয়িব হাসিয়া।। তা হইলে পরস্পরে, ফাঁপরে পড়িয়া পরে, মনে মনে নকা-তরে, যাহ। ইচ্ছা করিবে। মম এ চাত্রী ধরি। কি নাগর কি নাগরী, অনুমানে বোধ করি, বুরিতে

না পারিবে ৷৷ আনন্দে ভাছার পরে; লয়ে এই যুব-यरतः, त्राधिया चालन घरतः, यनः मुर्थ त्रहित। (इन কি হইবে কাল, মদৰ বেদন কাল, পাইয়া উত্তম काल, चात कि ना महिक ॥ अईक्ल अवस्ता, गतन তে করি কলুনা হাব ভাবে সুলোচয়া ছলিতে बत्बाहरतः। कथा करह छविर कति नाना अ जुहनी (मधाय दिनाष्ट्रनी, उनि (अग मह्द्र ॥ एउत নৃপক্ষার, আখান জানিয়া তার, মনেতে মানিন লার: বিপরীত যটিল। একের করিনু আশা। সুক্ করিতে পিপাদা, ফেলিনু যা হলে পাশা, কপালে ' উলটিল।। যা হউক পরিচয়, চাহিয়াছে দিতে হয়, स्थिनि भनो किया कया, विद्युचना कतिय। यपि १इति नक्षेत्रिक, ठाट्य ना इहेट्य शक्ति, माधिवादत निक्र शिक कानी अप श्रावित।। हेहादक कि कार्य) हत्व, মর প্রাণে যত মরে, ও নবীনা রাথে তবে, এ পরাণ द्राधिव। नट्ट मई जीर्थ शाम, मिषि कत्रिवाद काम, অইয়া উহার নাম, প্রাণপণে (দ্থিব। এতেক ভা-विक्षा द्वारा किंदन मटनाहनाय, পরिहय करिवाय, (क्न वन यायादन। स्निट्ड (म विवद्ग) कि नामि তোমার মন, কয়ে নিজ আকিঞ্ন, কিবা ফল বা-মারে ৷৷ ভাবিয়া আপন ওণে, পুড়ে নরি মনাওণে,

তোমার মে সব শুনে, কিবা লাভ হইবে। শুনি मूटना हन। कय, खिंब (इन तमयय, किषुःथं उव उप-য়, দঙ্কা করি কহিবে॥ যদি তার প্রতিকার, করি-তে সাধ্য আমার, থাকে তবে অজীকার, করিলাম कतित। कर (मधि मविष्यम, रहेष्व जात विष्यम, हेराट इ वरणयं आर्प मित्र मित्र मित्र । सिन রায় অতঃপর, কহে নাম মনোছর, অরুণ প্রেতে घत्र, अक्रमात कानित्र। ७१थाम श्रियातः आधि मुङ (महास्नात, विविधिया मधाहात, किह्ल (क मानिद्या क्रिडि (एम पुचन, र्हेन याबाद यह. গত নিশি এই বন, উত্তরিণু আসিয়া বেন্য গভ কতশত্ত, শব্দ করে নানা মত, ভাতি চিত হয়ে তত্ত, वृक्ष किन् विभिन्न।।। अछ देश अक्षतर्, हकात ह-कातो नइ, मान नुषा नुशावइ, याना कति किति-ছে। ছিলাম তাহে निপুनः हिन काटल পুनः २, भाज কোথা রুণ ঝুন, নুপুরের করিছে । করিয়া তাহা 🛒 वन, हाति पिक नितीकन, कविनाम अनुकन, हम-কিত অন্তরে। এই সরোবরোপরে, সহচরা সংস্থ করে, পুত্র গুচ্ছ নিজ করে, হেরি নারী অভরে ।। मत्न इंड्रेन माथः क्रिवादा व्यवमापः नश्न मत्न-র বাদ, প্রভুকে প্রণমিয়া। তোমা স্বাদরশ্বে,

তে काइए। এक भारत, आहिलाम (महेक्कर), वृक्ष হৈতে নামিয়া ৷ এবে কিন্তু প্রাণ যায়, হেরে আই ন ু বীলায়, যদি এই ভাবনায়, পার পার করিতে। তবে ह् थाक कीवनः नखवा याइव वनः चह नाम चन् ক্ষণ, শরিতে হে শ্বরিতে ।। শুনিয়া উঠে শিহরি। मुलाह्या महह्यो, कहिए श्राम कति, ख्या ताज क्यादत्रामा कानिशा श्रीति एशः कृतिम् व्यवश्री हशः मया कति बहागय, कम। कत आगादत ॥ अल ভাবে তুচ্ছ জ্ঞানে, হাম্য আম্যে তব স্থানে, পরি-हाम मृविधारन, कत्रिनु जा धतना। यम। लि एम च ভয়, অভবে শাহ্স হয়: বলি তার সমুদয়, কে ও यर्गवत्रा ॥ भूठकि शामिया त्रायः कहिन मुलाइ-নায়, কে দোঘী ইথে তোমায়, পারে ধনি করিতে। করিবে হে উপকার, এমত বাসনাকার, তার প্রতি আর বার, রোব দোষ ধরিতে।। শুবণ করিয়া ধনী, কছে শুন গুণ্মণি, এনগর দিনমণি, বলিয়া প্রচার হে। দেশ অতি সুবিস্তার, সৃষ্টি মধ্যে বিধাতার, र्दान नान दाकाद नमा र्दिय द्रा क्रमात রাজ জমার, কণেতে জিনিয়া মার, এনব তনয়া जात, नाम मत्नारमाहिनी। चम्तालि ना इस विया, তাহে ভাবিয়া ভাবিয়া মরমেরহে মরিয়া ও চির

বিরহিণী ৷৷ এই ফুলবাগিচায়, নিত্যবালা আনে याञ्च, निव अप शुक्तिवाञ्च, शायदन बक्रनीट । আমি আদি যত নারী; দেখিতেছ সমিভারী; সধী ব্ৰুপে আজ্ঞাকারী, আছি যোড় পাণিতে it গত রাত্রিযোগে যবে, দান করি পৃক্তি ভবে, গৃহ্ছ (मात्रा गाई मत्यः ताक म् छ। महित्छ। जालन यतन-द्र (छ ए. क्रांत धनी वाङ्रथए । पिद्रा नाना शति व्हरः লাগিল হে কহিতে ৷৷ বুৰাইনু কত ভায়, প্ৰবোধ না মামে ভার, সদা করে হায় হায়, ভালে কর মা-রিয়া। এইকপে পথোপরে, যাই যবে পরস্পরে, रमिथलाम जात भरतः अथा पृष्टि कतिया।। त्यन अह তরুবর, তলে এক কুপবর, জিনি পৃষ্ঠ শশংর, আ-ছয় কে বদিয়া। আলা নবাকার চিতে, পরিপৃষ্ঠ হৈল ভীতে, একদৃষ্টে এই ভিতে, চাহি দর আদি-शा। ज्यि वृक्षि (महे जन, क्हेरव नृशनकन, शाना-ত मुमत्रभन, कविनाम (ভागादत। (हति **छ**र मुन-तन, ताक वाना विवतन, कानिवाद विवतन, भाठा-इन जामात्त्र।। मजु मिथु। इस नस्न (१६२ महा-শয়, তৰ প্ৰতি চাহি বয়, অনিমিষে স্মারী ৷ ব্যা-वना रहेन वानाः महिष्ठ ना लाख कुनाः अन रेकन कानाभाना, प्रस्त तम जीमाति ॥ (यमन

ভোশার মন, হইয়াছে উচ্চাটন, একবার দরশন, क्रिया विभावीक। यह क्रिय बरह तरह, ও क्रिमी यज मरह, পতি विना कल करहा वुसाहेरव धतिरक ॥ এবে তে দোঁহার মন, দোঁহার প্রতিধাবন, হইয়াছে স্মিলন, করি চল যতনে। এক্প গুণের নিধি, যদি यिनाइन दिविः ছाড़िद्यना এই दिविः তোম। एन त्र उटन ।। कति जग छेशाननाः च इ एएथ नृशासनाः **मड्डा** छम्न विद्युष्टनाः नाहि क्दत मन्दन । विनय আর করনা, করহে শীখু চলনা, মরি মরি চন্দাননা, ভাবে তব কারণে।। পূজি বৃঝি দিগছর, গত রাত্রি कान वद्र, भारेषाट्य न रह वद्र, हिन क्षे वद्र (इ) ধনীর কি ধন্যভাল, মিলন হইল ভাল, যেমন মে চিরকাল, ছিল পতি বিরহে !৷ শুনি কছে মনো-হর, কেন পরিহাস কর, এমন কি ভাগ্যধর, আমি আর হইব । বিধাতা মিলায় তবে, ইহা নাকি भात्र हरव, जुविषव त्रमार्खरव, उहारत कि शाहर।। একে নিগুর অনস্ব, পোড়াইছে মম অস্ব, কাটা বায় कति राष्ट्र, नद्रपट्ठ मन्ना। ना कतिया शतिवान, উन दिशा वथ প্রাণ, এ আবার কি বিধান, এ দেশের ननना।। अनि कर्र मुलाइना, क्रन ভाব প্রবঞ্জা, कति (एश विष्य हना । अ (य त्राजन निमनी। कि कात्र (१

वाशिहाय, उव প্রতি समा हाय, चना मिन भृष्ट् यास, नामुद्र अनुनिनी। अप्र (पथ প्रजांकत, रूद्र অতি প্রভাকর, করে বিতরণ কর, উঠিয়া সে গগ-(न) किन धनी श्रव्यान, कड़ेशा मक्रिनी भएग, किया अल कि बांकरन, भरन एक ना शरन ।। कर्ति छन चाकियान, मरमापृत्थं विद्याहरा, कवित्क क्रिया भन, जर मधिकर्ष। एतिशा यात्रात करतः सामक मि-নতি করে, পাঠায়ে তব গোচার, করে লাপ দর্শন।। একেত নবীনা বেশ, রবিভাপে কত বেশ, নঙ্ थनी मवित्यम, (एथना (इ ठाहिया । यात किन পুনঃ২০ ছল ভাবি কর খুন, এম হে করি নিগুন কা-शांदक ना किशा। मुल्लोहना वादकर द्वासः প্रভास कति मुथाय किकारण मिलिय जाय, यन उटर का-মিনী। একে যুবা তাহে দিব। কিৰপে ঘটায়ে पिराः कि कानि घ िटर किराः अठ नट्स यांगिनी !! रेप्थ किन्छ यमि बिन जार जार जाबि नाहि छिन्। शास्त्र अरमा मर्हित, अ मरनारमाहिनी दक । नाहुः ना कत्रश्न পরে, প্রকাশ হইলে পরে, হৃদয় বিদীর্ম্ভ পরে, হবে যোর ক্ষণিকে ।। শুনি স্থী সুলোচনা, करह जात्र वालाहना, (कन कत व्यन जना नाहि জানিবে যাছে। করিব তার উপায়, শুন ছে রসিক

तात्र, **किछानि चार्ग** जुताय, कि करर जूशका * (ह।। এতেক विन्धा धनीः दाथिया नागत मिनः न्भ-दाना (म दमगी) शादन हत्न कहिएछ। (परथ यानि क्षत्राजीत, नश्रत विरुष्ट् नीतः विषदा मन व्यक्तिः স্থীগণ সহিতে।। ছেরিয়া সুলোচনায়, কহে বালা क्रबनाय, कि कि कि युवदाय, भीषु भादा वनदा। প্রাণ হৈল জরজর, অগ্রসর পঞ্চশর, দান্ডাইয়া श्रात्न भाव, विशक्त প्रविनद्ध ॥ अहे (मथ ठकवाक्, शास वकु मम वाक्, जाविशा हहे चवाक्। ज्य बाक् ना महत । शिक वर्षा भात भात जुमत नहांस ভার, বলিয়া সুসমাচার, এ যজ্ঞণা নাশ রে।। শুনি रमाज विवज्ञ १० कि कहिन मूब्द्र १० कि निशा ७ मुब्द १० चलदा मुरलाहन।। उच्चाति हास्र, आग वृक्षियास যায়, ভ্টবে কি হেন দায়, পরিত্রাণ সূচনা ।। শুনি णथी कटह जाय, कथा **छनि हामि भारा, वानिकात** अंड क्षाय, बाहदन उरद्धा अंड कान यम वानी, মিলাব নাগর আনি, ইথে কেন ঠানরাণি, নয়নে প্রোবহে।। ধৈরজ ধরিতে হয়, উতলার কর্ম নয়, क्तिर्दिक इस नस्र अजाभिनी भगरका यपि किह **जुलार**े जिस्सा कानाय कृत्न, उथन वन कि कत्न, কি কব রাজন কে ।। তোমার টুটিবে মান, মো

नवात यादा প्राप, खिमल नइ अख्डान, वृद्य (पथ याना । इत्व कड्रे व्यवस्थित क्षानित्व अविद्धार, नागत्र याहेटव रमध, बाकाब नामरनट्ड ॥ (छंहे বলি রাজবালা, প্রকাশিলে নানা জ্বালা, কলকেতে অফ ঢালা, উচিত ত নয়হে ৷ মোর পরামর্শ ধরু গোপনে যাপন কর, লয়ে অই ক্পবর, রাজার তনমুহে।। উহার আছ্য় স্ন, করে প্রেম উপাজ্ঞান, नाजानिटल (कानकन, ইहाর ভাজনহে । মনেহ এই আশ্ব, থাকিয়া তোমার পাশ্ব, যাহে হয় উপ-श्राम, अमुख् या नरह ॥ श्वामि वाना भियुपारण कर्इ मधी विषा्रभारन, भन ना अरवाद पारन, क वुकिरव वनना। कहिरन कत्रि (गार्थन, कत त्रम आ-नाथन, পाइव (इ खड़े जन, क्रि क्रान इनना ॥ শুনে যত স্থীগণে, উদার সোপান গণে, কছে अल्लाहम्मानदन, जाहात कि जावना । यमि भटन हेक्शकति, पिटन कति विভावती, गगरगत हन्तु वित् ই एथ आत जाव ना ॥ आएइ एन वृष्ति वन, यि করি ছল বল, কে বুঝে সে ছল বল, ত্রিজগত ভি-তরে। পাতিলে চাতরী পাশ, অতি চতরের পাশ, পড়য় লাগিয়া काँग, कि माध्य जारह जरह ।। अस्य महरुती भरत, मिलाइँट अहे अस्न, क्लू गहि

ादि मानः (जामात क्षणा इ हि। क्षित (इन छेणा इ। क्षित मकान था इ। क्षित वाद्य वाद्य जुनि ताक पृष्ठि। दि विव वाद्य वाद्य जुनि ताक पृष्ठि। दि विव वाद्य वाद्य जुनि ताक पृष्ठि। दि विव वाद्य वाद्य मानः द्य । दि विव विव या मानः वाद्य । दि विव वाद्य मानः वाद्य वाद वाद्य वा

व्यथ भटन । इटबब्र ना बीटवन भावन ॥

 রমণীর রমণীয় রসে। রসে যাতে মন রবে তাতে याभिना पिवटम।। वटम रुनिया युवक वाक उन्हि যুবতীর। তীর সম বজে লাগি চকে বহে দুঃথ नीর।। নীরবে**৺ত থাকি কিছুকাল ক**হেছ রাল্ল পরে। পরে সহে যত জালা জানিতে কি পারে পরে! পরে আছি হে এখন যে ভাবের অলম্বার । কার কাছে কৰ অপরেতে কি বুঝিবে ডার ৪ তার আগে मिथि हैए ७ वह पृथ्य त्जा क्रा क्रा या उत्र मार्गः (उतामना या कता। कत (या कि निर्यमन कति এবে (इ (जांगाइत । गादा जहीं इहे पाटर भी शुव-লহ আমারে । মারে অবিরভ শর অর্দেথ ন্য 🕚 काय। काय विवयं विष्णय कवि कि निध्द छेलाय।। পায় যাহেকর যদি ও নবীনা এইজন। জননের मा उर ७१ तहिर्व मादन ।। जन अधन मा नात आन **শুন হে অবলে। বলে বলতুর্ন্ত** কিবা বার্য্যকরিলে সকলে।। কলেবর যায় বিবরিয়া কছ বিবরণ । বর-न क्रिटिं द्राञ्जवाना देवन कि ना मन।। भरना श्रव **र्हित्रिया ভाব कति मृमूध्नि। दनी करह वाह दाख थिक थिक अपर्याप्ता ।। नमः निहाकाइ यम्दनदा धना** তার শরে। সরে জীব জন্ত নাছি বুঝি তাছার স-মরে।। মরে যাই কিন্ত যুবরাজ এলার কেমন।

भन शृक्ष रखत नाती (एख अठ कि विभन ।। मत्नाइ-दाय लाइवा नाहि जाद मदनाइत्र। इत अद्रिदक कि ভয় থাক সুথে অভঃপর ।৷ পর নাহি ভাবি কর এই বেশ শুভ কর। কর বাস হয়ে দৃপসুতা চন্দ্রে **छन्**कत्र ॥ कह रेश्ट पिन विश जूषा कश्या विश-य। (भय नाञ्जाहेर्ड् मुरलाहना विनाहेशा (कभा। क शक्क दब्र ब जुगन विन छाएइ नाहि भारत । भारत २ (शन विदेख कोविया वर्णमादन।। मादन (कवा नव काष्ट्रिनी (य (इरह (म किट्मा) (क रम नाहि क्रांटन ভয়ে (यद शिल भून) (प्राम ! हिर्य छाड़ि (मण यदाणय (जिल्ड जीवन। दन विवय क्रल-তে পতন হয় হন।। ঘনত মধ্যে দেহ লুকায় চঞ্চলা। छना यना (शन (एति श्राम्) यामा हम्प्रना ॥ **छन्तकवा कवा প्रियाण पिरन पिरन हारत। ति**हा-दि त्म यमविष नव भाग्यत्र। कादतः भताकादत (क्न কৃপধর ধর্মে অন্তরে।যে অন্তরে হেরি ভার রূপ काञ नाहि धरत ।। धरत किया जान जान जान या-হার প্রভাবে। ভাবে সুলোচনা দিয়া কিনা সে ভाল माজाव ॥ यादव चानत्कत्र প्रान मन निद्यत **उ**े भरत । भरत पिन धनी (इन मिंथी वाश्वि शम) করে।। করে আল করে টিপ টাপ হেন ভাল করে।

ভাল করে শোভাকর নিশাকরে কিবা করে । করে কেন করে কাম দে কামুক সয়ভনে । যত বেহা-विल नाहि द्वि रम छुन्द्राम्य ॥ मरन चाक्र পর্য্যন্ত বাণ কটাক্ষ সন্ধান। ধান পুরুষের প্রাণ তা-হে করি অনুমান !৷ মান রালিতে কুর**ফ শিশু লই**-द्या मञ्जूरण। जुरम यदन पृथ्दय काल (क्या कदर (कान करम ।। करण थक्षन गक्षन (माई नशरन माकाय १ यात यात्र छान गथी फिल च छन ठाहात ।। हास्र করি শ্রুতি হেরি গৃধিনী সদায় ৷ দায় গণিয়া দিক্ কার দিয়া কেরে বিধাতায় ৷! ভায় পরাইল দুলো-**চ**ন। (वाप) कि ज्ञान र । मत्रभन कति क्लामान काम কলেবর।। বরণীয় তাত্ে শ্বর্গথকর্ম বাল।। বালা। বলাগণে সেক্প সক্পে হয় কালা 🛭 কালাশয় করে থগপতি হেরি দর্প নাশা। নাস। তিল পুর किनिया नाव १। शतका भाग शतका भाका का विखा রিয়া করিতে বিশেষ। শেষ শেষ হয় যদি ভার नार्य উष्प्रभा। (मभ किना कृत्व क्त्रि नथ महन्। क्ति मर। मर्**ठ**ती भिन युव्यक छ्निएक व्यर्त्तर ॥ রহ্বলিতে চলিতে মানা করিবার আংশ। আফে म्निया म्निया म्थहकगाव भारम ॥ भारम श्रारम व

বাজিতে রসিকের মনঃগকে। পকে ছিল পক্ विदायत्र लाजाङ्ख नक्ष्याः।। नक्ष्य चनि कित्र কুন্দ দন্ত সম তায়। সমতায় মুক্তাবলী প্রতি কেবা कित हाय। कित होय वृक्षि चुक् भरन कतिवाद कानि। कानि (तथा. पिन बार्ख रन बाकिया पर আলি।। আলি দরশন করে দাজাইয়া চভানন। নন তুলনায় ভুল্য পুষ্ঠ চচ্ছের কিরণ ৷৷ কি রন তা-হাতে কমলের মানের ওমান ৷ মাননেতে মজে পায়ো মধ্যে তেজিতে পরাণ।। পরা নবীন চিবুক মধ্যে তাহে দিব্য কলি। কলি কিবা শোভে যুথি-कात प्रमञ्जादावनी !। दनि कि माध्ययं करेशे পরাইল চিক। চিক মিক করে যেন জ্বলে সৌদা-দিনা ঠিক।। ঠিক ভূলে কত জন হেরি নয়ন যুগ-ता । भटन मिन इति हित्र १५ कि एक दीवा करन।। ভালে ডবিল পা**হজ নাল সে কর নেহারি। হা**রি भानिय। यत्नत चिश् निवाइ एछ नाति ।। नाती नट् কে বলিতে কাটে গড়। পয়োধরে । ধরে হাসি হাসি **লথী মনো**ছর বংফাপরে ।। পরে ঢাকিতে মিছার কুচ কৰিল কাঁচলি। চলিবারে নারে হেরি গিরি व्यति वाइन दिन ॥ देनी (क वाट्स (इन (म उन म्थ जीतु नदत्र। मदत्र अक्शम वादत्रक यम्। शि नका

करत ।। नक करत थरत (य क मेरत निकारत कि नारत । किनारत्र ত তাহে यिश्व मिथा ছলে জলে হারে॥ श्दर एदत लायताओं दिवािक गांडि गत। नरताक इ नीवावणी निवा व विशा अवत् ॥ अवत्य সন্। জিবলী ছেরি উর্গ লবে। উরো গগণের নীচে थाकि (धनस् मद्दन्।। घत्य (क् जात निकटि यपि রনিক হ্রমণ। মন পুর পড়ে তার করে সে আশুভ-ফণ।। ওভক্ষন পেলে চতাক পাক্তি গড়ি বিধি। বিধি মতে ভাপে হেলা করাজ্লির স্কিলি। নিধি মিশ্ভি অসুরা নানা পরাইল তায়। লতায় লভায় ষেন্কত ভড়িভ লতায় ।। তল ভায় হয় কোম্ল क्रमल १९९ म्ला। मल्यन रहात्रे जारव १९९ मल काल मन।। पन भन (मानाशिक की था। दाहरक शेराशः। ताय निक ভाবে (हजनारि नकल गूहास।। लघु-চায় সুসজ্জায় রায় তার অবিরত। রতনের কান্তি মিলে যথা হয় মরক হা। কন্ত কর শোভা বাজু বন্ধ বান্ধিল বাজ্তে। যুতে২ মেন জ্লে মণি মাণি-ক্য অভূতে॥ ভূতে ভবিষ্যতে বভাগানে হেন নাহি আর। হিয়া রশিকের ডগ মগ ভাবেতে যা-श्वा। श्वारक्त्र मग वहेगाएक क्रिव्य हिना रति उपविधि तरह वरन रम्भ शतिहिति।। इतिग्रानि

প্রায় শোভা পায় আনিয়া বদনে। সনেং তারা ফাসিতেছে হাসিয়ার গণে।। গণে ত্রিপেঁচ করিয়া নেই অপরে শরায়। ধরে পরায় যুক্ক জনমন অভি প্রায়। প্রায় কোটিং সর্প বিষ কটির প্রভাব। ভাব নির্থিলে ভাবকের উঠে কত ভাব।। ভাবনায় ছিয়া कम्भगान एस थरत थरत। थरतः हक्करात फिल निज-**१ উপরে।। পরে দোনরীর মধ্যে মধ্যে চাঁদ** থানি তায়। চাঁদ থানি ভায় ঠিক যেন সদা দীপ্তি পায়।। পায় ওরু ভার নিত্ব সহজে ওরু ভার ৷ ওরু ভার फिल **च्या या पार्वाद स्वाद राज राज अस्ति अस्ति स्वा**जक করিকর উরুতে নাপায়। পায়ং রছে পায় করী शक्ति मिथिवास्।। वास जन करत ह् भागः। हाति भ्यत्न याश्च। (म्यत्न याश्च क्र क्र क्लाक ह्ला (म्थिनात তায়। বারতায় বিবরিতে যার নাহি পারে শেষ। (मय मुरवाहना नृश्रुद्ध माञ्जाश श्रमरम्म ॥ (मन ছাড়িল দিরেক গণে শুনি তার ধুনি। ধনী যুবকে করিল যুবতীর শিরে।মণি।। রমণীর ক্ল তেজে কুল ৰূপের প্রভাতে। প্রভাতের প্রভাকর প্রায় উদয় ধরাতে ৷৷ অধরাতে রহে যুবজন করি নিরী-ক্ষণ। ক্ষণ পাইলে পলায় রতি পতির সদন।। রসদ नवीन यदनाइब रहित निक ভाবে। ভাবে গদ গদ

হয়ে মনে কত ভাব ভাবে।। ভাবে রসিক ব্ঝিতে পারে রসের বর্ন্তন । বর্ন্ত নেহারি না বর্ন্ত মধ্যে কৈতে বিবরণ' !৷ বরণের শোভা নির্থিয়া স্থী পরস্পরে । পরে নাহি পায় ভলনায় অবনী ভিত-रत।। তরে রাজনন্দিনীর সবে কহে ধীরেই। ধীরে (मथः आदिश्व निश्दित उद किद्ताः किद्व नश्चन नाहि-क रहति कल्पत्र विहात । हात मुत्न/हना मधीरक कतिन श्रवकात ॥ कात्र माध्यक्ट श्रामन म्यात মনে যত। যতনের সার হৈল বলি বাখানে সতত।। **७७ ताजनिमनीत ভाद वाद्य भवा भवा मन**िम्ह পাবকেতে চিতকরিছে দহন ॥ হন অভরেই আর দিওণকাতরা। তরাদেতে বালাবলে মথি গৃহে চল তুরা।। তরাইতে তোরা ভিন্ন স্থি ফেবা আছে वन । वन नाहि कल्वरत जार्च्यानम् ५ १४ न॥ छन् । वाष्ट्र वार्य नागदा निवान । वामनाय পূর্ম্ব করি শেষে হবে হাস ভাব।। ভাব শুনিয়া স-বিনী গণে হইল তৎপর। পরস্পর কিন্ত যুবকেরে (रद्र नित्रखत्र।। जत्र नाहि मट्र घटन घटन शाहित्व नवात्र। वात्रर वत्न छाइ वर्षे श्रीकानीयभात्।।

अथ मदनाहरत्रत्र नाती (वर्ण ताक्रकन्त्रा मदनारमाहिनीत अखः शूत्र अदिण।।

शयायो। नागरतस्त्र माङाह्या ज्यायत्था नाती। नथी मह्यादम हटन ताङ्गात समात्री । चाड़िन शाभन भथ टिलिटन यागिटा। महे भए अटन-लिन श्मिर्फ शमिर्छ।। युवरक नहेशा शब्ध यक লহ**চ**নী। নানা বাক্যকেহে কত রম্ব ভম্ব করি।। মনোহর বেই মত প্রত্যত্তর করে ! শুনিলে কৌশ-ৰ চিত্ৰাচে প্ৰেম ভৱে ।। জিজভাদিল সংচরা ওহে যুবরাজ। রাজবালা কৈল তব সঞ্জিনীর সংজ্যা। এইকপ স্থা ভাবে রবে ফিনারবে। বিশেষির। কহ্শুনি দুখা হই মবে।। সমানে**২ মাজে** কথায় কৌশল। যুববর ভাবে ইথে উভরে কিফল।। তথা-পি চতুর। মথী করিতেছে র**ল। নি**রুভর হৈলে পরে রম হয় ভদ।। এত ভাবি ঘুব কছে শুন সহ-**ठ**ही। कात मधी इस्ब दव काथा रम मून्यती ॥ वि-ব। হ'ই ইবে যার মনে নাছি তার। পড়সির নিজা নাই এযে চমৎকার ॥ যে রাথিবে সহচ্চী তার कथा नाहै। फे छत्र का हारत मिव एक व मित्र जाहै।। **इक्किक्ति काल मार्क्स नियम । वृत्य (मध** मिथि वाक्र मंडा किया नय ।। कथाय नितंख हिन (माहिनी नष्डाय । वि ७१ वा जिन ना ज युवात क-थाय। मिठाए निएक दिल्ल वाका वृथा र्य। मधी

সম্বোধন করি রসবতী কয়।। শুন ওলো সুলোচনে কি শুনিতে গাই। ছেন অপর্বাপ কথা কভু শুনি नाई।। रयक्रम क तिरद कर्या (म यपिना तरा। अजि-निति इड्रेट कि कर्णनाहि एया । आगि यपि नथी এক রাথিবারে চাই: ভোরাচ্তি করিলে কি কার্য্য হবে নাই।। ভোরা মোর ঐতিনিধি কেবা নাছি कारन। (यात्र कथा करत तल कि कार्च) (मथादन।। युववत करण् अन विवत्त ए छरत। नश्र भ था किरन প্রতিনিধি কিবা হবে।। আশক হইলে পরে অনে। দেয় ভার ৷ অথবা অনুপঞ্জিত আছ্য় ব্ভোর ৷৷ विष्णयं कः भानिक शास्त्र (पर्कारक । वन्तरस কি করিবে কার পরদাজে।। তলি থেকে বিদ্যুদানে अन्ता मुम्बति। উত্তর কি দিব বল কৈলে नएछ-त्री।। त्राथित यम्। शि स्वाद्ध मधी कृष्ण कृष्टि । পাইব কি বল শুনি লাভ কিবা আছে ৷৷ শুনি ধনী युवाकत वात्कात (कोणाला घटन२ (महेक्सर) सम (शन प्रेंटन ॥ चात्र कि नष्काश वास्थ तस्म उन् जारमः (रुरमर त्रमव जी नागरत मसाय।। कि कि वि भारेत रुख महरती । भुवत्य वहन नाही साहा লাজে মরি।। তথাপি লাভের কথা সুধাইলে কই। (माय थाटक कमाकंत्र नाती वह नह ।! व्यवना मतना

মোরা নাহি জানি ছল। কি দিব তে:মারে মম কি चाटह भवन।। कीवन (योदन चामि (पर् चात्र मन। করেহ তব করেকরিব অর্পণ।। অধিকন্ত রীতি মত কম যদি কর। মধ্যেং পুরকার পাবে যুববর।। মনোহর কহে শুন রাজার জমারি। অগ্রিম কি क्षिज विना थाकिएज ना भाति ॥ स्थिनशा मुन्म ती হেসে কহে আরবার। এ দেশের অগ্রিম নাহিক ব্যবহার।। কম লিন অত্যে বৃষ্ধে পুরস্কার পরে। এই মত রীতি নীতি মম এনগরে॥ তবে যদিনিতান্ত .न। ছাড় মতিমান। অধিক কি দিব সার কৈনু বাক্য मान ।। नागत करिन मुच्कथाय कि कन । कार्याः তে হইলে পরে বুঝিব দকল ।। এইমত নান। বিধ तम बक् ভता । চলিতে । হাস পরিহাস করে॥ আগেং সুলোচ্ন। করিছে গমন। নারী বেশে তার शदत मृत्यत मन्त्रमा चात्रः मधी भटन चाटन शास्त्र याय । नृপदानः शरक्रक शमरन मास्य जाया। ऋगुयुन् कति वाष्ट्र हत्रा नृश्रा क्यार मत्य यामि अप्त-मिन श्रा । १४ मधी मद्ध हिन वृद्धि अक जन। কেহ পাছে দেখি তার জিজ্ঞাসে কারণ।৷ এই চিস্তা कति छत् मधौगत् क्या। मकत्न गमन कता छन-যুক্ত নয়।। সুলোচনা শুনি কহে এই সে উচিত।

এক জনে রেথে যাওয়া ইহার বিহিত।! এত বলি अक नथी वाधित विश्व । आवर मकरनट गमन कतिन।। ভারাকার। (धाञ्चात পাছার। দ্বারে দ্বারে। ছলিয়া যাইতে কার নাধ্য কেবা পারে ।। অভঃপুর मुशादा गाई उ मधी गर। এक र पात्री आति करनर भटन ॥ दाकनुषा (भागरन कानरन निष्ठ) यान। दिनि ज चाছिल हैना वाली विमानात ॥ कि जानि कि इस उर् महा छात् गत्न। (महे (३ जू म॰थ। कति ছाড़ मक्डला। यु छन वाहित-তে द्रा भगन। भूती প্रदिশिष्ठ भूनः तिराउउ-क्षता। म॰ था। पिया मिश्नी मक्टल खनल्य। ताकः वाना मह याग्र वन्मद छिउद्र ॥ छिन्नर भएन चा-ছিল স্বিস্তার। উতরিল দবে যথা নৃপের দৃতার॥ মন্দিরে উঠিয়া পরে যত সহচরী। যুবরাজে ারা-धारा वमाइन धति।। जि॰ रामन यानि (कह कदिन अपान। উপবিষ্ট देशन जादर युव क्यवान।। (माहिः नीत्र कात्रण यानिन यन्। मन। शामर धनी जार्श উপবিষ্ট হন।। मधीगण कि हल नागत तमकृल। म्-न्मती माजिया रेश्न मुन्दतीत क्षा। यम्गविध जा-किट्ड (डामाद्र खनदीम। मक्टन मुन्द्री उद दाथि-नाम नाम।। यूववन एटन करह छन महहती। मून-

बीब क्रांब (इ इरेनू मुम्पती।। नृशाक्ना छनिया इ-हैन इत्रयिछ। मदात्र चलुत 'देशन প্রযোগে পুর্বি-ত ৷৷ সৃন্দরীকে লইয়া কৌতুক কৈল কতা কথায়২ छानु मछ दक बाग उ॥ मान शुका मुन्न बी दक कवा-ইয়া তবে । পাচকो বান্ধণী ভক্ষ্য দ্রব্য আনে भरत ॥ अशृदं भर्य। इन (जाजनार ज (भाषाइन) चनछत्र मान शुका (याहिनी कदिन ॥ नवान वाक्षन **पित्र क्रिया (छा छन्। चानत्म शर्य (एक वाला क** রিল শয়ন।। সহচরী সকলে করিল মানাহার। . विशुरिम का है। स कान यथा आन यात्र ।। कटमः पिदा প্রিট্ল অব্ধান। নিদ্রা তেজি সুন্দরী করিল शास्त्रान्थान ॥ (गाहिनी मिन्नि) चापि (माहिनी সহিতে। অলন ছাড়িয়া উঠে পুলকিত চিতে॥ कान मधी चानिया मुनियंत जूतन। कताइन मूम-রীর মুখ প্রকালন।। মোহিনীর দেইমত অন্য কেছ क्दन । जन जनभान (मार्ट्यानि मिन भदन ॥ थ। ह्म (माहाय जाहा जाननिष गता मधीगरा जा-খুল যোগায় ততফণে।। কোন সহচরী করে চামর ব্যজনাকেহকহে পরিহাস সরস কথন ৷৷ দিবা व्यवमान (मर्थि पटिक मिन्। मत्क लर्य भुग्नती ও न्लित निमनी।। फूलित कियाति ছिन वाताछ।

উপরে। ভূমণ করিতে চলে হরিষ অন্তরে ।। নান। বিধ ফুল টবে টবে শোভা পায়। সৌরভেতে বির-रित्र প্রাণ যায় যায় ॥ भाहिनी जुलिया **लिल गलि**-कात्र मान। (मेरे इंटन शक्तान अशांतिन वान ॥ च-স্তরেং আরু বিলম্ব শাসয় ৷ মৃথেতে বাধ্য় লাজ कु कि नाहि कय ।। वित्ययण अतिवर्छ इस नाई याना। वृच्छितात धर्म इटद यदन छ। दव वाना॥ भमरनरङ जात जात याँथि ভाসে नीता। मुन्नतीरक বারে২ চেয়ে দেখে ফিরে॥ অই মত সুকরে। মো-হিনী পানে চায়। স্থীগণে ভাবেতে ব্রিয়া হাসে তায়।। চক্রমালা নামে দখী চত্রার শেষ। যো-हिनौत निकटी कहिए मरिएमय ॥ बाह (क्य চিন্তাদল আইল যামিনী। চলগো মিথুন করি ও यालन। खड पिन रेहन रिहा जिनात जिनन।। छाय-न। कि जात सात मुन्दती महाय । यजः পत मृत्य थाक भिनिया (एँ। होया। भारता महहती गाज (एँ८थ मुथी हरे। ज्ञि ज अवी गा वृत्य (मथ यज करे।। अरे कें श्रमातीत्क करह मधी केंछ । पिवाकत्र चरछ চলে महंद्री आगउ ॥ পुनक्टि পরি পুর্গ মন স্বাকার। ভাষায় রচিল গ্রন্থ জীকালীসমার।।

অথ মনোকোহিনীর বাসর সজা।। আদ্য যমক।। প্রার ।।

প্রভাকর প্রভাকর অস্তে কৈল ভর ৷ তৎপর২ স্থী সাজাতে বাসর ॥ চিত্রে চিত্রে বিচিত্রে থচিত टेकन रशर्। करत करत्र चारशाञ्जन चानि रमस कर्।। जन्। जन्मा अरथ पिया जन्मिका क्रीपिन । जीप जीप-নীতে যেন নামিয়া বসিল।। নানা রকে নানারকে का फ़ (क हा चारन । था है। दन था है। दन यथा मानास (यथारम् ॥ यक्यक सक कति वानत त्यानाय। पिवा ক্রে দিব্যক্রে যেন ব্সি তার্ ৷৷ সরস সরস ভরে माजाइन घड़ी। ठूनर ठेनाठेन वाद्य घड़ी घड़ी॥ দেয়ালে দেয়ালে সাজ দেয়াল গিরিতে। আর আরশিতে শোভে তার ভিতে ভিতে ॥ স্ফুল্ল২ গুড় আনিয়া নাজার। যায় যায় বিরহির প্রাণ ছেত্তে কায়।। মধুমধুকলি কুলে পূৰ্ন্তিত দেথিয়া। মধুকরে নধু করে পান তাহে গিয়া ।। ভঞ্জে ভঞ্জে श्रनदात मकत्रक थारम। कागिनी कागिनी कृत मी-রভে বিনাশে।। মালতী মালতী সধী তুলি ভচ্ছ করে। যুব যুবভীর তরে রাথে থরে থরে।। থোদ थामशाति कति यानि छन् नाना । शूत शूत्रमत रिक्न माजारेश याना ॥ बत्नात्य । हिनीत बत्ना-

(माहिनीत उत्ता मशक मशक शार्क (कर तात्य ঘরে। ক্মকুম কন্ত্রী আতর কে রাখিল। বাস वाम (शद्य यात्र वात्माप कतिन।) (मट्छ (मट्छ মথমল করিল বিছাই। আল করে আল করে কেই ठाँ है ठाँ है।। विवश्ति विन श्रावि विव जारह यास। कात कात्रथाना (ज्द हेळ (भाह शाय !! छळ नृर्य) চত मुर्य। यि दामनारे। जाति जावी च्छ वर्खनात (इन नाइ)। (मर्क्क (मरक्र एक फेखन विकानात সাজে। বড়মতা বড়মতা যতা। হানে বাজে।। সপ্ত-ষরা সপ্তষরাশহে বাদ্যকরে। নুর সুর শুনি নুক হয় चर्लालदा। वीना विनाइया गाम लक्ष्य नारम । বীণা বিনা ছেন সুর কোন যত্তে লাগে॥ তানপূরা **छान**्रता मूमधुत त्रद्य,! शास्त्र शास्त्र वास्त्र खन সবে।। সারক্ষারক্ষেই সক্ষেদের দুর। তার তার सकादि उक्त म्वामुद्र । घन घन घन आध दाकि-ছেম্দকে। সেতারে নে তারে বাজে তার নঙ্ मद्या। পর পরস্পার স্থা অন্য সাজ করে। করে क्रिक करत्र आरमाञ्चन हर्ष ख्रत ।। विख् छ विख् छ মধ্যেরাথে তাকিয়ায়। পাশে পাশে গোলাব চুলা-त लाएक जाया। गक्त गक्तवर मर कि मिरक कृ हिएह। कान कान वको नाइ का बाबा के विटक् ।। हेटव हेटव

कृत मंत्र हरा (प्रयुग्। य निहाद (करन हात्र कृत मान श्रां।। मृतं द्व मृतं व्वत वर्ष (करन मंग्रां) करत। काम कामनाय चाहा नावाय खल्दा। कान कान वमल जाहार जे देज मान। निमाक दा निमा करत पिरात श्रांका। श्रमा श्रमामादा माकाः या मन्दित। এक शक मकरन उ बाहेन वाहित। या मन्दित। এक शक मकरन उ बाहेन वाहित। मृन्दती मृन्दती (मर्क वांनय। यथारन। माहिनी धम्पहिनी श्रांय हारह जात वारन।। खानि बानि हर्य करम (महेथारन याय। मह महहती (मारह है कि न वृत्राय।। जाव जात करहर (प्रक्र ह (माहास।।

व्यथ मटना द्या हिनी त (यण विन्तान।
कवावनी इन्हा। महहती लाद (या हिनी न द्या। कृषिकवावनी इन्हा। महहती लाद (या हिनी न द्या। कृषिकवाद क्रिन हिना । है। इत हिकूत व्या हिना ।
क्षणी किनि (वणी विनाद मिना। (थाला वाकि पिया)
मतम काय। यान की माना या विन जाय।। (हत्त्र
नाहि व्याधि किति छ हाय। यम दनत काम (लाद क्रिन वाद ।। (या हन किति वाम वान क्रिन वाम क्रिन मानि वाद ।। या काम या नित्रि का का पान क्रिन या किति ।
किनिया विना मुकू । का जि।। कान (तथा का त्या का त्या का वाद ।।
का नित्रि का वाद । सुयत क्रिन मिना मिन हम का हम।
वाद वाद का वाद । सुयत क्रिन मिना मिन हम।
वाद वाद का वाद । सुयत क्रिन मिना मिन हम।

करनवत्र माजि शानाथ जला रंगन कथन कि है शला। इतित्र इतिन भन्नव याम् । युवक (इतिदन की-वरन यास ॥ हिन्न १ कि छि हीतात मिथी। कि छि **जूदन (इति यादात वीशी।। बानदाटा जा** हि वा-श्विन जारा। जद्रारम विक्रानि हमस्य काम् ॥ स्वारम কাণবালা বোঁদার শোভা। মুনি মন অবলোকনে লোভা।। ঝমকে ঝুমকা ভাহরে কোলে । ভড়িত क फ़िত कानत (काटन ॥ नामाय ननक नत्थ्व घटें।। विवितिद्य (कवा छ। हात छ। ॥ सन्दर्भ मृनिष्ड কল। প্রভাকর প্রভাকরিছে তল।। গলায় দোলায় হীরক হার।বলিহারি কিবাপোভ।তাহার।। চিক মিক তাহে জলিছে চিক : সে না হেরে ভার নয়নে थिक।। भीन भरदाध्दत काँ हिल करव। त्रिमक नित्रिध ष्यवन ब्रह्म ।। सन चथालार म निष्कृ होरत । (ह्रि-(न नय़न चात कि किरत।। अमरनत तुबि (महे (म थन। नटह किन वान करत किना।। हानिर मधी पति-या करत । भन्नाइन वाज्यू वाज्यु छ भरत ॥ त्यानाइन बाँ ना जाहात भाषा । पनमन क्रित प्रनिया भाषा। হিরণ্য বাঁউড়ী পরায় ভায়। হিরণ্যরেভার ভাতি-র প্রায়। কন্ধণ শোভায় মাঝেতে তায়। ঝকারে जुमन अमन यास ।। श्रीतक (थापि उ माहिल वाना।

स्म कर्ण कारमत कामिमी काला ॥ एक शाद एक शाद माजाय। निजय जेणदा मधी शताय।। एत्र कमला मृशूत मा**र्जा। वा**मत वामत वामत वार्जा। नाती (वर्ण ज्ञिनां मात्र ताय। नित्र थिया क्रिंग खर्ण काय।। क्रीकां मात्र शिया क्या। क्रिंग व्यव्ण किश्ना त्या।

व्यथ (माश्नीत महिज मदनाश्द्रत मान। वमन। পয়ার।। বিভূষিতা হ্য়ে পরে বসনে ভ্যণে। পাল-(क्रविमन वामि गर्जिक गमरम।। मुन्दि नर्स পরে যত সহচরী। নারীবেশ ছাড়াইয়া যুব দিল করি।। অপৰূপ হৈল ৰূপ কত কব তার। ছেরিয়া मधीत गटन बानम् चलात ॥ प्रताज कति माज श्वतक जानिया। (याहिनी निकार देवान शानिया श्निश्रा। अनखद नथी कदा थाम् आरशाजन। নাগর নাগরী নুথে করিবে ভেজেন।৷ থাজা গজা জিলাপি কড়রি আর পুরি। আনি রাথে সুবরণ থালা পুরিই।। মৃতিয়া মোহনভোগ মণ্ডা মৃতি-**চূর। সৌরভে আ**যোদ কৈল একবারে পুর ।। বরকি वामाभ তक्कि वॅमिय़। मृम्पत । तमाय तमना ইচ্ছा करत शूत्रकत ।। मूखी वित्रथ खी तमकृ ि तमहुता। পানতোয়া ষেওর নিশুতি আর পুয়া।। টাটবাপি

वानुमाई जुन (पिटल नाई। ছেনাবড়। রम कর। রদের भिठाई ॥ द्राञानि की द्रव (अंडा भारक भारक खद्रा। माञ्जाहेद्रा दिन मद खांका भरनाहद्रा । वा निन नदा उ ७ न। शिष्ट्रि भार्थन । क्ष न भारि की त চিনি রাথে কোন জন।। দ্বিদ্ধ ছে না নঃ কেছ (याशाइन: याहात (मोत्र छ खरत खरन हाहेन।। र्त्री उकी यामनकी यापि नाना करन । नाजाईन भातवाश मिन्नी मकत्व ॥ चाम काम की है। न প্রিকল মনোহর। কিশমিশ পিচু সেউ মেওয়া বছ-उत्र।। वामाम अक्त्र चामि माफिस (असाम । धाना ভরি কোন স্থী আনিয়া যোগায় ৷৷ নেয়া নারি-কেলে চিনি মিশাইয়া দিল। সর্বত নানা নত প্র-প্তত করিল।। কনক গেলাস ভর। সুশীতল জল। হেরিলে মানস ভুলে অতি নিরমল।। পরিপাটী भव जा का देवन बाद्याक्षन। अधिक कि कव बात শুক হয় মন।। বাটা ভরি থিলী করি তাপুল রাখি-न। (ठी अ ज़ि म जित्र हुन जारह मिनाइन । वासम थिपित फल नाना मनालाय । वाहिर ভति कान म किनी (याशाया। मह्का (शंहाडे करन (शानाश छ-विद्या। म्थनल पाल क्ल पिन माञ्जाहेया।। क्लि-का अपूती खता खरनत आधन । हानितन नुकित्व

जाय कल चाट्य छ। ।। माजारय मकन मधी प्व-ब्रांट्स कहा चात्र (कन विलय कत्र र महाणय ॥ भू-थित्र मर्बत्नी (कन विकटन (পाছात्र। मिनन मिथिटन र्म भुनकि उकाम।। वनस्त रामिर मधी ठक्षमाना। रयागाइन (माँशकादत्र मिलकात माना ॥ প्रतिया शनाय जात नर्या चाचान। चान छान करत जारह উভয়ের প্রাণ ।। কহিল রসিক রায় মে।হিনীর প্রতি। প্রাণ দম্ব করে প্রাণপ্রিয়ে রতিপতি॥ অই তব কণ্ঠোপরে হীরকের হার। জনশস্ত স্প্রে যার (राष्ट्र वाहा बा। (पर्यनि (या ब शाल जुलि क्रा)। करता भिव (इंग्रिंग हात (इटन काम पाद उदत्र।। নতুবা হেরদৰতি প্রাণ বুঝি বার। বিচিত যা হয় बदद कत्र इ जुतास ।। निजास यमा शिनाहि कत्र ही-काর। পরিবর্ত লহ্নহে মম কণ্ঠহার।। এতবলি निजयाना नय्य युवबाय। बाजवाना (माहिनीव क-(केटल भनाय ।। त्रभनी व्यमनि शांत्र नागदात गटन। रामियाः खटन फिल अजुरु हा। यदन २ उ उ द्यार या-नच्य च्यथात । (इरत मुधी देहन हिन्छ मक्षिनी मवात ॥ डिखालथा नागदा करिए इल उदा मुम्हि मृम्ह-दौ (भारत जूनितन कि मद्द ॥ ठक्तमान। मूलाहना छाट्ट्र फिल मास्। कर्र अकि छाउ ७८२ तम जास।।

मानत वाफ्टिन वार्ग मर्पार्ड नानती। भूनः गूर-কের বেশ ফে দিয়াছে করি ।। মরিং বেশ বেশ বঙ্ काल (रुम। पत्रमन करत्र (शन नग्रत्न रुम।) मर-**Бती मह बाक्। कह किया नाई। मृत्य थाक काम** बार्ण এই माज ठाই ॥ हाजात मिल्मी क्लि जिन्न विविधि। छनि छ इंड मपा पृश्यक्ष काहिनी।। ভোষা হেন পতি পেয়ে থেদ গেল দুরে ৷ ভবনের भाकारेहन **एउ।** यामि शुरत । यामदा मिनी शर्ग (इरत म्थी इइ । (यागाइद श्रास्त्र पामी वइनइ।। विविविधा विन किछ चछत्व (छम। शृह भामांतरण इस मरन य ए (थम-।। (मारक (मार्) (करत गरव हाताहत्न स्तान। এই मधीगरा कृत्त्र ছिन পति-काण।। अथन कथा हि माज अनियात नाह। काटनत न छ। व (छटव विन हाति याई।। हामिन नागव छनि কথার কৌশল । প্রত্যন্তর দিল ভার করি নান। ছ्न।। বাক্যের মধ্য ছার মোহিনীকে দিয়া। भरमाह्त करह भून हर्गिया हामिया ॥ छन छरह রমবতি বলি বিবরণ। ইঙ্গিতে যতেক কৈল তব मथौति।। जुनि नादी चानि शकि विम अकामान । वाक समाभ (कर् नाहि कदत कात गरन ॥ मर्हती प्रकृति पुःरथ ভाष्म काश । जुमि ए ठजुमा तृद्ध

विठातिया जाया। मधीगा मधी कत ए जिया न ক্ষায়। ছল করি সহচরী কহিছে তোমায়।। বাক্য छनि पूर्वजीत भन भिन हेला। তেজि नाष्क्र युरता-क्ष मध्य थिया वर्षा। कि करिव প्रागनाथ (ভবে रामि পায়। युव मह वाक तालाप यन नाहि हाয়॥ যেহেতু দে পুরুষের পাষাণ স্থদয়। অত্যেতে আদ-त कति (भारम करत क्या। व्यवना भतना नाती इन নাহি জানে । প্রাণ দিয়াণর করে ভেবে মরে প্রাণে।। সেই হেড কথা নাহি কহি রসময়। যে ভয় সর্বদা করি পাছে তাই হয়।। দীপিয়া তোমার করে • নিজ প্রাণ মন। তোমায় পাইব কিনা ভাবি অন্ भग ।। करत्र ভावा ভाল नरह कता ভाল (ভবে। অবিরত ভাবি কাল ভাবিতেছি এবে ৷৷ শুনি বাক্য कहिए यूदक क्षवान् । नात्रीत ममान नटह शूक्ष পাষাণ।। কথায় সরলা অতি কার্য্যে তাহা নয়। এ কের সক্ষেত্র থেকে আরে মন রয় ৷৷ তার মত যথ-न थाक्य यात भागा (म याहेल चरन) भूनः करत चिनाय।। माको जात्र (मथ প্রিয়ে কহি বিবরি-या। बल्मा पत्री नाटम ছिल मनानन প্রিया। वि कु वन कर छल आছिल याहात । (म मतिरल विजे यदग देकन अकीकात ॥ अञ्भव हुन्मानदन नाहि कत

ताय। विठातिया (पश (पथि कात्र इस (पाय।। एनि वाका (माहिनी कहिए भूनतात्र। कहित्न यथार्थ दर्छ ७८२ तमद्राश ।। এक তেজে चात्र कदन मंशि वाद्र मन। युवक एयमन छव् नाती कि एउमन।। अह-মত কত রাজ নন্দিনী কহিল। যুবরাজ পুনঃ তার প্রত্যুত্তর দিল।। উভয়ের বাক্য শুনি স্থীগণে কয়। वृत्विट् नाविन् (यात्रा अस श्राक्ष ।। मुल्लाहना करइ जान इरेरव छेरमण। (अमनजा चामारमञ् প্রেমিকের শেষ !৷ জিজ্ঞাদিলে ইছার মীমাণমা ভাল হবে। তারে ডাক দোয গুণ বিচারিয়। কবে ॥ প্রভাতে কানন হৈতে পুরী প্রবেশিতে। প্রেমলত। गर्ठती नाथाय आमित्छ।। यह गथी मका कति वा-হিরে রহিল। এত বলি সুলোচনা ডাকিতে চলিল।। चिषानिका देइएउ नामि याईशा वाहिएत। (अपनठा मह भूनः चारम शीरत शीरत।। हारत अरव मिरक हाती নাহি ছাত্তে তায়। সুলোচনা বুঝাইল কপট ছলা-य।। गुन्मती देशात नाम खन अरह बादि। मधी कति-विन এরে রাজার क्रमाती।। धर्माट निश्वा वाजि करमं विनक्त। शक्ष मथी छिनु (माता दिन् छ स जन।। এতেক শুনিয়া দারী দার ছেড়ে দিল ৷ হর্ষিত মনে (मार्ड भूरत अरविमन।। (या हिनीत मिन्दत इड्न

के पर्ना । (इति बन् मथी माद रिव शून कि ।। যুব যুব তীর কৌশলের বিবরণ। জ্ঞাত হৈল প্রেম लका मधीत मन्ना। अक महत्ती विमामात्न तका-नाइ। जाइ। उ इहेन भक्ष मथी अक ठाई।। युनद्रादक मत्याधिया (अभनेजा कया। कि (मार्थ नातौ कि पिटन कर् बर्गम्य।। भरनार्व रामिकदर् अन मरुद्धि। व्यधिका क्रिनों व भूग मुळे क्रिया अपय क्रिन षात अदक नटह छित । अहे पृष्टे (पाट्य निन्मा करि द्रम-শীর।। শুনি যুবকের বাণী বলে প্রেমলতা। কোন नाती कर पृष्टे भुक्र वर्ष के उन्हाशीना मह कारन এক মাত্র গভি। পতির মরণ সহ মরয় য়ৄয়তী।! अन्। अन्त अভिनायी कमालि ना इया (य इय जा-श्दर लादक दाताक्रमा क्या। किन्छ (पथ शुक्य कतिल एक नाती। कृषण ना इस कारह अनुदान जाती।। का एकर वार्फ् जारह छेदमाह युवात। এक रकुरफ़ चादत लग्न चात्र (क्रफ़ चात्र।। मृक्कोल छार्।त এক দেখা নধুকরে। পদ্মিনী তেজিয়া পুঞ্জে মধু পান করে ৷৷ তেজি গৃজে গৃজে পুনঃ মালতীর शारमा आद्रवाद जात कुला (श्रास श्रास जारमा। किन्छ (महे क्मनिनी चापि शृह्व हरा। चिन (उकि कथन कि चार्त्रात् का हया। चात रमथ सप्यूनमावर्न

য° শীধারী। হ্রিলেন বৃক্তানুরাজার জ্যারী। ब्रायार जिस मुद्ध माहि जिल शाम । अन् नादी পেয়ে শেষে তারে নাহি চান।। জীবন যৌবন যেই रेकन ममर्गन। म्राम कलकिनी नाम तारथ मक्कन।। ছরি পরিছরিবারে তবু কি পারিল। শত বদ বিচ্ছে-माटल की वटन महिला। १भई इब्रि खाल भं छ यहै माजी (পरम। अमन जापाद (श्राय नारम्थिन (हरम् ॥ অতএব বিচারিয়া দেখ মহাশ্র ৷ ঘ্রক ঘ্রতী भर्षा (कदा (मार्गी रहा। अनिहा मधीत बाका मृत-मिक द्राया नत्नर अग॰ना कविन वङ् जाया। वाह-রেতে তদ্তর দিল তার মত ! বিস্তার করিয়া তাহা-কেবা কবে কভ।। প্রেমলভা বাক্য শুনি আর স্থী शरा। भूनकि उ एदा करह युवान ममरन।। नाती मह विচারেতে হারি হৈল তব। লাজে মরি সহচরী (यात्र। कठ कर ।। जाय कट्ट कायिनी क किन। यात्र হারি। পদে২ আজ্ঞাকারী ত্রন্ধা ত্রিপুরারি ।। শক্তি ৰূপা যুবতীর শক্তিতে কে পারে। শক্তি ছেড়ে শিব विष विषेठ मःभादा। व्यवना वनाश विष्ठ वन-বঙা নারী। তার কাছে হারি ভিন্ন কিবা সাধ্য शाति ॥ मधी करह हाति यां प कतिदल स्रोकात । कह किया आभारमद्र मिटव शुत्रकात ॥ द्वारा कटर अटम-

শের রীতি মন্দ নয়। কথায় বাড়িল কথা কাজে কৈতে হয়।। বিচারে জিনিল যেবা এড়াইল সেই। পুরস্কার দিবে বৃঝি হারিয়াছে যেই।। নৃপ নিদ-নীর কোটি রহিল বজায়। দিতে হবে ইথে পারি-তোষিক তাঁহায় ৷ সেই সলে আমিও কিঞ্চিত পেতে পারি। যে হেত্দে স্থা কৈল রাজার জ্মা-ती। यनार नथीगरन यमि इहा शाहा । साद्र कि बदनाटमाहिनी (ठेनिटवन भाग्ना। (जामता श्रवीना স্থী পাইয়াজ্ কত ! আমি হই নব স্থী পাব ভাল মত।। (প্রমলত। কহিল নাগর গুণমনি। এবে ত ভোনার বেশ না হয়রমণী ৷৷ সাজিয়াছ সৃন্দর পুৰুষ পূৰ্ষমত। তবে কেন স্থা স্থা কহ্ অবিরত।। विद्रम्य (माहिनो इं उ नहेंगा इ इति। बात किया अन চাহ ছিছি লাজে মরি।। নাগর কহিল আর চাহি छात्र मन। दामना शृतारम मुर्थ क्रिट्ड यालन ॥ अरेक्श भूरथर उक्रिन वच्छत । अस्त मस्ट रेवन भथौत डेलत ॥ প্रकामि मत्नत (छम मधीगर। वरन। जुडे रेश्नु जाभारमत्र कथात कोमला।। कहिए बर्याग्रकथा कि ख वामिक है। मकर लात श्न छाटन शति ठिउ नहे।। छेशयुक श्न युद्ध पिव পুরস্কার। সেই হেত পরিচয় চাহি স্বাকার ॥

সথী কহে জিজ্ঞাসিলে তবু সুথী হই । বিশেষিয়া শুন তকে বিবরণ কই । শ্রীকালী জমার কহে যুব-রাজ ভাই। পরিচয় দিলে যেন আমি কিছুপাই।। অথ সথীগণের মনোহরের সিকট পরিচয়।।

পরার।। যুবরাজে নলোপিয়া মথীগণে কয়। পরিচয় জিজাসিলে শুন সহাশয় ৷৷ একে একে मकरल कि इव विवत्रभाष्य (ययन जन वुक खिम वि-हक्षना। এত বলি কহিতে লাভিল हळ्याला। व्यामि घटनाटमाहिनीत (शंट्य भिहे बाला ॥ (म মাল। পরিলে গলে হারে চল্রমালা। সেই ছেতু-नाम (नात रेहल हळनाना ॥ हिजदलधा करह (मात নাম চিত্রলেখা। কলা মোর ভরনেতে করি **চিত্র লেখা।। বি**চিত্র লে চিত্র চিত্রকরে মানে হারি। চিত্তদৃঃথ দুরে যায় যে চিত্র নেহারি।। হাসিং প্রেমলতা কছে ভার পর। প্রেমলতা নাম মোর প্রেমেতে তৎপর।। যে জন সন্যাদী হয়ে ছেডেছে यावाम। यपि पिट्रे (अभिका करत जाथि मानारा यानजी किह्न नाम मानजी आभात । विमाहेरज পারি ভাল মালতীর হার!৷ অপরুপ দে হারের শোভা যে নেহারে। কুল মান মন প্রাণ আদি জেনে

श्रादा । अनिया मवात वाका मूलाहना कया मूला हना नाम भात खन यहान्य।। मुलाहरन वक वात চাহি যার পানে। প্রেমিক যদ্যপি হয় পড়ে সেই বাণে।। কটাফ ভাহার আথ্যা কটাফে প্রলয়। जि जुवन याहात मकारन मछ हवा। यनछत नथीमरव करक क्षि क्षि। এই পঞ্জन রাজন निनी त पानी।। निक्छन मवात अ नगत ভिতর। नानादिश कर्या-তে নিপুণ নিরন্তর।। ভিন ভিন জাতি মোরা হই পরস্পর। কমেং কহি তাহা শুন যুববর।। এই চন্দ্র-· भान†हेनि भानाकत रथ्। अञ्चकारन हाताहेन निक প্রাণবঁধু। ভরা পূরা যৌবন কেকরে মধু পান। वश्कत छेर ए (गन युक्त (इस्न दान।। मई मा अमुरथ यात्र (उँह (म है होत । मजुवा अहम क्रम थुक्त (सन) ভाর।। न। चारम अयन कर्या ना रहित नयरन। दिरण-यक (याग्र) क्षेमानात श्रञ्जला। हिजल्या मधी গদ্বণিকের বালা। পতির বিষয়ে এঁর পূর্মত জ্বালা।। যুবতী জনম কালা একে পরাধীন। পরের वमन (इति काट्डे हित्रिमन।। खतु थाटक मनः मृत्थ ভেবে পূর্বাপর। ফাঁপর ছেরয় যেই বিহীন সে পর।। চিত্ত দুঃথে চিত্রলেখা পুড়ে মরে তাই । চত্রা ই হার সম ধরাতলে নাই।। প্রেমলত। সথী এঁর

চিররোগী পতি। প্রেম শিক্ষা করি আর দিওণ पूर्वा जा। ना खती व ना गती हैं शदत लाटक क्या। থেকে পতি রাখিয়া সদ্ধে দুঃধে রয়।। সর্ব কলে স্নিপুণা মুখে যিষ্ঠ ভাগ। গ্রেম ছলে প্রেমিকে করিতে পারে দাস ।। গোহালিনা জাতি নাম যাহার মালতী। যৌবনের উদ্দেশেতে নিক্দেশ পতি॥ क्राप्त ७८० निक्ष भागा (स्थ विन्यमान्। (थटक नाथ कवाशिनी तट्ड विश्वभाष । चात अहे म्टना-हमा इस यात नाम! विमारमाहय वाय देश एक शिक रिकल वाम ॥ शान ভाव एन दल माना दिन आटम। চন্দ্র কাৰে কাঁদ পাতিয়া আকাশে ৷৷ আঁথির পলকে মজে কামের কামিনী। তত্র গত্র জানে বহু জাতি নাপিতিনী ৷৷ পরিচয় কহিলান যেই রূপ যিনি। কিন্ত যোগা সকলেই চির বিরহিণী।। সেই হেতু এক ঠাই মবে ছিনু দাসী। ভালবামে রাজ-वाना भारता छ। नवामि॥ वुबि व। ए युवराज अभि এথা আসি। দূরে যায় আমাদের ভালবাসা বাসি।। যেহেতু হে তুমি হৈলে ভালবাস। তার। তিনি পুনঃ সেইৰূপ নিকটে তোমার ৷৷ আর কি মনোলোছিনী मुषाद्य अमृद्य । निष्क ভानवामा नहा भनाभनि र्दि ॥ आगता जाहाट कि कू निह (थनानि, छ।

'বরঞ্ অন্তরে আর হব পুলকিত।। তবে কিনা পূর্ব-কার ভাব যাবে দূরে। অই থেদে কভু কভ্ মরিব (इ बुद्र ॥ ठाव्यत कन्डात छिन चाहेव छन्ना। ভোষা হেন পতি পেয়ে সুথী হৈল বালা।। অগ্রে थनी आश्रीन ছिल्लन विव्वहिनी। उँहे विव्वहिनी जाल-বাসিতেন তিনি।। এবে সে বিরহ জ্বালা বিধি কৈল मृत्र। नुत्थ तत्व ठाव्यतानी नहेशा ठाव्यता। (महे नत्क् चामता नित्र थि मूथी एहे। विलिए कहिएल जाहे এক্ত ভেঙ্কে কই।। যাহ্য় সেহবে পরে এখন সবার। मिह पिथि युवा किवा पिह शूबकाव ॥ बाह्य वदन দেহ পুরস্কার দিলে পরে। তোমাদের উপকার (करा (भाष करत्र ।। यज्ञत (माहिनी त्रजु मिनातन আমায়। সে ভণে রহিনু ঋণী থাকিতে একায়।। মন বৃঞাইতে তবু কিবা দিব আর। এত বলি নানা बजु किन शुबकाता। कानी करह य्वताक ठक्नका नाई। जामि अउ दरक मित्र नटर् अक शाई।।

অথ মনোংলাছিনীর সহিত মনোহরের নিলাস সূচনা।

পয়ার।। नथी मदে আনন্দিত হয়ে অনন্তর। আপনং কার্য্যে হইল তৎপর।। ফুলের ব্যক্তন করে লয়ে
কোন জন। যুব যুবতীর অব্দে করয় ব্যক্তন।। আ-

छत्र (गानाभ हुदा मृगिक हन्द्रन। (माञ्चाकात करन-বরে করে সমপণ।। প্রফুল ফুলের গুচ্ছ কেহ বা আ-निन। ज्नारक गूरात मन यूर ठी कि मिन।। कान স্থী অষুরী ভরিয়া কলিকায়। পেঁচাও কলেতে দিয়া আনতক যোগাল ।৷ নব মলিকার মালা लस्य हन्स् भाला। नागतीय गरन पिन मृत्नाञ्चिन ভाना।। नागत (हिन्ना जोश वरन जान जान। हक्त भाग हन्म, मुथ काद फिल थान ।। कि छ এक कथा गत्न इहेन छेम्य। यनिए छेहिछ नएह ना यनिएन নয়।। সাজাইলে আপনায় ঠাকর কন্যায়। আমি ইংথে ব্ঞিত হইনু একি ন্যার ৷৷ হেলে চলে প্রেমল-ত। गान जीदक करा । এ बाद कियन कथा शिन जिल-জয়।। যে রতনে স্যতনে সাজাইনু করে। সৈ রতন সম্পুদান কৈন্ যুববরে । তথাপি তাহার বাক্য শুন আরবার। যার ধনে সাজাইব তার মন ভার।। म् लाहना करर ভाल केटल न रहि । शुक्र यह रहन কথা ছিছি লাজে মরি।। যার লাগি চুরি করি। স कहित्व (ठात । कव कि मत्रम (थट्स हामि शास भात ॥ नाष्क्र मूथ कफ़ मफ़ इहेन यूवात । एन वाक। छे भयुक नाष्ट्रित आभात ॥ वित्नापिनी देरथ পাছে করে অভিমান। মনে২ এইরাণ করে অন-

মান।। ভাব বুঝে নৃপবালা তেয়াগিয়া লাজে। र्ट्सिट क्रिंड नागिन युवदारक ॥ अकि धनि প্রাণ নাথ অপরূপ বাণী। মোর কণ্ঠে মালা দেখে জলে তব প্রাণী। তিবে ত তোমার সঙ্গে প্রেম করা नय। कि जानि कि पार्य कान पिट्न किया इय।। অবলা সরলা ভাল মন্দ নাহি জানি।কে ব্ৰিবে कान कर्ष्य इरव उव शानि।। পाएन कि वियय कांश রে অবশেষ। এই বেলা ভাবিয়া করিলে কর্ম বেশা। অপ্রতিভ হইয়া রলিক যুবরায়। দোষ টেকে সমা-मदर कद्र नाशिकाश । कमाकद थिएश यमि थारक অপরাধ। তোমার সুসাজে মোর বাড়ে আর সাধ।। তবে যেবলেছি হেন গুনতার মর্ম।বিচারি-য়া রোষ কর। উপযুক্ত কর্মা মোর বাক্য শুনে তব হবে অভিমান। অই কণ্ঠমালা তাহে মোরে দিবে मान ॥ তव कर्रगाना कर्रे পরিব যতনে। (छँ रे रहन क्रिशा क्रि भ्रम्भग्रम ।। मकत्न मलु हे रेश्न खिनिः या वहना यानत्म मधन युव युवजीत मन ॥ अदक ত বসত তাহে ফ্লের আঘ্। १। চঞ্চল হইল তাহে छे छ एय व প्राप्ता मधी भरि न्भवाना क हिन इकि-তে। সবে মেলি গীতবাদ্য আরম্ভ করিতে।। আজ্ঞা (शर्य इतिरम्भगन मधीगा। नाना यख भिनाइँया

বাষে ততকণ।। তানপুরা বাদিল পঞ্ম সুর ভরে। यात्र मूत्र छटन नृक र्य मृत्र नदत् ।। मिछादत् बाकात्र দেয় কেহ দক্ষে ভার: বাহা সুরে বীণা যন্ত্র করেতে কাছার।। তাল মান সুদক্ষেত রাথে বার বার। ই-गन्छ তাহাতে গায় বনও বাহার ।। আলাপ করিয়া षारम उपरवंत जान। एम जान खनितन नाहि तरह জলমান।। যত্তে২ তার সত্ সিলিছে সূর্বে। সেরব क्षिति कर्छ (कवा घरत ब्रह्म ।। विद्या भिन्न विवस যত্তপা বাড়ে ভায়। ভুলায় মুনির নন অন্যকে কে। थाया। जान मान तारगद महिल खनि गान। नागत **নাগরী দোঁছে করে আন্** চান্। খুবর্তীর করে **ধরি** युवजाक कथा भन्न (वपन धनि छ। १५ न। हि स्या। মোহিনী তাহাতে নাহি উতর করিল। স্মতির লকণাদি মৌেতে বুঝিল।। নাধিবারে কাম যাগ वाड यूवदाय। जाव (मध्य यज (त्रध्य मधीत। भना-य। जीकानीक्यात करइ मरनाइत छाई। विष्ठू कानगाज कत्र यागि ७ शनाहै॥

অথ মনোমোহিনীর সহিত মনোহরের সংখান। ভুজন্ধ প্রয়তে।। অনকে তরকে যুবা ভাষে রকে। সুখোনাত চিত্তে যুবতীর সঙ্গো বিবস্ত করে ঘতে পত্যীর অংক।

क्त ब्रा धरत त्रेमणी चाउरक ।। উनटक नरवाए। मत्-মেতে ঘামে। থর থর থর থর কাঁপে অহ কামে।। মুথে বাক্যকৈতে বাধে লাজ ভারে। কত কৈল माना भाकादा श्रकादा ॥ निजान भवाध। (मध्य স্বীয় নাথে। একান্তে সে কান্তে কছে ভক্তি সাথে।। হে বিজ্ঞ প্রেমজ্ঞ প্রিয় প্রাণ ভর্তা। এ ভার্য্যের कार्या जिम नाथ कर्छ।। समर् सरेया किन रहन रेह्रा कि नुडा अख्दा कारक वन कितन ॥ (इ कांख (र भांख कत्र (भारत तरका भारतान) कता জाর नार्वीत भटका। (म दाक्त उपभा करत वय-ं गीत। मृतक् अमारक् किर्डिष्ट् शीत।। कि जन। ह ধন্য ধরেশ সমারি। ভয়ার্ভ ও চিত্ত হতেছে তো-गाति ॥ व कत्यंत्र यथं नत्वाहः। नाङ्गात्म। इत्थ জোর ভিন্ন সূথ নাহি মানে ।। অনতে নিজ।কে निज (भाष्ट्रिनीदत्र। श्रमं अवगाह्दन (श्रमनीदत्र।। मुर्याभा तमछ निकारमा महारमा। हुहूक हुत्व यूव जीत चात्मा। कि मेखु मीर्स यता शक्र इस्छ। थनो करम्भ चरक करत्र थरत जरख।। विनरस सकारख किरिष्ट म्वीदा। नथावाद वक्क किलिए कि विदा।। करूना करना ४रना (र জात्र। अकार्यं) कि कार्यं কর রক্ষা মোরে।। নিতাত অশাত হয়ে থাক কান্ত।

श्रम् मृकृष्म कर िए नाए ॥ अरक उ काकृ स तम होना चामि। नदह विन्तू माज मुथ शादि याचि॥ दह शृक्त सरिपा अरु १६ कि जना। अनाती जानाति विना नदह चना ॥ नदह चना तक हत्व चात वादत। दहनाथ दह वदका श्रेतानि (जानादत।। स्टब्न वाका जार्या करह तात तदह । विमोर्क करत दन। यन दह अ चरक। जन कर करन वह दनन दन्य तक। यन दह अ

्वरह भाष्य चन्ना महातमा ७ व्यामा म्या रम्ह स्नाद्व। किन्नहरूका विना याहा स्वाद्व॥ প্রেমাঞ্রোথ লো যভনে। স্রস্থ ছাড়লো কুরস্থ-नग्रद्या जम्दा जरूनी ख्वर्य क्रिमा थायल माज-वनिनी दिविता। विषय अवस्था पार्व निक्त कारका। नवाकी क्रभाकी जड़मङ नाएक ॥ बिउट्स निउद বিনা অবলবো অনক প্রভাবে পড়ে অবিলবে।! याघाटा यनकात यकात नाटक। इन् यन् इन् यन् क्रु कृत वाद्या। कदा उन मर्पन निन्म पाड़ित्त । घटन घन हुमन अध्व विष्य।। कटम. मृथिमिकु मिलिला थनावा थानमा व्यापा पिहाकात काव ॥ चकाः र्या (भवाटि डेटरे देवटम जाय । वटर चाम मीर्थ शकि-শুম पाया। मनब्किछ। नागती नागत हाटम । পরে

উठिया थनी शिन्सन वादन ॥ कट्ट विक कानी युव चूवजीदत । विन त्व कि कार्य (फाँट्ट याह नीदत ॥ चथ मदनाहदत्र প্রতি মবনাदगाहिनीत मान॥

मीर्घ **७ क्र विभन्ते ।।** ति उद्य मृत्य रेहन माय, উঠিয়া রসিকা রসরায়। বদিল পালজোপরে, জিনিরতি পঞ্চশরে, চন্দ্। আলে চামর দুলায়।। हिजलधा (यागाइन कन, मृगीउन बक्त क क्वन । शाउ गुथ अकालन, रेकल जारह पूरे छन, यखरतत्र निविन चनन।। (अयन क। नर्हती काय, थान। कव। षानिया (याशाय। कोत्र हिनि नातित्कन, मिছति ' साथन (वनः चापिकति (नीट्स् मृत्थ याद्या। कनक श्नाम ভর। জनः कपूत वानि उ मुविधन। भानः छ। का निया পরে: पिन पिंश्काর করে। পান করে र्यं क् कृत्न ॥ कशृतकाईकि आपि भारतः (हाडे (छाडे विका (वैद्ध घाटन। मुल्लाहन। महहती, भृगुर হাস্যকরি: রাথে উভয়ের বিদ্যমানে॥ ছেরিয়া রসিক রায় তার, আপনি কিঞ্চিত থায় আর। যুব-जीत विचायदा, चकरत याज्य थरत, त्थ्राम भून्छ হয়ে বার বার।। কলিক। স্রঞ্ করা করা, অখ্রী आছिन खरा खरा। महेका (लंडा अ करन, पारन क्न मुथनदन, मधी चानि (याशाहेन कुदा।। इन्दन

(गालाव हुयाछत्र, पिया (पाँट् क्रि पिन छत्र। यूव-इ। ज मर् जाया। श्वरकं शृष्टिं काया, राम जाय ক হে বহুতর।। ভাব হেরে স্থীগণে কয়, ভাল হে नदीन तमस्य । श्वष्टा तमनी (श्राय, रमश्र दा नो (मश्र চেয়ে দুটা কথা শিথাইতে হয় ৷৷ তরণী সমান হয় নারী, যুব তাহে যেখন কাগুরো। মুবাতালে দিবে পালি, ব্ৰিয়া ধরিতা হালি, সে ভরি ভরিৰে ভবে বারিয়া তোমাদের হেরি গোঁহাকারে, পড়িয়াছ (सोयन शांजादत। नतीन का छात्री जाग्न, जिस्ह इमिक तात्र, प्रथ এक गाविकत चारत ॥ (अभभरथ चावज अध्वक, माद्यान धूर (वध छेक। अनाशाटम য়দি পার, পাড়ি জমাই: ও পার, সুধরাজ্যে হবে অভিষেক।। বিস্তর ভাগান হ্থে ভার্চ জোর বেগে ममावरह वास। यमि बन एहंक एका हो, ছिড़िद প্রণয় ডোরী, শেষেতে করিবে হার হার।। শুনিয়া युवक (इरम कय्न, कहित्न यथार्थ नम् नय। काखाती नरीन रतन, जरी कि जुवाय छातन, यपि जूरव मक-लिए नर्।। एन ज्दा दिल्लिय्। कई, यानि जार् यन जिडा नहे। जतरक প ज़िला जिति विंदक मिर्य পার করি, না ডরি উজান বেগে বই ৷৷ নাগরের 🤔 निया कोणन, नागती ভाবেতে एन एन। यन छ

कत्रिमधौगत्म, करह धनी उठकात्म, कि कहिरन প্রাণের সমল।। বিনা মূলে ও যুগল পায়, কিণিয়া রাখিলে প্রাণ কায়। আমি তব কেণা দাসী, এই ভালবাস। বাসি, চিরদিন রেথ রসরায়।। ত্থি হে (প্রমিক গুণবান, দেখে দেহ তরী কৈনু দান। কথা-य़ किह्दल यक, भिष (यन थाक उक, इंड नाहि কর এত মান।। রায় বলে কেন পুনর্বার, বিপরীত ভাৰ ইথে আর। থাকিতে দেহে জীবন, অন্যাত कमाठन, नारुइटव कथात आभात॥ जुनि माज मतन রেথ দানে- অনুগত আছি তব পাশে। অবলার কত ভাব, না ভাবিও ভিন্নভাব, শেষে যেন শজ্ ं नाहि शाष्ट्रा। এই क्ष कथा हर, तक नीत अर्घा छ । भ गास । निकास ययम कासा । कारन उनहेसा जासा युवबाक (भवाक (शाष्ट्राय।। निमानाथ चंडाहत्व চলে পিক গণে কুছ্২ বলে। উঠিল নাগর রায়, नागर्ती मुनिष्। यायः (इतिया चनव्य चक्र देवा।। আর্ডিল প্নঃকাম যাগ্য বাড়িল সুথের অনুরাগ। शृबंगठ প্রাণ পাণে, দ্বনাদি আলিক্সে, সাক কৈল ति तक ताथ ।। উठिन तिमिक हु प्रायित, मनक्किन। त्रमणी चमनि। चाजिशा वाहित्त धादतः भगता (मिथि ल रिस्ट्र छेम्स इट्रस्क जिन्म थि।। लाज बात विख्य

युवायः, पत्रण्य कृत्य शृद्ध श्राद्ध शिवा । समृत्यदे युवायः, पत्रण्य कृति छायः, व्यक्तियाः पत्रण्य कृति । निष्ठाय विद्यायः (भारतः (भारतः, ना एपितः । ध्या शाद्ध विद्याः व्यक्त्यं कृताः, पृणायः शृद्धिः विद्याः (क्राद्ध । श्राद्ध विद्याः व्यक्त्यं कृताः, पृणायः शृद्धिः विद्याः (क्राद्ध । श्राद्ध विद्याः । प्रदेश विद्याः । विद्य

খথ মনোমোহিনার মান ভঞ্জন।। পঞ্চশাক্ষ্ বিক্ প্রার ।।

मरनारभाइमीत मन भाग छए जाणिन। नागत निकटो आभि माथिदादा जाणिन।। विद्नापि वपन विश्व वाका हैया वपना। विद्यु वाका हैया वपना। विद्यु वाका हैया वपना। विद्यु वाका हैया वपना। विद्यु वाका कर ना कर नन ना। इन यदा (इटन क्षार्य कर वपाकि कमा कर नन ना। इन यदा (इटन क्षार्य किन कर इनमा।। विद्यु वपन छया (पिथिटा ना शादि का। प्रत्न इस मदन मदन मति वा।। मान प्रत्य पिथिदादा (प्रक्रमा (ना। क्षार्य वा।। पायो वदन निक्ष पार्य (जक्षमा का। किना। क्षार्य कर वा।। क्षार्य कर वा।।

यम इटल लाटक मुछ। यम कथा वटल ला ॥ गुथ खल यानिनि नख्या जाइ वलद्या व्यवना निविद्य विश्विष्ठ इतन कन दत्र।। बामा देश्ट जिया यनि প্রিয় হ্য় মান লো। মোরে অপমান করে বাড়াও নে নান লোম আমাকে দণ্ডিতে যদি সঁপিয়াছ দেছ লো। স্চরিণি বুকে মোর চাপাইয়া দেহ (ला ।। च्याँ विद्या वक्कन कह कह युग भाष्म द्या । (केटन) र्वत क्ल द्वार्थ याभनात भाष्य ।। जादारक यम् अभि खिर्य नाहिं याय बागला। मरछ क्रि ७६४ (मात्र करत (पर् पाश्वा ।। काछ २७ नर्श ধনি কাত্তে আর ছলনা। প্রণয় পতন পথে চলনারে ठलना।। अयद अयद (कन मुथि क् वनना। कर मुहा कथा छनि मुद्रा भाषा कलना ॥ चाण्टिक कतित्व (पान गर्छ जा थात्र ना। जानना कि नाना इ कन इ ভ্যাগ করে না !৷ ভুজ স্বে বেষ্টিত থাকে ধরাধর গণ (ना) दिय जन जन जन् याद् अनुकन (ना।। কোন গিরি তাই বলে ফণী তেজিয়াছে লো। দা-সের অনেক দোয় থাকে প্রভু কাছে (का ।। তেই বলি প্রাণাধিকে মোর দেখে ধরনা। বঁধ্যারে এত मान कर ना (इ करना ॥ (पर्थ उद द्वागद्य शख পिक भरा ला। यह अन भाव हरा भवमा म भरा

ला।। এक शाबी (करन कहिर्छ करन। करन। (व ! ছলে তোঁহে কহে কথা क লোক লোক লোৱে।<u>।</u> ভাব দেখে ভোমার দকলে প্রাণে মল রে ৷ দেখে त्र कि इन दरन (मरभन्न कि इन (त्र ।। न। (मथिए পারে পাথী বঁধু দুরে ফেল রে। চকু গেল চকু গেল বলৈ চক্ গেল রে ৷৷ শুন্থ শুক্ শারী করে কিলো্থ ति। इलाउ मुनाश लिंग्ड रतन कि ला कि ला বে।। বউকথা কও বলে বউ কথা কভ রে। প্রের্দি নিতান্ত ভুমি অবোধ ত নপ্তরে ৷৷ নেরে হয়ে পার্থী हरश करव छे परताय (ना । ত वृ कि भटनार माहिनि इद्य खर (क। ध (का ।। अहे रहन भिथिशदम क्रांत কেওহ রে। ছলে বলে পতি প্রতি নান করে কে ও ति।। छाउक कहिए बहै अन्दर्भ । वैषु भू ए मदन ছিছি জল দে জল দে রে!। অভ এব নান রাথ **আর** নান রেথনা। অমৃত থাকিতে কাছে গরল রে নে-থনা।। সাধেহ নৃথ সাধে বিযাদ পজিভনা। ছার বাক্যে ছল করে বঁধুকে ছাড়িও না ৷৷ আরে তব অ-ধোম্থ প্রাণে মোর সয়না। পতি প্রতি এত রোষ মতীর ত হয়না।। এই মত নাগর করিল কত ছলন।। गरनर गरनागरभा गरन राज नजना ॥ वाह्रित नकाय वाद्य कृष्टे कथा क्यूना । अउद्युद्ध किन्त

चात कान वराज मयना ॥ शूनदाय कर इताय श्रान वुकियात्र (न। । প্রাণ প্রিয়ে প্রিয়জনে কর না ব-জায় লোম অবশেষে ধরি পায় রহে রায় কাত-রে। নাগরী তেজিয়া মান ধরে কর স্বকরে।। মনেং करह धनी क्व हे हा काश (त। अ छात्र भारनत नाशि বঁধু ধরে পায় রে।। মরি২ ছরি২ হায় ৩ রে । নাছি জানি নাথ কত গণিরাছে দায় রে ৷৷ পতি সংখা-**ধিয়া সতী এত মনে করিয়া। কহিছে বিনয় বাকে**। करत कत पतिया ।। वार्ष्क गति आग नाथ (मध्य হাসি পায় হে। কি দায়েতে ধরিয়াছ অবিনীর পায় হে ॥ विना मृत्न পদ मृत्न विकाश (य कांब्र (इ) তাহার উপরে এত একি শোভা পায় হে ॥ এত विनागरत नहेन निक क्रम्रा । भनास विराहम उम मुथ भनी छेन्द्र ।। खोकानी समाद्र कर् न्य इंश क्वारन ना। विष्कृप विशीन (अरम मूथ माज यादन ना ।।

অথ শশিমুখীর বিরহ।।

पिर्धि अपि इन्हा। निज्य नानाइ द्वः, यू वक (ना-हिनी मद्वः, এই कृष्ण इट्ट नाझी (वट्ट । अथा छन मयानाइ, (गोद्रीका छ उनसाइ, (स यखना इहेसाइ (पट्टा। (य पिरम यूददास, अद्रन) जुमरन यास्र, काकन नगर পরিহরি। অতে গেল দিনকর, নাগর ना चारम घत्र मत्व द्राष्ट्र भाष पृष्टि कर्ति ॥ भारव (भी-**রীকান্ত রায়, না হেরিয়া যামাতায়, চিন্তায় ব**্যা-बन रेश्न कांग्र । खाड्यामिन (मई कर्गः, युवरकत चारन् यरा, चारान व्याक कन शाया। आम यत राष्टि दाहे, नए १मी वन घाटे, नालाय मक्तान कानधारन। কিরিয়া আসিয়া সংব, ভূপেরে জানায় তবে, গুনি রায় ভালে কর হানে।। থেদ করি নরপতি। কহি-ছে দবার প্রতি, একি ভালা হইল আমার । অতি भाशादगत निधि, अक कन्। **पिल विधि,** छात्र **धर**न বিঘু পুনর্যর ৷৷ তন্যা যেমন মম, যামাতা তাছার मय, भरनाय उ ष जिल मकल। ५ए३ ছिল বড় স্থ-প্রজাপতি পরাঙ্ম্থ, অহ্মার গেল রসাতল।। निजाउ वालक जाय, मत्नाइत य्वताय, यमालि या-इया थाटक वरन । আছে वनहत्र १११, नाहि छानि এত क्रन, निदन वा कतिन की वटन ॥ अहेबान नानाः মত, আক্ষেপ করিল কত, তাপিত হইয়া নিজা-স্তরে। লোকে করে কাণাকাণি, অন্তঃপুরে জানা-कानि रेश्न वार्डा मवात्र शाहरत ॥ एउटव मद শবাকার, রাণী করে হাহাকার, শুনি শুলী পড়িল **४ताग्र। मदन शत्रमापं शदन, धति (ङाटन मधीशदन,**

কৰ্ত মত বৃষ্ণাইয়া ভায় ৷৷ প্ৰবোধনা মানে মন, না প্তনে কার বছন, হায়থ নুথে নাত্র রব। থেদে মুঞ্চ र्रा तम् तकनी প্রভাত। হয়, নিদ্রা ভাঞ্চি উঠে লোক সব ৷৷ প্রাতে গোরীকাত রায়, সভায় আসি তুরায়, সাজ্ঞাদিল ডাকি দৃতগণে । অরুণপুরেতে गिराः बताह्दा चान्यियाः गुमशाम चान ७७-ক্রে।। ভূপতির আজা পেয়ে, দৃতগণ চলে থেয়ে, खनशाम ब्राटका अदबिभन। बाकाब निकटि विश्वा, नमाहात निरविषयाः कत याद्य मृख माश्रीका।। যুহক নাছিল তথা, শুনিয়া দূতের কথা, হাহাকার करत्र महीभान। मक्तान कतिएक भरत्र, चाउक्तिम খানুচরে, শুনে চর খায় ঠুকে তাল ৷৷ না পেয়ে সং জ্বান জ্বত্ত, কোথা গেল রাজ পুত্র, ভূপে দিল সমা-छात्र यामि। मत्ना इत निकृष्यमः पुरथ्ये श्रतिन (मण, व्याञ्चल रुइल शुक्रवामी।। क्वानी कारम छे छत्राहा धन्ने वाडाय काया (काथा वाक् मत्नाव्त वरन। ध्याना (भट्य मकान, लोबीकाख मित्रशन, शिया मुख्यानाय मकत्व।। याभाजात बत्यम, ना भारे-महित्रांग, वशुर्थम रेकन नत्रपाछ । काथन नगत শয়, সকলে দুঃথিত রয়, অরুণপুরের সেই গতি।। पिन कछ (नटन भटता, मक्टन है देवर्ग) बदता भाज।

चात्र शञ्जी पुरे विना । कतिम विख्य (धपः) पिशा नाना পরিক্ষেদ, ভাবকে বুঝিবে সত্য কিনা।। বিশেষ কহিব কতঃ বিলাপ করিল যত, গৌরীকান্ত নরপতি मुजा। मरा करत शहजान, हार मृतीर्घ नियान; चछदत रहेशा मूर्थयुका।। करम यक पिन यास्र, धनी करत राम राम, ठटक वाति वरर व्यनिवात। (काथा रेत्रण প्राण नाथ, मामीएक कतरर माथ, कीवन कु मारे अकवात ॥ जाविया विकी सं शाल, अ फिर्श वमल कान, आगण रहेन कान आया। कूचर करत পिक, थर्नी मून्ड एट्टर फिक, मि इतिया छेट्ठे छान काय।। चिनि कदब अन अनः मुब्दन जृतन चाअन, वाक नारम मनय अपन। कराक (हउन भाय, करार मार्याय, कर्प रित कर्णक कन्मन ॥ मधीशरा पृथ्धे कति। कट्र वाना महि मति। वसुशात विना एदः भटन। मृत्थं नाहि मता वाकः चह अन छक दाकः रक्ष मम ডाकि एड्ड वरन।। नृज्य करत निथि क्न, (पर्थ रस প्राणाक्न, काथा नाथ (गरन असमस्। नी (रुद्र (म हज्जमुथ, युहिय़ाइ मर मूथ, पुःथ वामि (मथ तमस्य।। তব প্রিয়া হয়ে প্রাণ, বুজি আজি यात्र প्रापः, वमरखत डेशक्र रव (भात्र। श्रीकानी समात्र পায়, মদনের ধর পায়, নতুবা জীবন হবে ভেরে।।

गरात्र भगांख यमक इन्म ।। मधी विन छाकि नानी वरम अकि मांश ला। यन किन अमतिया के ठिए ममाञ्च (११)। विद्रष्ट् विषय विषय প्राप सम याम গো। জাতি কুল দুরম্ভ বসন্ত বা মজায় গো।। আংগং জানিতাম মিক ভাবে যায় গো। সে এখন শত্ভাবে নারাথে বজায় গো ৷৷ ফুলরে কহিতে স্থি না পারি লজ্জায় গো। শাল সম ধরে एन प्रतित्व मङ्काय (भा।। विनय् (यम्ना यजना ঘলায় জায় গো৷ প্রাণ নাশে জগতের প্রাণ বল যায় গো ৷৷ কলেবর সুশীতল জলে জ্লে যায় গো ৷ খাখি জলে দৃঃথতক ক্ষশঃ গজায় গো।। বিপ-রীত ফলে তায় দৌরভে মজার গো। আসে পাসে আশাপাথী লোভে আমে যায় গো ॥ অলি আসি নেই দক্ষেক ভেজায় গো৷ গুণ্থ করে বলে কি জায় বেজায় গো।। না পাইয়া ফল মনদ মত্রণা ভঙ্গায় গো। আশ। ফল ভোগে নাই তবু থেতে याय्र(ग।। পिक जाय कुर्चटत आखन नागाय (गा। मुक्ष टेइट इन्हन (निलिटन कुटन गांव (गा।। चामात्र पुः थ्येत्र कथा कर चात्र काय (गा। दमन चृत्रत्य कदत्र पक्ष (यात काम (११)। हिमकदत्र हिम करत त्यादत अकि माग्र (भा। व्यामादत जकरन रकन

(পাড़ाय महाय (गा।। এই नव अनय मनानत्न नि-नाम (ग।। रूपः करत ज्ञुष्य ज्ञुष्य कतित्वक माम গো।। নিবাতে অনল প্রাণ অবিরত চায় গো। সকলে বিপক্ষ মোর পক্ষে কেবা চায় গোয়া এক শত্ আরে হার ইকিতে নাচায় (গ। । তা নহিলে লাথ কেন আমারে নাচার গো ।। পরবাস পর ব্ৰে ভাল লাগে ভায় গো ৷ স্থে বিধি ভারে নাহি দিল মনতায় গোমা একে পুডে মরি মই ক্পির জালায় (গা। পাবকে পবন মন্দ বিভণ জালার (गा।। नयस्तर कन (नरह फिट्स फिट्स जास (गा। ভেবেছিনু নিবে বাবে সোঁতে:র দেঁতে:য় গোমা: अईरेश्न (भारय जन मक्नि खकारा (गा। दिन्तुमाञ নাহি আর জৃড়াইতে কার গোয় পিশানায় প্রাণ যার হয়ে নিরুপায় গো। যত শতু এই কালে লাগে পায় পায় গো॥ নিবাইতে তৃক্ষা প্রাণ চলে যেতে চায় গো! সমন সমন হলে নাহি তায় চায় ला।। कान প্রাপ্ত ना इहेल काल नाहि পার পো। ध्रा मिथ अञ्चानात्र कि कति छे था । भग श्राः भारक मारक कृकर्भ यकात लगा आन लात প্রাণ বাচে नৈলে প্রাণ যায় গো।। অই গুন থগ थगी जातक किन किन (गा। कूछ्र गृह गृहः किन

ছে क्लाकिन शा।। भूवरा मन्द्रयाणि शर्प शरम शिन थिन (गा) मञ्जति (मात (कन जाइन जार्ग श्रित গো।। কেওই রবে পুনঃ ডাকিছে কে কায় গো। थानिकान, मृना, छावि छाकि छ। कि कास शा।। भातिर एक गाती मृत्य ताग गाय (गा। चामात শুরণে যেন আগুন লাগায় গো ৷৷ কাণে হাত দিয়ে थान किছु कान जीन लगा। शूनः किनर ডाकে शूनः উপজিল গো।। ব্ৰিভে নাপারি কিছু বিধি কৈল ৰারী গো। এযত্তণা কি ক্ত' আর সভিবারে নারি গো।। विरुष्ट्रम द्वमना वन कछ विवदहें (गा। यदनर यद्र-লেতে মরে মরে রই গে।।। মড়ার উপরে থাঁড়া भारत भुनः भारत शा। अकि क्याना आग मथि घरिन चामादर (गा।। कानी करह व (कवन (छाम। त छ নয় গো। ত্রিলোক তাপিত করে ক্লের তনয় গো।।

स्थान भिन्धीत सामित व्यवस्पत प्रताममा।
भयात ।। এই क्रम मिन्धी तर् यखनाय । ना
साहेन प्रता प्रताहत ताय ।। मथीन प्रतिक दूसाय स्वित् छ। कास १७ कास उव हरेन सान ।। नाभरतत सामात सामाय करत स्त्रा करमर ह्य प्रज् हरेन सस्ता। सात कि श्रा दिन एक । यर क्रम मने। सामित मसारन मठी मास्निन छथन ।। यर उक

मिनी गर्ग छाकिया मुन्दती। बर्कर किछामिन উপায় কি করি।। কোথা রৈল প্রাণপতি, ভূলিয়া चामाय। वितरह ना तरह आन व्वि यास यासा পতি সে প্রুষ জাতি নিধুরের শেষ। তার লাবি দুঃথভাগী অভাগীর কুল। তাহার মনেতে আনি नहि अक दोत्र। (मात मन द्वन जाद्य हाट्ड स्विन-दात।। मरन कति भिंग जादा न। कतित मरन। 'चूनि-या भूनित् नाहि लाति धानलत्।। कि इन बामा त्त्र मिथ तन (निथि क्लित्रा । भना मत्न भए एक तकन (व अपन्। कि कृटज न। अटनाट्याश सप्नार्द छप्न। ।। यन जाना जान आश करत रहे हहे। रहन जन कहे (य ग्रान्त्र) कथा करे। यरनावृति मरनाव्त ब्रह भनः मृत्थ । भिष्टत विश्वा भन के दिए भात पुःद्य ।। अपूर्वि (क नामित्व काथा (मई कन। हात्ना निथि नाव ना कि वँथु पत्रमन ॥ नथी वदन देवर्ग यत ওগোরাজবালা। তোমা হেনকত জন সংহকত জালা।। নিতাত অবোধনও শান্ত কর মন। কান্ত তব অবশ্য আসিবে নিকেতন ৷৷ পুরুষ ভুগর জাতি ফেরে ঠাই২। কোন নারী ধৈরজ নাধরে বল তাই।। **पर्का महकान मर्ब (मर्ग्य बार्ट्स) अनुसार मकन**

खाना वन अला का छ।। छि छ धनि अवीना उन माद्र (मात्रा करें १ वृद्ध (पथ (पथि नाथ कात्र (जाया वहे।। তবে यपि वन (कन नाहादक अ पिरक। বিলম্ব হয়েছে কোন কমের গতিকে ॥ এইৰূপ मथौगता वुकाइन जास । ना स्निया नानमूथी करत हाम हाम ।। अनलब करह धनी नवाकात স্থানে। যাব আমি সঙ্গোপনে পতির সন্ধানে।। यम् अभि मृक्ष्म भाव (जामा नव इन्छ। नक्त भ-লিয়া মোর পরামর্শ লও।। পুরু যের বেশ মোরে माजाह्या (पर) याहेव खळ्टम हान ना जानित्व किह।। यादञ्जा आभि आभि निक्छरन कित्र। कथा अनात नाहि कतित्व वाहित्त ॥ शीषा इह-शास्त्र (भाव दिन ति विदेश (पिथि । पिथि । भारे । पिथि (म्थिटा ना मिट्य ।। यमि जारह (कान अन किन्छा-(मकात्रण । किहर्द धनीत हैरथ चाह्य वाद्रण ॥ शान यात्र देशन भारत भी ए। वृष्कि भारा। निष्कं-म थारकन जान निवधि महास् ॥ अहेक्न वृतन क्रां व्याद्य नकाल। काष्ट्र (ज्य हिस्ड नद शाद्य हत्न ॥ व्यामि वया शिक्त चात्रिया (पन रिया। किइत चानि याच्य कतिय चवरणय।। उनि যুক্তি সঞ্জীপণে উঠিল শিহ্রি। একি কথা ছেলে

প্রায় ভেবে প্রাণে মরি।। কিন্তানি একর্ম যদি ছাপা ৰাছি রয়। একপাড় মোরা তবে হইব নিশ্চয়।। দুরস্ত ক্ষতান্ত সম ধনি তৰ বাপ ৷ কে দিবে পাৰকে হাত क धतिरव गाण।। गणी करक् किन एवन कति ह न॰--শর। य युक्तिकतिन जारह नाहि कान छय।। अनि স্থীগণে মনে ভাৰে পুনরায়। কেছ ভাল কেছ মন্দ (कर् फिल नाग्रा। अवस्थाय शक्ताम रहेन नवात्र। সাজাতে পুরুষ বেশ ছাজি নায়িকার!৷ র**তি মতি** नाटम पूरे পুরাতন দাশী। एनकाटन পরামর্শ শুনি-लिक यानि !! (इतिया नकरन (मारह अफ़ नफ़ रुया। রতি মতি কহে ইংখ কেন কর ভয় ৷৷ সভ্যয়দি যান ধনী পতির উদেশে। মোরা দুই দাদী দক্ষে যাব (मर्गर ।। कि कि इशा एक पिथा भाइति युवात । (मण युष्प नाम यण इइटव अठात ॥ अकाकिनी का-मिनीत्र या ख्या युक्ति नय। (महे एक् मत्त्र (मात्रा या-देव उच्या १ छनिया मिल्नी शत् मत्व पिन माय १ রাজ নন্দিনীর হৈল পুলকিত কায়।। তার পরে বে-न ভূষা चानिया वृदाय। यूर्विक यूर्क माञ्जारक काट्य यात्र ।। काञ्चन कलभा माठी छोजाइया निल । नामा शुक्ति (काँ ठाइँशा भन्नाईशा फिला। नानौन जूरा अप्त भाष्ट्रित यस्त्रक। थूलिया नर्न मद क्रि थक्र।।

मर्व भाव काहिन बहिन निरम्भाध्य । (म अक नुष्ठम **लाका मत्त्र पृष्टि करत्र ॥ उपुर्शात कामा** त्याफा पिन ভात भरत। हानकारन छक्र नी हुड़ाकिन मुन्मत ।। इक्त भूक्य मिवा नवा (पश्चिताद्य । नामित्न क्षद्य श्ख কে চিনিতে পারে ৷৷ আনিয়া উষ্ণিক বাকা মাথায় পরায়। আছে। मंक्रा अदित विनामा पिन পায়।। शी-त्रात अनुती पिन क्त्राकृती मूल्न। (एति ल त्रम्ये क्रम ছाই (एस क्रम् ।। चे পक्षे माजा हैन चक्र ममू দয়। পুরুষ নহে এ ব্লি সংশয় বা হয়।। রতি মতি मुहेमानी माटक (नई मडा । मञ्जा (हरद्र याय (हरद क्रभवत कछ। च छः भव्रभ निघुधी क हिन मवा क। व-लिया हि या कथा यदन (यन थारक।। मधी करह अ নাগত তার নাহি হবে। কালিকায় প্রণমিয়া যাতা कर ज्या । छनिया मुन्दी कानी खब चार्रासन । कान बतन क्षेकानी समात्र माग्र पिन।।

ष्य मिम्बी इकानी खव।

(उ। देन इन्त । काथा (गा दानिक वन व छान-नि। कान कि गिर्ग (गा कान म॰ शक्रिन ।। अ मामी ए काथि जिल्ला कि लिए । निक कारखब अरवरण जिल्ला मुक्डें के कब कक्षण नग्रदन। (यन वाञ्चा भूक्ष व छ वाञ्चा भरन ।। उव आंछ। निष्ठ (मादब

रैंकन नत्व। वद्गरप वद्गरप कति याजा छत्व ॥ खि वियती रेक्षिता मेगानी। खर मृत्थ रता खरवत छ বাদী।। ভব শক্তি শক্তি গতি মৃত্তি দানে। আগমে নিগমে মহিমানাজানে ৷৷ ও গোসরদা সর্ব ভূতে वामिनि। विशदम द्रिध या दिशम नामिनि ॥ (छा-मारक कानिरक वानिरक कि करद । वतरम्थ क्रि খ।ত। তবে।। তনি মৃজন পালন সংখারিণী। তিও-ণ ধারিণী ত্রিভাপ তারিণী !৷ ভগি গঙ্গ গয়া অভয়া चिम्टि । नानित्व चमुतः चक्तः चनित्व ॥ शब-(मयति मक्ति मख्कादा। ताबित पाबित्व मिस्स मुक माद्या।। (म भावा लाटन वक्त टेक्टन यटन। यतः (पर कति याजा उरव।। इबि पूर्ण मुपूर्ण बिखा রিণী। অশিব নাশিনী শিব সঞ্চারিণী।। জগত काति ने जगाउ श्रांति । गरमम जननी नित्री नं गृहि-ণী।। ত্রমি ততুময়ী কেবা তত্ত্বজানে। চাহ গো অ ভয়া তনয়ার পানে ৷৷ হইলে গুভ দৃষ্টি না দুঃখ রবে ৷ वब्रद्भर कति याजा उद्या खिम अभ्रमा अक्षेत्रका वि कुका। अन्ति जिला आजाकना अन्का। महाविष्ठा मुविप्ता विधासिनी या। (इ जीया यहिया (का उव यनीय।।। छिम मुक्तकभी (मर भूकि पीता कि জানে তব ভক্তি এ ভক্তি হীনে।। ওগো ভদ্রকালি

কিন্সে ভদ্র হবে। বরদে২ করি যাতা তবে ॥ তুমি विश्वला मुक्ला तम्गी। ७ कल्ल कि कब्ल कव्रा क्रननि।। किता काक्षत नृशूत युग्न शदम। मत्रत्न मत्रत्न ला दुका भारा । जारक् कर्रे मुद्द शिक भूखभाता। ভাবেতে ভাবিনি ভুবনে ভুলালে ॥ আমারে ভু-नात्न अ कन्छ तरा। वत्रपर कति याजा छरव।। य-वना त्रमी आमि (भा जननि । हत्र प तिथ मा स्टत्त यत्रि।। उसा काल्याय्गी जितिनिक्नी सा । (वरम नाहि कारन खरगद्र गतिया।। खरगा युक्तिकारा नाहि वुक्ति समा ७ छीमा कब्रिमा लाम लाम लाम माः॥ छिलि-या (कलिएन लारक मन्न करत । वतरमः कति याज। उत्।। जुमि हिछद्व हक्ष दिनानिनी (गा। जुमि ভুতেখর হৃদি বাসিনী গো।। তুমি ভৈরবী ভক্রাণী क्रजानी लगा महामा नकी महत्र ही महानी लगा। याइट कनि निक काछ शारण। (मथ मा (यन শতু দলে না হাসে।৷ তা হলে বগলে কেবা নাম वद्र । वह पर कहि गांजा उद्य ।। भिव वक दिना-मिनी एक मूछा। कब बका (यादि ए वि पृथ्य यूछा।। জীকালী কহিছে শুন গে। জীকালি। সুথদে শুভদে ला मा मुख्यानि।। (इतिहा इंट् म॰ मात्र वह्न कात।। বাঁচিতে বাসনা গিয়াছে গো তারা।। যদি আজা-

কর তরিতে সে ভবে । বরদে২ করি যাত্র। ভবে ।।

व्यथ निम्यीत वात्रित व्यत्यरा याजा॥ পয়ার।। স্তবে ভষ্ট তথন হইল ভগবতী। অমনি আ-कामवानी अनिव युवर्जी ।। यावा क्रत्र अद्भ वाक्षा र-इया उद्यात । भरनावाङ्। शृंखं एत्व वाभि पिनू वद्र॥ भक्ष स्थान भिन्दी देवन वान कि । इंडि गांउ मह राजा कविन जुविछ।। विज्कीरा चाहि-ল পোপন এক পথ। বাছিরিল তাতে প্রাইতে মনোরথ। মন্ত্রণা করিল অংগি নগর মাঝার। কি-बार्य हिना इरद कब्र हिहाह।। (बाहा देशन नाबी জাতি পুরুষের বেশ। ভুমণ করিতে হবে কত দেশ (দশ।। নাম ধরে যদি মোরা ডাকি পর স্পর। প্রকাশ পাইবে লোকে এবেশ মজুর ৷৷ রটিবে কলম্ব না পূরিবে মনস্বাম । অতএব স্থির কর অতাে নাম थाय।। छे भयुक युक्ति मक दन एक पिन भाषा । ति पानी কহে ডাকি রাজার সুতায় ।। ভমিহও সদাগর মোরা তব দাস। জিজ্ঞাসিলে কব কাম নগরে নি-बान।। काछ व्यानुष्ठ ठ्रेशास्त्र मात्र । व्यान्य व কান্ত নাম রাথিনু তোমার।। রামবলা সল্দা আরা-**ম লোকে কয়। রাম বলা নামে মোরা** রহিনু উভ म।। भुवन कतिया श्रष्ठ इहेन गुब्छी। भरतामछ वाका

खनि द्वार पिन मि ।। जनस्त ति पानी शुनकात कशा अम तुरक अर्याहेन डेअयुक्त नय ।। यां दल নিকটেতে আছে অখালয়। বিকেতারে টাকা দিয়া ৰুৱে আৰ কয়।। এত শুনি অখালয় যাইয়া সত্র। थतिम कतिन जिन छत्रक मुन्मत्।। त्रक् वर्छ पुरुदेति त्य उ वर्ष यात्र। शृदं पूरे प्रोमीत यशत नाशिकात।। वर्ष ज्या कि विवाद एक अहे छिल। ठाकत मनिव ইথে প্রভেদ করিল ৷৷ আনিয়া খেতাম পরে দিল নুপজার। হাস্তকরি ধনী আরোহণ কৈল ভাষ।। मुहे पानी पुरे जारा शकारक छेटिन। बातिन छातुक जिन उत्रम जूढिन ॥ पूरे भार्ष त्रिक मिक मार्थ। म् श्वाला। क्षे एए द्र कठ क्ष्यान् इस काला ॥ मू রঞ্ভরঙ্গণ নানা চেলে চলে। ছেন কালে রভি मानी श्रनचात्र यत्व ॥ अन किर ठाकताति शतामन गातः नाम यदा मानी गर्ग ना जाकि । वाह ॥ व व्यविध वन छन शुक्र एवत (छटन। यादर निक शुक्रव भाइरे व्यवद्दली। अनिया मुन्नती जाय शिम पिन नाय। यन छत्र कठ (मन अ शह्या यास।। कानी का-পী প্রয়াগ মথুর। বৃন্দারন। জবিড় ক্রাবিড় আদি বন উপৰন্যা কতস্থানে কত বার করিলেক বাসা। কত ছ-**ल कछ जारन क**त्रिन जिल्हामा।। युवरकत्र मकान छथा:

পি নাহি পায়। পুনরার তিন জনে ভুমিয়া বেড়ার।। छेख्य नगत्र (मध्ये (यथारन (यथारन । किছु पिन করে বাস করে দেইখালে ॥ এই ক্রপে পশ্চিমে কা-টায়ে ছয় भाम। চलित निक्त ब्राह्म । शहुजा-न।। धायर राष्ट्रे शाष्ट्रे कतिहा छै। सन् । सन्दर्भस्य कालीघाटी कतिल अदयन ॥ अध्यक्तः चानिया क-রিল গজাসান। বাসা ভাড়া করিল দেখিয়া ভাল স্থান।। তরক বাহিয়া তথা রাখিয়া যভনে। কালি-কার দরশনে চলে তিন জনে 🔢 আনিয়া আশ্চর্য্য কাপ দেখিয়া দেবীর। চকে বহু প্রেমধার। রাজ-निक्नीत्र। भनवणी हरु रास्म (याप्र कांत्र करत्। खव यात्र खिन धनी युप्र अदत् ।। क्दान दपना कानि কালের কামিনি ! গজানন মাজা গোলা গজেন-शामिनि।। हिंखिका हामुरछ हछ मुछ विमाणिनि। रेख्यति जूबरमधीय अवे विनामिनि ॥ महाविष्णा यरहम (माहिनी यहाशाया। जूदन जुलाता नगाना দিয়া মহামায়া।। ত্রিভাপ তারিণি ভারা তিনির বরণি। হের পো হেরখমাতা হরের ঘরণি। নিতা विशि नृज्यकानि निश्च याना। काल परन्थिए আসাপৃষ্ঠ কর আশা।। বেদে বলে বিশ্বসাতা কেবা **जामा वहे। आमि उ**जनि उत्य जाहा कृष्णि नहे।।

কন্যায় করুণা কর করুণাকারিণি ৷ ত্রিনয়নী ভূমি তারা ত্রিগুণ ধারিণী।। এসেছি অম্বিকে পেয়ে তব অনুমতি। এ কলম্ব রবে তব নাপাইলে পতি।। এই क्लाविखत कतिन खिं नि । देनव वागी उथनि হইল তার প্রতি।। শুন বাছা শশিমুখি গৌরীকান্ত মূতা। পাবে পতি আর না হইও দু। খযুতা।। বিশে विशाविन उत्व उन इ छे प्रमा । উ छ त इति ग छ छ ভূপতির দেশ।। দিনমণি নগরে রাজার রাজধানী। নৃপতিকে করিয়াছি আমিবড় মানী।। দিয়াছি .मध्नारमाहिनी नारम अक कन्।। क्रां खर्च क्ष धनव जी भारक धनता। (मिविया सम्यु अन (अध्यक्ति বর।তোর পতি মনোহর হবে তার বর ॥ সেই भरनारमाहिनी खनश जात्र भन्न। এक पिन भृक्षिত षाइन पिणस्त्र ॥ वाष्ट्रीत निकट्डे जात जिन अक বন ৷ গুপ্ত পথে যায় নিত্য হইয়া গোপন ৷৷ সরোবর আছে এক সেবন ভিতর। সান করি সেবি হরে हाल वाला घत ।। देनवरयादश (महे फिन मदनाइत ब्राया चुनिरंजर (मई कानत्मरंज याया। (इन कार्य ন্পসুতা নির্থিয়া তায় । ছইল চঞ্ল মন ভবের ইচ্ছায় । **মনোহর ভা**হারে করিয়া দরশ্ব। সেই क्र १ इन जोशांत शूनः मन ॥ श्वरणद्य मुखाहना

नाटम नइ हती। मदनाइटत मार्का हैन नाती विश করি।। তার পরে গৃহে আনি নূপতির বালা। করিল शुवात मटक अतिवर्छ माना।। पियम्बर मानी क्रिय ब्राट्थ भटनाइटब । ब्रह्ममीटङ शूनब्राब यूना (पद्म करत्र।। (नाक मास्य ७३ कथा कहिन श्राप्ता । मानी এক রেখেছি সুন্দরী নাম তার ৷৷ তদবধি নারী (तरम मदनाहत द्वास । सदनादमा हिनीत नत्य त्रहिन তথার। অভন্য নেই গানে যাও লীবুগতি। আমার ক্ষণায় শ্নঃ দেখা পাবে পতি। এতেক বচন শশী म्बर्ग म्बर्ग । अगाय क्षिल का निकात छी हतरण ॥. नश्रातम् रेख्वरव क्रिया प्रमान । व्यक्तिरव वामा-य चाइन जिनकन ।। शुक्तः चक्तः भगख कतिया भ-মাপন। রন্ধন করিয়া সুথে করিল ভোজন!। অখে।-পরে পরে আমি কৈল আরোহ্ণ। শুভ যাত্র: কৈন ভেবে कानीत्र চরণ ।। कानिकाश (ডকে কছে ভীকালীসমার। গুভ যাত্রা করিতে বিলম্ব নাহি আর ।। অভএব যে দিবস যাইব দক্ষিণে। শুন গো मिक्ति का नि माँ जिल मिक्ति।।

व्यथ निम्योत निमान रिन्मिन नगरत প্রবেশ ও রাজার সহিত সাক্ষাত।। विপদী।। কালিকা উদ্দেশ কৈল, যুবার সদান হৈল,

मणिम्थी जानत्म शृद्धिण। मत्क् पानी ति गाँछ, कांत्र चिष्ठ भीषुगिष्ठि, मिनमिन तारका छेठतिन।। कानी अम क्रम यात्र, मगरत श्राटनण क्रि, छाति पिक कितिश (त्राय । मिरा क्षेणिका यग्न, स्वाय ভাড়া করি লয়, বাসা করি রহিতে তথায় ৷৷ সুরঙ্গ खब्द गरन, वाकि दनक (महेक्करन, मृत्रक् चानित्र) चिषान्य । छदन छिउद्य शद्द, अदिनिया पृष्टि করে, পুলকেতে পরিপৃষ্ঠ হয় ৷! অতি রমণীয় ठीं है, जुङ्ख खन्ना नाहे, পूत्र मत श्री न छ। शाया , छाति पिरक शुञ्जवन, नवं भरनानुत्रक्षन, सन्स त्रह মলয়ার বায়।। নিকটেতে সরোবর, বারি করে তর छहः अगूप कवन पत्न (मार्ड । अष्कृषि**उ** भाषा-शहर, ७१० सद्द, मधुत्नाङ। वास्म मधुत्नात्छ॥ र भ र भी किल ছल, यूत्रिया दिष्ठा स कल नि त्रिथित्व नश्न जुषाश। ठकवाकी ठकवाक, पृष्ट भारत ছাড়ে ডাক শুবণে প্রফুল হয় কায় ॥ (मई मटक अक गांती, मूत (पर गांतीर, विम वृक्त भाषात छेल-রে সেংযোগির সুথায়াস, বিয়োগির সর্বনাশ, যার ভাষ উপলব্ধি করে।। দেখিয়া শুনিয়া সব, শশি-মুখী প্রায় শব, হয়ে কহেরতি মতি প্রতি। কি করি গো হায়২, প্রাণ বুঝি যায়২, আনি দেহ শাঘ

था। था। या विदन या छन। बात्र, मर् कता देन ভাব, যত শতু বিবাদে লাগিল। আগে কৈনু অনু-यान, शाह्नाम जान अन्। এবে विश्वी उ छेशे कि-ল।। বিরহির প্রাণ নাশা, কি কাজ এ ভাল বাসা। निज ভाजरामा ना शाहेटका इं जि वहन काछ रूड, खिन **अ बरवाय न**७, छदद किन अमन इ**इतन ॥ कारछ** कतिएं डेप्प्रम, जानिशाक अक एमा, निर्मण था-हैशा क निकात। महन्द्र विर्यह भवन मुखाण म॰ याण क्र, युवदक बाबिटा का नेनाइ। राज सदा अहे माजः तुकाईन यतित्र छ, देवर्ग देशन भागिम्थी जास। उद-পর হইয়া পরে, আপনি উল্যোগ করে, ধনী निकः कार्छ शाईवास ॥ श्रथमण्डः श्रासा जनः यानि ठिका लाक जन, माजारेन खरन मुखन । घाडे वाढे घत ধার, করিল মুপরিখার, হইল পর্ম শোভাকর।। চাকর নৌকয় কত। নিয়োজিল মনোমত, দুয়ারে ताथिन प्रवान । मपागती क्या ह्या विखत कविन का, पुम पारम (कंटल (मन छान ॥ वन्तवछ देवन नव, महरद्राट जनतव, करत मिल প্রতি ঘর ঘর। বা-ণিজ্যব্যাপার আশে, দেশে এক জন আনে, নাম তার কান্ত সদাগর।। ব্যক্তি অতি ধনবান, মান্যমান गिज्यान, काम नारम नगरत्य नान । अरमरेना

वाकेल यदन मदन माज हिल मदन, ताथ नला नात्य দুই দাস।। বাস। করি ভার পরে, লোক জন র কা करत, नाम जाक वर्राथरा करत भरव । वर्रवनात करा या अधिक कि विकास कि विश्व विश्व विश्व कि विश्व कि विश्व विश् **थहे क्य कानाहन, मह्दा कदा मक्न, रम रम्हन** র সদাগর যত। শ্বণে শ্বণ করে, সাক্ষাত করি-তে পরে, আমিতে লাগিল অবিরত্যা সদাগর গণ मदन, आलाभक त्रिन त दन्, काछ ममागत (महक धर्मी। দ্বার মহিত ভায়, আরম্ভিল ব্যবসায়, পুল্কিত रेश्न यउ धनी।। करमर निमल्यान, रम रमरमात सामक গণে, ছোট বড় সবে থেলাইল। একেবারে রাজ্য ভরে, সকলে সন্তোষ ভরে, যশঃখ্যাতি গাইতে नाशिन।। (भोतदव ছाইन पिन, नाक मूर्ध अव-भाषा अनिल इतिमाठनमुतास । এक जन ममागतः নিজ নগর ভিতর, আইল বাণিজ্য করিবায়।। লোক দে অতি সজ্জন, শুনিয়া ভূপের মন, আন-न्ति छ देश्व चार्जिंग्य। चक्र (काक् एम जन, एएम करत चागमन, अत दाजा मुध कि चा छ ता। এই करन किष्ठु काल, का होईल गरी भान, उनशा मा किशा मरा-গরা হরিশ ভূপতি সঙ্গে, সাকাত করিতে রঙ্গে, नुबखना देवन छात शत ।। पिया निकं लाक छन

कति वह बारशाञ्चन, नाना क्रवर छ। नि मरङ्गास । এক দিন গুভ ফণে, আনি ভূপতির সনে, দেখা रेकन र्त्रविष्ठ रस्य ॥ तीं छ मछ नक्त ताल, पिया যোড় করি হাত, সভার প্রান্তরে দাড়াইল ৷ হেরি-য়া হরিশ রায়, সম্ভাষণ করি তার্ল সভায় বসিতে আজ্ঞা দিল।। নৃপ মহ অনস্তর, আলোপিল বহুতর, সভোষ হইল নূপ তায় । খেলাত করিল দান, পেয়ে অপ্রমাণ মান মে দিব্দ আইল বাসায় 11 ভদব্ধি নিরন্তরঃ রাজবার্টী নদাপর, নিতাহ করে দাওরা **আস**া। কিছু দিন অভিক্রে, ভূপ**তির** ক্রমেং, ম্ইল বিশেষ ভালবাম ।৷ এক্রিন নরপ**ন্তি,** কান্ত সদাগর প্রতিঃ তুই লয়ে নিষ্ট আলাপনে। चाक्कापिन मलीदरत, जूचियारत जनाभरत, भूत-कात्र माना तु प्रता। काछ करिन मरत्म, वामि য়াছি তব দেশ, না লইব হেন পুরস্কার। মনে ইচ্ছা या आभाव, यिन कत अभीकाव, उदय जाहा कांत्रव পীকার।। নূপতি শুনিয়া কয়, যদ্যপি সম্ভব হ্র, অবশ্য করিব তবে দান। শুনি বাক্য সম্বয় সংগ गत श्रुष्ट रस्। कहिन चृপ्छि विमुभान ॥ अन छर কিতিপাল, তব রাজ্যে কিছু কাল, থাকিতে বামনা করি মনো না হইল পরিণয়, যদি মনোগত হয়,

ングト

एक कि का ती ते जु बदन।। भदना शं श्रुमः इदर, के इन कि ति उदर, नजून। नाहिक श्रासाकन। जुन कर जूदन गर्था, व बि मामान। कर्य, शृष्ठे व छ देशन दात मन।। कि छ दमात वाका ध्रतः वालान मकान कर भदना मज कर।। कि वाला बाद्धः। दमात तादका नान इस जिन दात कर पात वाला बाद्धः। दमात तादका नान इस जिन दात है। वह कल यि ए इस कि हिनाम मूनिक्ष, ये छ हो का नालि दन है हो से बात है। हिन याहा। मिन कि ति छ हो। कि वाला कि वाला कि छ वाला कि वाला

थथ काल मनागदवव विवाह।

প্রার।। ভূপতির অজ্ঞাপেয়ে হ্রিষ অন্তর। মভা

হৈতে বিদায় হইল সদাগর।। হইয়াছে নৃপ সনে

যত আলাপন। রাম বলা নিকটেতে জানায় তথা
ন।। মনেই তিন জনে পরনাহাদিত। পূরাইল মনো
রথকালিকা ভূরিত। সদ্পায় হির করি সদাগর
পরে। কন্যা অনুষণ করি ফেরে ঘরেই।। মিছা
মিছি দিন কত করিয়া ভূমণ। কহিল হরিশচন্দ্রে
সব বিবরণ।। শুন হে পৃথিবানাথ তব আজ্ঞা

लरश । मकान करति कि कन्। यजुवान् इरस् ॥ दाशः क यम्रिनाहि इस महमाभन्न। उद्य करि नृभ कद्द বল পূর্যাপর।। কান্ত কছে নরপতি করছ শুবপ। বি-শেষ করিয়া কহি সহ বিষরণ ৷৷ তনয়া তোমার भारतारमाहिनी मुम्बद्धी। मधी अक ताथिएलन नारम-তে সুন্দরী।। লোক মুথে ওনি তার অল শীল যত। এক্য হৈল মোর মহ আরু মবোষত । শিশা ক্ষে স্নিপুণা বিবাহ না হয়। যে ্কন্ত দান নেচরে কর मश्रमेश ।। न्परिक कि विवाहित्य वाहेक कि चाट्छ। उथनि পाठान पामी हास्न करण कार्य । भामी बुद्ध ए निया नक्य नमा लात । बाजन्या जातिया इक्न भराकात !। वरन कि इस का मधि काम नुवि भारा। युग्नती गिक्नी ताक। में शिद्यण का। ॥ धाराधिक थियु उचा नथी (म बायाह। मित्रिक अस् बाबि না ছাড়িত ভার।। শুন দাসি বল গিয়া পিত। মহা-রাজে। তনয়া**র ধনে ইচ্ছা छ। त**ा ना क् माटक ॥ अ लहीं भागात की वत्नत (म का तन। (म या देवन का-वटन नाहिक अरहाकन ॥ अङ्गठ कहिएक मार्कोब विमामान । एन काटन मून्सती साहत (मह थारन ।। প्रांभत छनिन ममस विवत्न। बजना कि क्ति (ज्द अक् विवत्।। मामीक अकिया करम

পরিছ্রি লাজ। শুন দিদি বিবাহে আমার নাহি কাজ ।। একে ত অবলা ভাতে গরিবের মেয়ে। মনঃসুথে থাকি তবু থেয়ে বানা থেয়ে ।। ছোট कारन मा वाश्व थिया (माद्य गाया (क मिद्र वि बार् काब मुधाहेव काश ॥ किछ्निन शदा भिष्य भरम मिनु পाड़ा। (छव ना त्र मन वृथा ७ कथात भाजा।। भूक्य निर्मं इ वर्ष मर्बक्षत क्या आएम করে সমাদর শেযে লাছির। । তার পরে আইন্ ठाभवसीव नारका फाविकास क्रव त्नरम कलारन या चाटा। अथन श्रम् छ धाती तुक देशा मन। पिन গেল আর কেন পুরুষের সনে ।। অভএব অভারতে বল গিয়া তাই। বিবাহ ব্যাপার মোর আবশ্যক नाई।। योवन भिताह यदत एकदन अवसिंग। अ थन উদ্যোগ করি যেতে থাব বিষ ।। শুরীয়েছে मुधिमिक शुनः कि बालाई। श्राधीना रेट्ट बाव অভিলাম নাই ৷৷ এইৰূপ শুনি দাসী দোহাকার श्राप्त । ज्ञानाहेन मित्रिमा नृष विष्ठभारन ।। पानी মুথে ভূপতি শুরণ করি সব। সদুপায় ভাবিয়া ক द्भिन चनु छव।। चन्नीकात कतियाछि काछ मपाभदत। নাহইলে বিবাহ অথ্যাতি রবে পরে !৷ অতএব বিবেচনা এই সুনিশ্চয়। করিতে হ্ইবে ইহা যে

প্রকারে হয়।। এত ভাবি দাসীকে পাঠান পুনরায়। वुकारेया जाम कति देवटक जनसास ॥ पानी चानि शुनः निटव्फिल अगुप्य । (गाहिनी गुन्मती शुनः প্ৰমত কয় । জানাইজ নিয়া দালী বাৰ্ডা দণ্ডৰ র। ताकात कहेन कार्य कन्त्र सेन्द्र ॥ धात्र **भर्** कात्र सम विष्यास । (कहा चिद्य भुक्ति व्यवनाऽ) रिव मान ॥ इंड्राटक रम धनी देकटम विव्रक्ति अका-न। श्ल भटत यानिया वाणिव निक्र णाम ॥ भन्हाक विवाह पिरद्राव अकोकाता समाञ्चः (इसम करब এত সাধ্য কার।। আর যদি লোহিনাইভাতে করে कि:व! यन बाटम पित (क द) कटत अितदा भ । **८**७ र्याण भारात पामाटक भारत हैत। निराम अथ। विवा-रिव छैटमहारण बिश्वा विकाशरण किल्ल रमिथर छ **अञ्जिति। मनागरत करन्यारका मा आदि अ जिम।।** পশ্চিম দিকেত্তৈ ভানু সম্দিত হলে । সজ্জনের ष्येकात्र उत्नाहि । वहेन्य ष्टा कि किन मराभवता पिन दित कतिया वाकारण पिक भवता। भाक्षानिम नद्रशंकि छाकि लाक छन । विवादस्व क्ति उनस्य चार्याक्तन। नाक्षिन नक्तन नाना কর্মের উপরে। বাজিল বিশুর বাদ্য নগর ভিত-ति ॥ अक्कारम भूरत हाईन क्वांश्रहम । कार्ड

ममान्यत्त विवार रूप वत्ता। अन्छत्र आहेन र्जि भिष्ठम् ताय । ममाभव मह नमाभदि वानास ।। (मङ् খানে বিবাহ করিতে সমাধান। প্রস্তুত করিল সব थाकि विषामान ॥ अथारनएक मानी चानि वाजाव चाकाम् । मवित्मय (याहिनी मुन्दतीत्क छानाम।। ব্লাজার হয়েছে রোষ তোমা দোঁছা প্রক্রি। প্রমাদ श्हेरव हेरथ निर्व वनग्रि । व क्रावा उ भग वाकः कतिया भूरत। উভয়ে উ विश्व किया कतिर अधन।। अञ्चल अञ्चल (अञ्चल। भृतित आंभ। श्रामा प्हेटन পরে হবে সর্বাশ।। দাসীকে বিদায় কেল নমত इडेश। भशन मिमदत (मं। एक् काहेन डेटिशा।। हि-স্তায় আঞ্ল প্রাণ ভয়ে ভীত কায়। উভয়ের মুখ পানে উভয়েতে চায় ॥ ভাবী ভাবি বদ্যনতে বাক্য দাছি সরে। করে২ প্রেমধারা নয়নেতে করে।। মো-दिनी कहिट इसाथ आर्ग मित्र मित्र । कि क्रार्थ द-হিত তব সঞ্পরিহরি।। বাপ হৈল কাল সাপ ক-भारम कायात । म॰ भटन इहेल नहे मुर्थत मकात्।। हांशर अ गञ्जन कर वन कांग्र। (नानद कहिनू ध्यम विष् भूनः जारा।। विष् मूर्थ छिन् (भरा छ। मा (इन পতि। ইবে এবে নাজানি কি অভাগির গতি॥ আ-मात्र नात्रीत आण नवपूर्व मव। अकानिरम नत्रगाम

পাছে হর তব।। তাহইলে তথনি করিব বিষপান। वृत्क इत्री शनिनटश एक किव भन्ना।। बहै सभ ना-अबी पुः त्था क क कन्ना नामन मुम्बनी (वरण खरन मभूषरा। मृत्थट जाधान मिल चर नाहि कत! अउद्भारक यन और कारण यह यह ॥ अधीगरण गत्नर जात्नर कडल । एक्वाड अक शांख क्केंब मक-(म। १ करात निविध निकास कराय गरम। भवनान छा-निष्ठ इहेरन हेरा भरम । कोज़क इस्टर किछ रेक्टक गामि भाषा । जान हर्पत सहस्य आन अहे तुष् माक्षा। अध्यात्व ल्डेमी रूत क तम् व का म। कन-क बिटिय अदर अका गिए जा आ। मुन्न ही स्वाहि-नो चाह्रये मथा गर्ग। भेड्रा ठ लाजगान आर्मर गता अथा मानी चानि चून विकटि जुदाय । ताज-कन्ता मुन्नतीत नवां उक्त नाम ॥ नृथि इह्न स्ट र्श्वनि समाजात। कतिरवान सर्व सभावान शृक्कात।। चा जुः পর अञ्जित देश्य के शिश्व । मणा गत गतनः পুলকে পৃথিত ৷৷ সভার মৰার মাঝে প্রভিজ্ঞার **দায়। নরপতি আপ**নি দক্ল কলে যায় ।। প্রে चानि मुजा मथीगटा चाळा निन। नुन्नवीदक मक-**८ल इद्रिक्त। याथाहेल। म**मागः इ जान वला कदन **भ्यत्वरा भृष्ट इत्व अक्छ। जा**निया औक कूरा।

लब्रिन छडकरा मुक्त दिन लक्ष । मनागरब देनन मान कन शक सं इरव । धूम धारम हेनर इहेन नहत । क्रिक्त (परण मरव इदिन च छत्र।। छडनरा छड़ कर्षा कि निमाणन । क्राइन नृष खाक्ष गाणि रक छो। छन । मनागत मुक्ती वामरब धर्यानिन । नृष्ठि छित्रः निक खानरब खाइन ।। कानो करह कामिनोद घाई विन हाति । यूव छ। हहेन निक पिंड रेहन नाती।।

च्य महागत्र उ नुक्तीत्र क्याणक्यन।। भागात इन्म।। वानाद आविभ कति काउनमाभन। স্থানন্দেতে পরিপুর্ভ হইল অতর ।। রাজার প্রেরি-ত यन्। नात्री गण नंदन्। अथमकः यानाल क्रिन नाना इत्या मकत्न मत्छ। यकति वादकात को भटन। चन उत्र मुन्दरी दर मार्था दिया दला ।। প্রাণ প্রিয়ে काटन करि देवम अक बात । जु मात्र जीवन बाजि भ इटम (ङाबाज्ञा। (इटन कब्र मधुबाथा ভाষा विविधा। শুৰণ मार्थक इंडेकक तिया শুৰণ।। नयन थक्षन পाथी नाहा ७ कि विश्व। नयन मकन किंद्र नयदन (रुद्रिया।। श्मितार यं करह मनागत। मुन्दती श्विता उं गगन्न कॅाभन ।। मन्दर किन्न एक कि किन्निय अन। বিপদ ষ্টিবে বছ যদি পার টের ।। কহিল বিস্তর

कथा ना पिनू छेखत। यात लाट्ड चनू छव कत्र इ छछ-त्र।। किछ कथा ना किहित्स क्षां उ वर्ष नाई। नरवाहात धर्म अहे जानम् भवाई !। युवात मञाद यनि हा उपम পায়। তবে ত এথনি দেখি পড়িবেক দায়॥ ফাহ-छैक न। विभिव निक्दे हे हात । तमनी निष्क्रि छ। अछि ষ্পেগোচর কার।। এত ভাবি লাজে যেন জড়সড় स्टब्रा मुन्दती महिद्या देवरम किछ्ना हि करवा। छाव वु दक्ष ममागत्र युक्त किया (क्टन । क्वन विविधा निक्छे याञ्च (पंटमा। (माहाद (योवन कान जाना क्ष जास। यामदात्र नात्रीमण (एतिया लनाय।। मनाभव नित-थिया देश्व श्रुपाकि छ। উट्टिशिशः हात्र ऋषा कविषा जुविज। निब्हन इहेन घर चात करा भाग । नना-भद्र नुन्म दोव निकटिए ज्यावा। शिमिर कार्ष्ट् यमि करत्र जिल्हामन। किलाणिया (रुवि छव विवस वर्षः न। कि नारि यपन छटन् नाहि याका मुधा। कर् खान मृत्त यान जा जा जा का भाग ना गर ना गरी गर र्हेल मिनन। अमरन अमान পाष्ट्र ब चात (कमन।। সদাগর এইজপ করি যত কহে। সুন্দরা শ্রায় তত (मोनी ह्दश ब्रह्।। भटन छाट्य अष्ट्रिक चाब नाति अद्य । या स्वात स्ट्व कारगा कि कतिव (छद ।। निरुख यम्। शि किख यमि (हेन्न शाय्र)

चित्रिक के किया पतिय पूरे भाषा चयमा कतित्व क्या कति कृपालमा व्याहेशा विवत्न कव मिव-(भय।। अनियाणि मेमागद्ग विका प्रयावान। उटव कि इंशास्त्र भारत विधिवक आग ॥ या इस व्यवनाई इहे বেক পরে। এবে এক ছল করি দেখিব কি করে।। চুপ कति थाकियानाहिक शुरुयाजन । अवात जिल्हाना केटन कहिर रहन।। किंछ कि हाजुती कति कतिएছ विठात । एक्न कारण नमाशत करह शून कात ॥ कि का-त्रत अति आग वादामूर्थ त्र । आग यात्र मवित्नय विदक्षिता कंडा। मुन्मती कहिन कान्न खन उदर कहै। यकात्रा (रंडे मृथि दिखाक्त तरे।। कि हुकान गउ टेश्न चामि अक पिन । विकास का जत रुद्य छिनु रेपवाधीन।। स्राप्त अक मक (পराक्रिन हमश्कात। यूरजी (य पिन कान्छ भारत बाभनाव ।। (म पिन (म मज यपि भएए जिन वात । तमना भूकव रूप প्रजा-কে তাহার ।। পুনর্বার পজিলে রমণা পুনঃ হয়। नारियमि कदत भाठ युवा इस्त तस् ।। मत्म इ इइ-ল নিজা ভাঞ্চিয়া আনীর। পরীক্ষা করিতে কিন্ত ना शादिन जात । (यरहलक काल मक ना इहरन भरत । भि मख कतिरम भाठे कन नाहि करत ॥ चाक्ति उ काद्यत माक् रहेन मिनन। कि क्रिन

ভাবিতেছি তেই গৈ এখন।। অতএব অভ্তা যদি কর একবার। হয় তবে মন্তটির প্ররীক। আমার।। वाद्यक यूवक देश का मदन व्रष्ट मान । ब्रमनी छ हितः कान इव जव भाग।। इन तुर्व मानिवृथी नवाशव रहरम। वाथानिल युवतारक मुठिकेश (इरम।। मन छारव भन्नामण न नम् वर्ष नया। अहे हत्स काग गान रव यपि रस।। मून्यही दक भरबाधिया कहिए ना-**গিল। এ বড় আক্ষর্য কথা বিষয় জব্মল।। দেখা-**है एक भात यपि मछ। दनि छदि। अनुगानि व तु वि (माहिनी मख हरव।। शूर्व अक मरना हत युवदत काष्ट्र। वामिष्ठ (म मख निधिया क्रि भ रन वाष्ट्र)। গুণ তার বিপরীত কহি শুন সার। রনণী হইতে পারি প্রভাবে তাহার।। হয় নয় অংশে ত্রি হও यूवताक। (पथिएं भाइरव भाव यूवजीत माला। मुन्मती खनिया (ভবে হয় চনৎকার)। পুরুষ কেমনে नाती इत्व शूनदात ॥ आमि (यन इस (बल्म इस चाछि नाजी। चनायाम अर्थान भूक्ष रेश्ट भाति।। সদাগর ধরিবৈ কেগনে নারী বেশ। যাহউক জ্ঞা-निर्क रहेन मर्विष्णय ॥ मख्यमि मक्र मक्र मिया थारक कि ह। अवना । इहेरव नाजी कि आर्छ मटन्द-र्। (এত ভাবি সদাপরে পুন: किछा সিয়া। चारेन भूक्षेत्र राप्त्र वाहित्तरङ भिन्ना ॥ नमाभन (महेमड छित्रिया अमनि। अनरकत मस्या इत्य आहेन तम्भी। नागत अवाक रेश्न नित्रीका कति। जात वृत्व मण्य शमित्र नागरी। कोजूक रहेन वर् उपकथा आग्र। দোহাকার ভাবে কিন্তু মোছিত দোহায়।। নাপরং সেঞ্জে বলে ওহে কান্ত। আজিত তোমার আমি इड्नाम काछ॥ अई (वर्ष अक्रात्र (पर् चानिवन। अनिया नागती रेश्न एतिय मन ।। नित्रथिया निक कार्ख ভाবে मुक्ष इया । এ বেশেতে चानिश्रन नृजन् छ नश्।। माथएछ स्नितं देवन পরিছরি লাজ। मछ हरम मुद्रक माधिल भिक्र काछा। उथनिन मुथ निष् विनव छेठिया। शिकानी मगात (मृद्ध कारम मुक् किया॥

ज्य काल मपागदंत निक्षे मुन्दतीत चूवक (वर्ण पामल बीकात।। बाधू छक्ष जिल्ही।। त्रिल तक मरक कति, देवरम नागत नागती। स्म करलत छोरप, काम तिल कारप, वृक्षि धगति धगति।। यूवक हि छि गत्न, कि कित बहे-करण तम्मीत कल, धतिव कि कल, अपाद्म छित कम्मानेत, चाहिन मागत, मागत हहेर्द (क्रता।

আশার যন্ত্রণাহবে, লোকে অপযশ কৰে! মোহি नी अनित्न, पुविद्य मनित्न, उथनि समि उद्या। 'এইৰপ ভাবে কত, নাগন্নী সে অভিমত। বুৰি তার পর, সাজি সদাগর, আইল পূর্বের মত ।। যুঁব-वदा शमा कति, शहेट करर भू खती। नागत सनिया, প্রমাদ গণিয়া, রত্হ করে শির ধরি ৷৷ সদাগর ছেরি তায়, জিজ্ঞানিল বারতায়। কিসের কারণে, বিরুষ व परनः व न इ स्योदन जुनास ।। युवनाकः यरना इतः नारि पिन उपूछत। याजाम वृथिया, वपन एाकि-या, शमिट उछ् ममागद्रा। मृत्ये वाद्र कट्ट, जात ना विवय मटह : माझ (ह तमगी, युवक अमनि। ভেলং চেয়ে রহে ৷৷ সাত পাঁচ ভেবে পরে, কছে त्राय मपागदत । स्थन महा नया, व्यामि नात्री नया, छिनु সেই রুপ ধরে !৷ হরিশ ভূপতিবালা, ঘটাইল এত क्षेत्री। (इतिया नयदन, दाथिन लाभदन, दमन कः तिया माना ॥ उपविध नाती श्रयः ছिनाम मुन्सती কয়ে ! বিধির বিধিতে, ভোমার সহিতে, বিভা দিল নূপ লয়ে ॥ প্রকাশিতে নারি আগে, পাছে ভূপ वरश्रतारमा अरवरह राजामाम, बिल या श्रीय गा থাকে হইবে ভাগে ়া লয়েছি তব মারণ, রাথ বা ৰণ জীবন ৷ অনেক ভাৰিয়া, ভয় তেয়াগিয়া, সৰূপ

কহি বচন ৷৷ বাক্য শুনি সদাগর ভাষে কাঁপে পর थरा । करह मजाहै नि, चार्रानि म जिनि, हाँदर (कार्थ) তোর হর !। একেবারে সর্বাশ, গেল জাতি জল বাস। এখন কে বল, নন্তবা সকল, জানাব ভূপের-लान ॥ अनि नाइ जनमिश्ना, लुक्टियः विश्वा। चारण ए लम्भारे, आयात निकरे, ना किश्लि कि नाशिया।। এতবলি রাগ ভরে, রাম বলা অনুচরে ৷ ডাকিল जुजास, चानिया (माहास, माड़ाईन (याड़ करत ॥ विवद्भग मधुपया अमागद्र (इस्म कस्। श्विन वन। द्रामः বলে রাম বাম, একি জালামহাশয়। একথা প্রচা-इ टेश्ला कन का यादव रेशका। मुख्यत मया कि पुःथ छपसः (क्यान अमन देकाल।। विविद्धि नक्का इंस, পুরু (यद পরি । মুক যের সনে, শুনিলে সঞ্জ-त्न, बाहातापि नाकत्रा। मपागत कट्ट बान, जा-বিলে কি হবে ভার। বিধির ঘটন, কি করি এথন, क्त (पथि मुदिहात ॥ छनिया किह्छ तामः वृथा বাকে। কিবা কাম। আজ্ঞাদেহ মোরে অই, জুআ-(Dica, नर्य याहे नृष्धाम ।। नव्रश्रां कहे पख, मिर्द मशु ि प्र १७ । (यभन मही कि, निश्दित मूनी-**कि, व्यात्र ने। त्र**स्टिय ७७ ॥ **छनि मत्ना**र्त त्रोत्न, मण्डा किन्नि के काया। हत्क वाति वर्ष, अपागति

करह, कम धति उव लाय।। चार्म ना वृक्षिया मर्मा कतिशाष्ट्रि गन्म कर्या। विश्वति कीवन, व्ययम बहेन, द्राथित्व वाजित्व धर्मा। नमाशद्र (इतम क्यू, ध क्री-ভক মন্দ নয়। সরীতি নাশিতে, সজনে শাসিতে, नाजानि कि (माथ एशा। या श्वांत श्रेशाटक, अथन आमात्र कारक्। ठिक यपि कन्न किना खिम इक्ष, उत्य ত বাঁচন আছে।। শুনি কংছ যুববর, নাম মোর মনোহর।রাজার তনয়, কৃছিলে প্রত্যয়, চোরে। ৰুরে কোন নর ।। পিত। সর্গুণ ধান্স, নাম তার खनशाम । धन अल मारन, मध लारक ङ्वारन, असून পুরেতে ধাম।। কাঞ্চন নগর নাম, খণ্ডরের হ্য় थाम। कति वप काम, এবে वपनामः विधाल। आमा-(त्र वाम ।। कथा अनि अञ्हल, ताम वना (अक्ट वटन । ওছে মনোহর, পরামশ ধর, মজিবে তাহা না इत्न।। भारमत প্রভুর পাশ। হ্রে যদি থাক দাস। शामादपत्र मकः (मित्दिय मक्कः क्दिक कीटक আশ। নাম দিব বদ্লিয়া, কথা যাবে ছাপাইয়া। (कद। काद्र कद्द, महा मूर्थ इदंद, क हिनिद्द প্রাঞ্র ব্রিভে, চাহিলে দেখিতে, কেহ দেখাইব उत्।। जान हार चालनात, कत रेट्य चन्नीकात।

खिनिया खमिनि, यूव खनमिनि, कितिन ठारा चिकाता।
भारत ताम वना कया, ममागत मरागय। छत्रात्र थिता, रकाथ भित्र दिन, विवाद क्रिया ठाया, ममागत मिन माय। यूवरकत नाम, रहरमर ताम, तारथ मूठ भेठ ठाया। यूववत मरनार दिन, जिक्टि स नाम बर्दा। वना मिन कर्या, रतिषठ ह्राया, ममागदा। निक्ति हेन मन खामा। रखनानि विरम्दम खामा। खमिन तमनी, भेठ मिरता-मिन, विनया करत जामामा। नागत ना वूरक जाया, खाळा विन कार्छ याया। क्रीकानी समात, करर वाया, वाया, विनश्चित नामाया, करर वाया, वाया, विनश्चित नामाया।

অথ কান্ত সদাগরের হরিশ্লু নৃপতির নিকটি হইতে বিদায় হইয়া স্বদেশ যাত্রা।

भग्नात्र ।। नाग्न कित्र विश्वा पाम हा छत्रीत्र वर्णा निक्या (शन भनी भनी हरन ब्यु हरण ।। প্রভাতে উঠিয়া निত্য क्या व्यापि मात्रि। यरनाष्ट्र त्राधि एनक मा-कार्या नात्री ।। व्यापनि उ महस्क व्याष्ट्रिन मपान-द्रा नात्री ।। व्यापनि उ महस्क व्याष्ट्रिन मपान-द्रा वाहित व्याहेन हर्य इतिष ब्यु ।। विनाह मप्त-स्व यञ्ज कर्या वाकि हिन। पूरे जिन पिरन हरन करम ममाणिन ।। यूवरकत नात्री माका हर्य ह्या श्रीता । विपान क्या वाहिस (क्यु नाका निन वात्र ।। यपि कान

দিন কোন পড় সীর মেয়ে। সদাগর রমণী দেখিতে চাহে যেয়ে। সুন্দরীকে পুরুষত নির্থিয়া যায়। গোপন বৃত্তান্ত কেই সন্ধান নাপায় ৷৷ কিছু দিন দিন-मिन नगत्त अ क्रिं। इहित्वन मिन्युथी मनाभव क्राला कि कु कु उ कि चू कार्या माका एवं नागरव । (इ-तिया काणाय काल इतिय चलदा॥ वाहिदत्छ म-मागती करत शूर्व गछ। मण्यी कि वा फिल गइ ममागत কত।। হরিশ ভূপতি পাশে নিতঃ যায় আদে। দেশ-वामी मकरल मगान छानवारन ॥ शृह वी उ विश्र ती-ত কিছু মাত্র নয়। বরঞ্জ জ্পেতে মান বাড়ে অতিশ্ श।। পূर्स्ट रेश्न अভिनाय यात्र किया भाषा । समञ् कतिल धनी (परण चामियाश।। चनसत अकरिन छे-ঠিয়া প্রভাতে। আইন ভূপতি হরিক্যেনুর সভা-ত।। नुश्रमङ्माकां कतिया व्यापनात । स्टमम् গমন বার্ত্তা করিল প্রচার ৷৷ প্রথমতঃ নিষেধ করিয়া नृण जाय। निवादिष्ठ गादि । एक कदिन विपाय।। क्रिन (थनाठ पान गवा विष्ठ्रमान । मपानव मर-र्य भाइया वस्त्रान ॥ नगरतत (कारे वस्त्रवात महि **ত। সাক্ষাত করিয়া লৈল বিদায় ত্**রিত 🔃 আরং य उक्य कित्र उपाष्ट्रिन । पूरे अक पित्र उपारा সব সমাপিল।। শুভ যাত্র। কৈল পরে দেখে শুভ

मिन। माम यांच ताय वना भेठ थहे जिन ॥ वाहिः য়াব চারি অখে আরোহিল। চাবুকেতে তীর তারা जिनिशा ছु रिन।। এড়ाইन नम नमी चामि कछ दन। क उठाँ है किन क उ ि दम या भन्।। कानी घाटी आ गिया পुजिन कानिकाय। यत्नावाञ्चा शृख देशन या-হার রূপায়।। ক্রেং আইল আপন অধিকার। ভর-मा विख्य रेश्न शियांत्र मास्रात ॥ त्राम वना शिक्ट क्रिल में भागरत । यांत्र कि প্রস্তুত হও এ में ছिनगदत्र।। गरेटक खनारस सुरथ करह गरेजास । थाकियांत ज्ञान जान वह जायगाय।। म्मागत वृ सि या जाशास्त्र भूनः कया । क्लिक कि थाकित्न यपि ভাল ঠাই হয়।। নিকটেতে বাজার সুন্দর সরোব-द्र। अनुमानि इत्व कान विथा उ महत ॥ अइथान আহারাদি করি সমাপন। পশ্চাত গমন করা হই-বে তথন।। দেখিতেছি দিব্য ঠাই সুশোভন ময়। पिन कड कान अशा थाकित्व छ इस्।। **अउ** विन का ঞ্ন নগর প্রান্ত ভাগে।রাম বলা অত্থেতে যাইয়া বাস। মাগে।। নিকটেতে ছিল এক ময়রার বাটী। মিলিল তথার বাসা অতি পরিপাটী ।! বাসা হেরি ममागंत इत्रिक्त गर्गा (मङ्थात मान शुका किन ममालन ।। दना भिन राष्ट्रे कदत्र क्रिन तकन । लाज-

नाम উভযান উত্য ব্যঞ্জन।। রাম আসি চারি থানি পাত করে দিল। নাগর ছেরিয়া ভাবে বিপদ ঘটিল।। দাস হয়েছিনু তবু সেও ভাল ছিল। এবে वृक्षि जाि जल मकल मिलत। कि लानि जाभाद्र যদি বলে থাইবায়। কার ভাত থাব বড় ঘটাইল माया। अहे यक नागद्र कतिए विद्युहना । यूह्रिकर शास्त्र वृ (अ जिनका।। ताकताला 6ि छि उ इड्रेन मत्न मत्न। कारल ताथि याश यामि थाहेव (क्म-নে।। করিল ছ্লনা এক ভেবে বল্লাণ। করিতে প-তির পাতে প্রসাদ ভক্ষণ। অনতর ওহে শঠ বলে **ডাক দিল।শঠ ভা**বে শঠভা লাখার যুচাইল।।পাছে **थहे यह भारत (थ**एक निरंक होत्र १ (क्टर हिस्स चाळा विन निकारेटङ गास ॥ नपाशत काइ अह र्हेदा ए भाज। या इस जा पिया पूछे। (थरस नक ভাত।। नृजन मानुष छिन सामादित ठाँहै। (छामा-त (जाकन विना (क बटनटा थारे।। भाठे वटन धति পায় ক্ষমা কর প্রভূ। অন্যের রক্ষন আমি নাহি খাই কভু॥ আজ্ঞা দেহ নিজে রান্ধি করিব ভোজন। সদা-गत छनि करङ् ७ यात (कथन।। यात्रात मानुष छिन রহ মোর পাশ। মোর ভাত নাথাইলে হবে উপ-राम ॥ मपागत का ि তा उ खन । भाव ना है।

कि कि हैशाउँ मठे वन पिथि छाई।। (माहिनी यथन (त्रॅं १४ पिय़ा ছिल ভाउ। उथन मा रेमल उत्र काष्ट्रियादव भाज।। ताज याना रुख (मिक जामा रेट्ट वड़। नागत स्थिनशा ७ एस रेट्न जड़कड़।। मुख वल बाका बाका उत्व श्रमु थाहै। मपागद বলে এ কাজের কথা ভাই।৷ যত করে পরিহাস নাহি বৃঝে তায়। যুবরাজ ভেল২ চায় আর থায়।। রতি মতি রাম বলা বেশে থেকে পাশে। যুরকের ভাব (परथ यूथ हित्य श्राम।। यूबाइ (डाजन रेश्टन পরে গৌরী সূতা। সেই পাতে বৈদে থেতে হয়ে र्यगुजा। नित्रियशा नागत चाक्यों रूप्स क्या। अ कियन क्या मनागत यहा नया। चानि च्ठा छिन ভতা থাও মম পাতে। এ কোন বিধান ক্ষম কহি याज़ हाटा ॥ विठातिल हैएथ भात अभनाष र्दि। (नोक भार्य (जाबाद कन ए नारक करव।। मिषागत (२८म करह स्वन मठेताक। (थएउ निज्जा-নের উচ্ছিষ্ট নাহি লাজা।। যুবক কহিল প্রভু করি निद्वपन। (गाँदा किन गठेताक कत मत्याधन।। मपा गत करह खिम कतिरन रच कर्य। मठे भिरतामिन किना वृत्य (पथ मर्गा। विष्णय उः गठ विन छ। किछ (जागाया। अनकात विर्द्ध आगात नब्दा भाषा।

क्रियं का का किया किया कि का स्वया का कथा ना বুঝিয়া জ্ঞান হত।। অনন্তর হরষিত হয়ে রসবতী। আপনি ভোজন কৈল আর রতি মতি॥ ভোজনা-ত্তে মুখশুদ্ধি নিঠা গুয়া পাণ। যোগাইল রতি মতি यूवर्जात शाना ताकवाना (छाटेर वीषा वाक्ति जाय। चारश पिया युवदक चार्ति (नव थाया। युववन करह প্রভূএকি বিড়ম্বন। যোরে বীড়া বান্ধি দেহ কিসের कार्तना। वादर चामि इत्थ चलताथी इइ। (यद्इक আমি তব দাস বই নই।। নৃতন মানুষ তমি সদাগর কর।পাণ ওয়া তোমারে অত্যেতে দিতে হয়।। ছ-नन। दुक्टिक नादत कात्र अनिवंदत । नागती है कि-তে हारम ভाব हरत्र जात्र ।। गृत्र बारक एउटक काली-ष्यात्र करिन। छिम कि वृतिरद नाती जिलाक इनिम।।

ষ্পথ কান্ত সদাগরের নিকট হৈতে মনোহরের দাসত্ব মোচন।।

पीर्घाविलपी ॥ नया निक धान कान्न, (मरक मणान्त्र कान्न, कान्नन कान्न कान्न कान्न कान्न कान्न कान्न कान्न कान्न कारक, त्राह्म मणी मूर्थन त्राह्म त्राह्म कान्न कार्या प्रकार प्रवास कार्या कार्या

274

हरन देवन छत्र। निक्वा एउटन छन विन मूर्थ ॥ मा भन्न डिठिन भरत्र, मागती मुप्डि करत्र, भठे विन किन সংখাধন। আজ্ঞা দিয়া সদাগরে, যুবরাজ যোড় करत्र, मां एष्ट्रेन चामिया उथन।। (म को जूक पिथ-याम् अभ वना काष्ट्र याम वनत वनन (एक श्राम । मपाशद मत्नाश्रद्धः निव्रथिया मत्नाश्रद्धः রাগ রহ মনে নাহি আদে ।৷ সাত পাঁচ ভেবে পরে, वनिरादा युवतदाः अनुमि पिया निष्क काट्छ । मन्दर्व नुथायामः केन नाना পतिहाम, मन्दर वामना यत बाह्य ।। कत्था भक्थान भरत, यूव कि कामा यहा, अन माठे वहन यामात । मुन्दत (पथिए পাই, বল দেখি এই ঠাই, আসিয়াছি কার অধিকার वर पिन यूववत, (उक्तिया यखत्र घत्र, यदन जात नाहि ছিল তায়। শুনিয়া ধনীর ধুনি, নাগর কংছ অমনি, नाहिकानि बाइन् (काषाया। अन्त्री बळाउ आयः উত্তর করিল ভায়, এই যে ময়রার বাটী বাসা। ম-মুরাণী নাকি তার, কপে গুণে চমৎকার, ডাক তা-(त्र कत्रिया जागामा॥ (म এथनि मविष्मयः) वनिद्व এ কারদেশ, উদ্দেশ হইবে ভাল করি। আসিয়াছি এक ठाँई, ब्लाब खत्न ताथा ठाई, लुनर्बात यम्डिन छ-छति।। भूवण कतिया वानी, मसतानी मसतानी, वतन

छाक पिस युववत। (क छात्क किरमत सामि, विल-छिर मात्री, डेउतिन यथा वामा घत ॥ मुन्नती किछा-সাকরে, আসিয়াছি যে নগরে, ময়রাণি এ নগর कात्र। अनि मয়য়ाणी कয়৽ नाहि कान महानয়ৢ (भी॰ बीकाख नाट्मट बाजाब ॥ नृश मर्ब खन्याम, काक्ष्म नगत नाम, महरदब मर्च लाएक জारन। चि चि चर्न-क्र ठैंकि, ज्रुटन उनना नाहे, পूबलत भूती शति भारत।। पुरे शुक कृशिक्ति, वर अर्थ अपवीत अक কন্যা নিরূপমা রূপে। বিভা করি পতি তার, দেশে ना चाइन चात्र, विद्यकी रहेन पूर्णर ॥ मताहत्र নাম জার, রূপে লজ্জা পার মার, গুণ ধাম ভুপতির मुण। **चक्र गर्न (द्राट) घ**द्र- मृविध्याक (मनगद्र, विद-রিয়া কহিতে অভুত ॥ নৃপ গৌরীসূতা পরে ।। (ह्द्र (म मत्नाह्द्र, हह्या ए की व मृ उ थाय। क्रू कृषि क्लूमया। पिका ताजि ममादियाँ। धनी (कंटम गड़ागड़ि यात्र।। अनिनु इनानी छन, वटन थाटक मर्ब-कन, वित्रह अवन रुद्य जाता की च रहेशा हि (पर) निकटि याईटल किर, वात्रप स्टबट्ह मवाकात्र ॥ রোগ তাঁর যে প্রকার, বুঝি রক্ষা পাওয়া ভার, এই बान स्थित सनद्रद्य । कर्निया आकि छाई, अथन स-कार्या याहे, अब शब कथा थारक इरव ॥ मयुदानी

এত বলি, উঠিয়া ঘাইল চলি, যুবার শুনিয়া পড়ে मत्न। मड्ड किन मित्रिय, এउ वर्षे (मर्वे प्रमा) व्यारशना ि निनु पद्रणात्।। या र्छेक मह नाण, वा शि যে হয়েছি দাস, যদ্যপি চিনিতে কেহপারে । ঘটি-বে বিষম দায়, উত্তর কি দিব তায়, জল মান যাবে ছার থারে।। এতে ত খশুর বাটী, দুঃথী হয়ে পরি-পাটী, আদে যায় যথা শক্তি যার। আমি ভূপতি তনয়, সবে জানে পরিচয়, একি জালা হইল আমা त ॥ रल रफ् रजमान, अधन मखुम मान, याहा আছে কি রূপেরাথিব। দাসতু মোচন হয়, তবে उ मकन द्रया अपाधव यानिया (पश्चिव ॥ अहे कथ ভাবে রায়, নাগরী বুঝিহা তায়, বলে শঠ ভাবিছ कि वटि । वटन शिन बशुदागी दाजा नाकि वफ् मानी, हटन याहे जाहाब निकटि ॥ य पटन य উতরয়, সাক্ষাত করিতে হয়, দেশাধিপতির সঙ্গে আগে। তবে ভাল শোভা পায়, যুবক শুনিয়া जाया म्वरनरा वक् मम नारम ॥ मृत्य वरन वातर, রাজার সাক্ষাতে আরু কিব। ফল হবে মহাশয়। विलय रहेरत (भाग, ठल चार्शनात (मन, वृक्षिया) कत-হ্যাহাহ্য়।। धनी कटह (म किंक्न), একটা দেশের ভূপ, যুক্তি বটে দরশন করা। কিসে এত তাড়াতাড়ি,

भाषां याहेर वाष्ट्री, जुमि भाक्त भटक हन जुवा।। धनी (इन यं क क्य़, नाशव विभव इय़, व्यवस्माद्य পदि-হরি লাজ। বিশুর বিনয় করি, প্রভুর চরণে ধরি, ক-हिट्छ नागिन युवजाङ्गा। ममागत महानय, कहि-বারে ভয় হয়, জান ত আখার পরিচয়। নৃপতিকে দরশন, করিব না কদাচন বেহেতু খণ্ডর মোর रुग्न ।। পूटकं मद किर्गाष्ट्रि, अदब मान बदग्न आहि, প্রকাশিলে লক্ষা বড় হবে। ঘেষন কুকর্ম কৈনু, তার मा माजा देव मुर्दाध मान यक्ति शहक उत्हा जाल-निउ मान्। मान्। कद्ध (मध्य अनुभानः अलनान इसकि ना र्या अनिकां उटिन कवा अटल वटन वटि र्याः ज्ञि धनशास्त्र जनस्।। नतन हित्य त्यात कारहः কিছুং মনে আছে, একি সেই কাঞ্চন নগর। ভূপতির কি দুহিতা, তব সঙ্গে বিবাহিতা, হুইলেন হাঁছে गठेवत ।। युव करह छेक एहे, उद कार्छ मिथ्रा कहे। (रन णिक कि बार्ष्ड बाबात । मठा२ महागय, देहन মোর পরিণয়, সঙ্গে এই রাজার সুতার ৷৷ অত এব कमा (पर्, मद्र याद चात (करू, चामिना याहैव न्थ्याय। ভটে রাথে ভদ্রমান, মহাশয় বুলিয়ান, नुत्वा (पथ विनया कि काम।। তবে यपि कृता कति। যাহ যোরে পরিছরি, দাসত্ত করিয়া বিলোচন। চির

काम त्र धाती, भखत भाखड़ी नाती, खबकात कति पद्रणन ।। नागद्री खनिया कया, पामजु (माहन रस, यि छन বছন আ্মার। জা নতুবা চির্দিন, থাকি-(द सम चरीन, जूनिजित रहेता कुमात्र ॥ छनि सत्र ता-नी मूर्था, नाती उरेर पुःरथ, विभी छ स्ट्राइ कलवद्र। সুবর্ণ ঘুচিয়া কালা, হইয়াছে নৃপবালা, শ্যানাকি धतात्र उभत्र ।। नाहि तू अ धर्माधर्म, हिर এकि छव कर्म, রাজপুত্র শুনিবারে পাই।পড়িয়।যে।হিনী মত্র।মো रिनी (न मृत मंत्र, व (माजना काथा (भात जाई।। তেজিসাধী রমনীরে, ভাসিলে সেপ্রেমনীরে, একর্ম কি ভদ্রবোকে করে। শুনিলে ত নিজকত্তে, ময়রাণী যত বর্স্তে, আমি শুনে তাপিত অন্তরে ॥ এ দুঃথ ষদ্যপি তার, মুচাও নৃপকুমার, তবে ভাঁহে ছেড়ে मिटल भाति। यवा बदन किया काम, ताम बदन हाम द्वार, कि कार्य। अयन मुमिञ्जाती ॥ व ए यद मिक अठे। অতিশয় বুদ্ধি মোটা, নতুবা যুবতী ভার্য্য ছাড়ি। হরিশ নৃণতি সুতা, এত কি সুৰূপ যুতা দাসী रमछ थोटक जाते वाड़ी।। (इएड़े (पर् अर्हे परछ, कि चात्र रहेरव परक भिट्ह ७८क त्राथिया कि हरव । বলা বলে তা কি হয়, সদাগর মহাশয়, একরার निध्यन उद्या यिन म द्राक्ता द्राना, नाहि

পায় কোন জালা। উহার কারণে পুনর্বার । তবে ছ। पृष्कि वटहे, चार उव मिकटहे, क्क़क धक्र विकात।। अनि कर्द्रसूर्णमुक, इस्स विक पृथ्थ যুত, কেন মোরে কর তিরফার। আগে না বুরিয়া मर्गा कतियाहि मन्न कर्या, अथन कि इत्व वन जात।। मपाश्व महाभव, रगक्य बादम्भ ह्यु, अक्वाब सह যদি লবে। নহে কর অনুভব, রাথ ছাড় পার मेव, কিন্ত মোরে রাখিলে কি হবে ॥ দদাগর শুনি তায় হইয়া দুঃথিত প্রায়, লিথিয়া লইল একর।র।রাথি-তে নিশান আর• অফুরী লইল তার, ভিনজনে ক-রিয়া বিচার ॥ছাড়ি দিল অন্তরে নাগর হরিষা-ন্তরে, প্রভুর চরণে কৈল নতি। ঐকালীক নার কয়, যুবরাজ মহাশয়, এত ছিল তোমার দুর্গতি।।

श्राव ॥ मनागव किवन मामज विद्याहन । प्रक रहेन अि हति प्रति प्राप्त । प्रक श्राव ॥ मनागव किवन ॥ याहेट अख्वान द्य याद श्राक्ष कादा। दिन कृषा विना कि ख याहेट जनागा द्या हिखाय आक्रन देश जाविया जेशाय । जात (मृद्य यूवजी वृक्षित शाद जाय ॥ मृद्ये मुख्य कित करह बाद बाद । कि आंत्र जावि वन निकट जे श्रामात ॥ यिन कान अजिलाय शाक्य जाना ॥ ।

विविद्या मित्रिंग कर अनिजात ॥ गठेकर मरा-শর্করি নিবেদন। সর্ব লোকে জানে আমি রা-कार नम्पन ।। चाहिलाम এইकरा चारानात्र माम। व चवङ्। (मध्ये। (नाक इत्व छे शहाम ॥ च छ वव প্রাভু যদি অনুমতি হয়। কিছু দিন জন্য তবে যাই निकानस्य ॥ मुङ् रुस्य खदर्भस्य व्यापनात्र (दर्भ । चामिय न ख्या नाही लटश यात (परम ॥ मपाशत (हरम वरल (म कि कजू इस । आबि फिर याहा छाह কিবা তার ভয় ।। অত্যে তুমি যাও নিজ রমণীর পাশ। গমন করি ও শেষে আপনার বাদ।। নারী তব অনুভব করে যত জ্বালা। ময়রাণী কৈল তার সর্জ্ড বর্জ কালা ।। এ যন্ত্রণা আগে তার করহ বিনা-ना । गल्का (म हिन्नकान त्रव्य (यात्र माम ॥ विरम्य বনিতা তব কহিবে যথন। তথন যাইতে পাবে আ-পন ভবন।বেম যদি সন্তোষ নাহি হয় ভবোপরে। পাইবে বিশেষ শান্তি প্রকাশিলে পরে ৷৷ এই মত मिविटमेष वटन करम पिया। ताम वना पूरे अपन करि न फाकिया।। काथा अद्भ ताम वना चाइम निक-টে। রাজ সম সাজ করি দেহ এই নটে।। আনিয়া ভরম্প এক দেহ তারে আর। নাহয় কিঞ্চিত ক্ষতি स्ट्रेट्य आभात्र ॥ कि कति वित्रष्ट् मति नात्री अक

জন। অবশ্য উচিত করা শক্তি যেমন। রাগ বলা দুই জন নিকটেতে ছিল।ইক্ষিতে বুৰিয়া মৰ্ঘ হা-मिटल नानिना। मद्भर जामन्ति छ रुद्ध ज्यदम्यः। भागरत्रत्र करत्र पिल भरनाइत (तम्।। भानि पिल है। क्र खंदक मत्नास्त्र। बाखा नत्त्र बाद्राह्य केन মনোহর। মারিল চাবুক জন্ম তার। জিনি যায়। যুবক ভাবিল মনে আরকেবা পায় ৷৷ হাটবাট এড়া-ইয়া শতর আলয়। আঁথির পলক মধ্যে অশ্ব উত-ब्रह्म ॥ नामिया छत्रक् टेन्ट्ड घाटब छेशनिक । निक्य চিনিয়া ভূপে জানায় ভুৱিত ॥ গুনি যামাতার আ-পমন সমাচার। বৃপতির হৈল মনে আনন্দ অপা: न्ना। व्याशनि छेठिया व्यामि शद्द मदनास्द्र । ्दमा-**ইল সভামধ্যে অতি সমাদরে।। যুবরাজে নয়নে** ক্রিয়া দরশন। সভাস্ত দকলে হৈল হর্ষিত মন।। नद्रभिक्त मस्याधिया युववरत्र भरत । विखद्र किन থেদ বৰ্ম্ভনাকে করে।। ব্লীতি মত প্রত্যুত্তর দিল यतार्त । ठ उदात ठा खता महंम। यतार्त ॥ जूम-তি তৎপর ঘামাতার আনিবার। অভংপুরে পাঠা-इन ७७ ममाठाता। शूत्रनाती गरा मरन इत्य यान-न्ति । नित्रथि उपुरक भवारक छे भनी छ ॥ नृभ আজা পেয়ে এথা যত লোক জন। করিতে লাগিল

माना मक्षाहरा।। नाना नत्म क्ष वाप्रकृत वाप्र क्टत्र। यहा कालाइल टेइल नगत छिख्ता। यत्नाहत (म्राप्ट चाइन श्नर्वात । अनिया श्रमक शृक्ष भन मराकात्रा अयुनि नृष्ठा भी एक का भिन महेत । अ थारनट्छ विवत्र । छन जात शत ॥ मिन मूथी युव-ज्ञादक कतिया विषाय। प्रांख मांज माद्य निक निरक ভনে যায়। আছিল গোপন পথ থিড়কীর ছারে। (मई भएष প্রবেশিল পুরের মাঝারে।। পুরুষের পোষাক ত্রায় পরিহ্রি। রমণীর বেশ ভ্যা পরিল मुम्बती।। ति गिं गिंह में पानी भू बें कात्र गेउ। (प-াথিবারে থেয়ে আনে দথীগণ যত।। নৃপবালা পীড়া ছলা করিয়া প্রকাশ। পতি অনেুখণে গিয়াছিল ছাড়ি বাস।। প্রকাশ ইইলে বার্তাকি জানি কি হয়। ছिল मधी गरात्र चल्रदा क्छ छय ॥ (म छय युहिल षाकि मणी पत्रभारत। अगारत भनीत्क मत्त भूव किञ्चरन।। ताञ्जदाना श्रुष्टमरन कत्रि चानीकाए। किछामिल नवाकात जनाल महाप्राप्त मधी करह ठी। ब्द्रकन्। त्र म्यब्दल। शारगर चाहि (माद्रा ब्रम्टन मकरम ॥ এই क्ष वाद्यः कर्यायक्षन । क्रिन छे छः इ शक्क (क करत मुर्खन।। अनखन युव्दकन आमान मधारम। मकलात पछत्र श्रित महाद्वारम ॥ माजा-

हैट वामत्र क्रम्ट मधी माटकः क्रा प्रमा स्थारन যে বস্তু ভাল সাজে।। থাদ্য ক্রব্য বিস্তর করিল আয়োজন। নাগর আদিয়া সুথে করিবে ভোজ-न।। नाशत्रीदककदत्र मिल मदनाचेत्र (वणा मदनाच्त्र (य (वर्ग जूनिया) कृदव (वन्।। विमिन जूनिक वाना शामक उभरत । यका भाग ति यात्र क्षे पृष्टि करत।। मधी गरन हातिनारम माष्ट्राइया तरह। यउ শোভা হৈল এক মুখে কেবা करह।। রাণীর निकछि পরে সখী এক জন। করিল শশির পীড়ারোগ্য নি-दिष्न। निक्नीत (ताश मुख चामा यामाछात । भुवत्य मधीत्क हात्र देवन शूतकात । निकारन मानी चारक हतन उरा उरा। इहेन चानम्य छान् इपद्म छ मश्रा कित्र यानि मर्हती पिन मनाहाद । भनित्र **इहेन छनि यानक यभात।** क्रायर विखावती दिन উপনীত। রাজবালা নির্থি ছিল্ডণ পুলকিত।। এথা-নেতে যুবরাজ মনোহর রায়। অই রূপ অপক্প হর-विज काय ॥ न् भनत् कित्र नाना कर्था भक्थन। निज् কর্ম আদি যত কৈল সমাপন।। নরপতি গৌরীকান্ত भत्नः कृत्ता याभाज। बाइन भात वह पिन भएत।। অন্তঃপুরে পাঠাইলে হয় যুক্তি মত। যেছেও সে ত-নয়া দুঃথিত। অবিরত ।। এত ভাবি নভা ভাৰি পুরে

226

अविभिन्ना। युवक जाकिए मानी पिन भागे। इसा।। छन्दम् । वह भाव पिया पिन छाय । या भाजाय मुजा-ं त्र महत्व वटस्यास्।। मानी चानि मत्नाह्दत्र करह वाहित्त्र छ। एवम ठावतकीत पत्त नत्य (यएछ।। অতএব শুন ওছে ঠাসর যামাই। এথানে বসিয়া আর প্রয়োজন নাই।। রায় কছে তোমার ঠাস্বর-কীর। জোরে অনায়ানে বেঁধে লয়ে যেতে পার (बाद्य ॥ ध्रावेन उ छाहाट विक्रि कि कृ नाइ। काञ्ज कि रम नव छल महर अहे शाहै।। এত नं निकें छिन तमिक युवतास । मधी नत्न त्राजनिक ं नीत काष्ट्र शाय ।। (पश्चिम मि भिन्यूयो इत्य मुम-জ্জিতা।পালকে বসিয়া আছে সঙ্গিনী বেপ্তিতা।। काष्ट्र यानि रामिश्विम युवद्राय। জिख्डामिन धनी त अणल बात जाया। मुन्दती करिल ७ १२ मर्ट निर्दाः মণি। তোমার ভালতে ভাল আছে এ রমণী।। পর দুঃথে দুঃথ পরাধীনা প্রেমদার। পরে সুথ দিলে পুন: সুথ হয় তার !৷ অতএব ইহাতে জিজ্ঞাসা কিবা খার। আপনি যেমন আছ তেমনি আমার।। তবে যে এ ৰূপ কথা সুধালে আমায়। কে বুৰিতে পারি-(व শटरेंब्र मर्रेडाय़।। এই क्षेत्र वात्र वात्र मर्रे मध्याः ध्दन। युवताक चरार्छ इड्रेन भदन गदन।। काछ (मादत

(इरथि इन मर्ट नाटम पात्र । कि कानि वा खशु कथा পেয়েছে প্রকাশ ॥ যাহ্উক কৌশলে শুনিতে হবে थाही। यमः शिकानिया थाटक मिनाइन माही।। विष्येजः मपागत यथन धामास । पामञ् विमुक कत्रिकतिन विषाय ॥ वात्रश्र भारत (कन किन এমন। সভোষ করিব। নিজ নায়িকার মন।। যথন याहेट पटन इहेट यामात । यनुम्हि तेनट পूनः किह्न छाहात ॥ इहात कातन किता ना जानि निष्ठया अनिया व्यविधात इत्यट्ट मण्यय ॥ वन थिक ख खटन भारत नातीय दिवद है। किन ने नागरवा षखत जारभ मरन्।। विरमय उपर अत कानिव कि क्रण। जाविन विखन (इन मूत नम्जूण।। यमछन युव-তীর ক্থার উত্তরে। কহিতে আগিল রায় মুথে शमा करता। कि कहिल्ल आन खिरा छत्न शमि পায়। সুমঞ্ল সুধালে কি শঠ বল তায়।। নাহি कानि व (परभंत विज्ञात क्यम । अनिया मुम्मती भूनः किह्ह वहन।। खन ७८२ প্রাণ नाथ कि माय আমার। তমি যে হয়েছ শঠ হয়েছে প্রচার ।। মনেং शुर्व (पथ ভाकिया कि काम। नाकी याज वला याम मन चात्र त्राम।। धनी यञ ছल करत करह এই मछ। नाशव छनिया इस हिछायुक उठा। शूनवीव करह 2.04

अपि अन ला ननना। (अदम हुदा वन चामि ना वृक्षि इनना ॥ धनी करर किरुजाम विस्मिष कारिमी। यि रहेजाय चानि । अस्नारमाहिनी ॥ उद्य यपि निजास ना वृत्य जुव भन । वना यादव अब भरत वृत्य-(व जथन।। धनी कर्छ यज कथा पूरे भारन जात। নাপায় ধরিতে ছুঁতে নাগর যাহার ।। যদি ঘরে কোন কথা করি এক মানে। আর মানে শশি मुथी करत्र विष्यादन ।। नागरत्र कि छ इत्थ मत्मह बाड़िन। नादी भाद वृक्ति वा छिहातिनी इहेन।। वुकि (मह मपानव मर्नांभ किन। (माव नाती (नरन) रेनेटन (कन अछ किल।। वनिजात भूरथ चाए बाका শুনি তায়। ভুঞ্চা না চ্ইলে ছেন কথা কোথা পায়।। কোধ সম্বরণ শেষে না পারি করিতে। ডাকিয়া কা-खाय बाय नाभिन कहिएक ।। छन ना मुम्मनि उव ছाড़ হাব ভাব। সলটা হয়েছ তুমি বুৰিলাম ভাব।। জানি আগে বিশেষ বৃত্তান্ত আমি তার। সমুচিত ' দিব শান্তি রাথে সাধ্য কার।। এত বলি কোথে পুন: ना करिया कथा। अमनि वाहित्त उट्ठे बाटन देइटे छथा।। निर्दाधशा मिन्यूथी हिन्छि अभाव। त्रि बिक करह इत्थि छ। वना कि चात्र ॥ त्राम वना उथनि माञ्जिल शुनर्वात । ममागत (वण कति मिल नामि-

कात्र ॥ शूत्र देइ ए ७ ७ १ १ थ वाहित इहेश। नाशदात्र निक छि उ जिल्ला शिया। निविधिया भरना इब देशन मणिक । मस्यायिया मित्रियात याईन जुति ।। সদাগরে তদতে ডাকিয়া ইশারার। অতি সংকা-शन अक खारन न द्या यात्र ॥ कट ह अन अट माशत সহাশয়। এথা আগমন তব উচিত নাহয়।। যেহেত म ७ ७ कथा इड्रेंच अहाद। स्थ (मधार्टि जात र्ट्रेद वामातः।। अक वाह गाक कतियाह (यह कदन। পুনর্বার অপমান করিবে কেমনে ৷৷ সদাগর কহে যাহ। শুনিবারে পাই। কিছুতে ভোষার ভায় স্বার भाक नाइ।। त्रभगीत्क न कि उन कात्य करत जत। किश्याष्ट्रिमिष्टि व्यवाका विख्या। (काषा खिम সন্তোষ করিব। গিয়া তায়। উন্নতিয়া একি কথা वनर् भाषाग्रा। युवद्राक भूवन कविद्रा जीज रहा। मृत्य द्रम चाळार (मिक महानय ।। यदन ভाবে नमा গর শুনিল কেমনে ৷ এই মাত্র কৈ বুকেবে কথোপ-কথনে ।। অন্তঃপুরে তাহে জানি পাথী যেতে নারে। এর মধ্যে নিশিতে কে জানাইল তারে॥ भवत्नद्य काल्डक नाशिन किर्वाया क्रमा कव नश्मास पत्रि जव भारा।। व्यक्त कर क्रिक्सि नाहि करि-(वन রোষ। আমি उव च्छा আছে পদে भरि

দোষ। কিন্তু এক কথা প্রভুঞ্জিজ্ঞাদি ভোমায়। वथर् कीवन बका करवा चामाय ।। नमानब कटर् खिनि वन मिथि उद्य । कतिव विहादि । स्य एवं ৰূপ হবে।। রায় কহে এই মাত্র কথায়ং। ক্রোধ করি-য়াছি আমি নিজ বনিতায়।। জানিলেন আপনি এ কথা কি প্রকার। পায় ধরি মহাশয় করহ প্রচার।! काछ करह किছु हानि नाहि कहिवात। यपि छव ना द्वीरक ना कर्षे वन बाद्र।। द्वास वटन करू वना व उ नहर (कात । छ। इतन उ उ व काह्य तथा नाहि भात्र।। मुद्रग कत्रिया धनी वत्न ७८६ काछ । क्रमा কর অপরাধ আমি নহি কান্তা। আমি তব দাসী হই शोदी न्भ भूजा। जव नामिका छ माजि रु स पूर्थ युजा।। बाभ दना नाटम अहे चनु ठब घस । अबा (मई রতি মতি দাদী মোর হয়।। এত বলি পুরুষের माक পরিহরি। उथनि मुन्दरी (यण धतिल मून्दरी।। द्राय कोट्ट मनागद Dভदেत (শय। यज वदन ध्रि: লেক রনণার বেশ। নারা বেশে যবে মোরে বিভা করে ছিল। বাসরেতে সেই দিন একপ হইল।। পুন-ক্ষার সেই ৰূপ নির্থি সকল। এত ভাবি বলে প্রভু কেন কর ছল ।। ধনী বলে প্রভু নহি তুমি মোর প্রভাপত। ম ना হবে नाहि (प्रथाहेल क्षू ॥ এउ

विन प्रथाय आशन कटनवट्दा विटम्य उः द्राम वन मात्री (वन धरत ।। जिन कारन मात्री करस विमन यथ-ন। ঠাহরিয়া নির্থিষ্। চিনিল তথন ।। হতবৃদ্ধি रुष्या तरिन युनदास । समी वटन क्य नाथ धति उव लाहा। विख्त थ्रणः मा (भारय कति त्रमगीरत । **विद्या**-ब नागत आंत नारि हाटक् किरत्। अवस्थास दिन-তায় দিল অনুমতি। প্রানেশিতে অভঃপুরে অতি भौध्याजि॥ बाद्धां भाव एश शास शुर्व अत्यानन। নাগর এ দিক দিয়া উতিয়া আইল ।। পতি কোধ भक्का कति हिला एक वर्षा। जाय तार्थ युवान नाग-র গুণমণি।। সান্তুনা করিয়া লেলেক ছিল কান্তায়। ভাবনা कि প্রাণপ্রিয়ে বলচ্ আমার। যে কর্ম ক রিলে ভূমি করে কার বাপ। দাফ দিতে হ্য ইথে रैकरम শত পাপ।। धना उव युधि वन धना ति মতি। ধন্য হইয়াছি আমি হরে তর পতি।। অন खत पुरे छाटन यानटमा छामिन। गुथ हिटल मधीलटन शमिए नागिन।। मथी প্রতি ইছিতে কহিল শশী পরে। জল পানী ত্রব্য আনি আয়োজন করে।। व्याख्डामाञ नाना क्रवर व्यादन (महक्षणा नागद नागः ती भूटश कदिन छक्ता। नवाम वाद्यन वाषा भूवद्रन थाना। (यागाइन यानि शद्य बाक्तरात वाना।।

च्छाञ्चन क्रिया जार्। युवक युवजी। शाल एक छेठिया देवरम जिनि काम इंछि।। अभी भरत मिठा भाग फिल करत्र करत्। (करु पिन जामान मानिया युववरद्रा। তার পরে আরম্ভ করিল বাদ্য গীত। রাজ পুত্র রাজকন্যাশুনি পুলফিত ৷৷ একে সে ব্যন্তকাল কাল है हिज साम। स्वाल कल। मह नानी बाकारन श्रकान।। তাহে ছাড়ে नाना यछ मुनधुत सुत। खन। भरत কিবা শুনে মুখ সুরাস্র।। আতর গোলাপ চ্য়া গঙ্কে আরিবার। মদন ভবন সম হয়েছে আগার।। নাগর नागरी भन्न देव काम मध्य । निव्रथिया मधीगए। शकायन करता। कामगाश ममाशन किल पुरुक्तरन। चावण्डक नाहि जात विष्णय वर्ष्टरन ।। नित्रयन खनमधी चानि मिन शरत। प्रेकन राज मूथ श्रका-লন করে। করে২ তাবুল যোগায় আরবার। শয়ন कतिल द्राप्त मर् नाशिकात ॥ छामत वाजन चटक करत्र महत्रो । महामुख निकास পোहास विভा-বরী ।। প্রভাতে উঠিয়া রায় বাহিরে আইল। অপা-त जामन्य छद्र दिवा काष्ट्रोइन ॥ शूनर्वात्र मूथकत्र चाइन यामिनी। निष्टा (शन त्राय कारन कतिया काबिनौ ॥ अहेक्रन महा मूर्थ किছू पिन याय । शिकाणीव्यमात्र करह खन भूनद्वाय ॥

ष्यथ् भटनाटमाहिनीत्र वित्र ह वर्छ न। ॥

बद्धा कांश्र कृत्या कारा श्रास कारा वर्षा कर्या. इतिदर्भ। (य फिटन तम, नभी अतम, निका फिट्म, इ. तित्य।। मुःशी धनी, कदा ध,नी, मिन मनि, नगरत । वष् মর, সদাগর, গেল মর, কেন রে ।। এই কথা, যথা তথা, শুনি তথা, শুবংগ। মোহিনীয়, প্রেম নীর, বহে ছির, नयदन्।।। कटर बडि, नर्छ्त्रि, किनाक्ति, बेनवा। घ-रनाष्ट्रा, कान स्टा, नित्न स्टा, सम्बा ।। (काशाकात्र, দুরাচার, বিধাতার, ফণিকে। এল কান্ত, নিল কান্ত, নীলকান্ত মণিকে ৷৷ ওগোলই, যত সই, বল কই, কারে গো। ভাবি তাই, কোখা যাই, কোধা পাই, তারে (गा।। जाश विरम, अ मदीरम, निश्चि प्रिटम, टह्यिए । काल (भट्य, गांथा (थट्य, चित्र (४८य, धित्रिट्य ।। পিক **षरे,** প্রাণ্ मই, कर वहे, कर्ट्ना। (करव का नि, थाफि कानि गानागानि मह्ना। यनि शुनः গুণ২, করি খুন, করিছে। ত্রিভুবন, হেরি বন, চক্ষে वन, बिद्ध ।। जान थाकी, इकवाकी, आप वाकि, (इरथट्छ। विना चेना, कहर्निन, मृत्य विय, (भदय-ছে।। মারহ, করে মার, অনিবার, তাল গো। নাহি তাণ, উড়ে প্রাণ, জগৎ প্রাণ, দায় গো!৷ কত কই, एरगा महे, जामि महे, जामि (गा। (शन गान (पर

そのも

প্রাণ, দেহ প্রাণ, স্বামী গো।। তার লাগি, দুঃথভাগী, এ অভাগী, মল গো । একি দায়, প্রমদায়, প্রেম দায়, হলোগো ॥ কালা পালা, প্রাণ জালা, যত বালা, দহে গো। অবিরত, শতং, কেবা কত, কহে (भा ।। .(भटन कटन, चात जुटन, भज पटन, शाम গো। ডাক ডাকী, তাকা ডাকি, করে থাকি, পাশে (भा।। हाँ में हाँमी, शमिर,काट्ड चानि, हुद्ध (भा। र-निविक, वक दकी, वका विक, करत (गा।। हा धर, क्यू तन कारा, यलकारा, कवरणा। इंछ हरू, नाथ वर्रे, अ क छहै, मव গোমানে আমার, আমি তার, কেবা আর, আছেরে। নেই সার, বিনে আর, যাব কার, কাছে রে ৷৷ কোথা नाथ, कत्र माथ, अञ्चनाथ, नानिया । जुल हिरा, भद्र श्रिद्यः, (मथनिद्यः, चानियः)।। (भात्र पायः द्रमः बाय, कञ माम्र, महित्न। (मात्र हर्य, युवह्रय, नाती হয়ে, নহিলে।। গুণ যত, কব কত্ৰ, অবিরত, জাগি-ছে। প্রাণ নাশি, হের আসি, এবে দাসী, মাগিছে।। राय विधि, अकि विधि, पिया निधि, नर्दन । धिकर, गठ थिक, किमधिक, कहेरन।। এই मठ, অভিমত, थनी कछ, कहिल। नथी गर्ग, पृथ्य गर्ग, खरन मरन, দহিল।। অনন্তর, পরস্পার, দুঃথাত্তর, করিতে। যুক্তি করে, অভঃপরে, যুববরে, ধরিতে ৷৷ ভাবে ভায়,

भूनद्राश्च, काथा भाश, डाहाद्यः। दल निया, क्रिंश किया, भागे हैया, का हाद्यः।। हम्मुक्स, क्रिंश ड्रांश द्रम्मश्च, युवाद्यः। चानित्वक, निर्णा अक, वडिंद्र-क, ना भाद्यः।। पिन माग्न, मद्य डाह्म, अकथाश, क्रिंश (न। त्याहिनीक, ये छित्र, मिन्निह, वहत्यः।। यद-(न्य, डावि (वन, श्वरम्न), यात्रिशः।। निर्ध्य शांडि, डाद्य यांडि, मद्य छाडि, क्रिशाः।। (ध्रम-ड्द्र्स, श्वर शद्य, (न्य कद्य, (याहिनी। छन्तित्राश, हाद्य डाग्न, नृशकाश, मिन्नी।। धनी डाह्म, विन्य साश, शद्ध याश, निर्धत। कद्य कानी, श्वन जानि, मू ध्रमानी, निर्थत।।

अथ मरनो इरत्र निक्रे छम् यानात्र आगमन !। পরার।। পত্র শুনে স্থীগণে পুলকিত মন। শির नामा पिन थाम कतिया निथन॥ मरक्र उ सनाम তাহে মুদ্রাক্তিকরে।বলে কয়ে পত্রিক। চশ্বায় मिन পরে।। পত नस्य हन्याना পুরুষের সাজে। व्यविन्द युव्यद व्यानियात्त भाष्ट्र ॥ छान्यश উদেশে कानीत शम्जल। बाद्याहिया खत्रक ह निन अ कृ र्तन।। এ का है या नम यन आ मि नान। इन । উতরিল কাঞ্চন নগর সন্মিধান।। দেখিয়া নগর ধনী चिक পित्रिणाही। वामा कवित्वक এक मानिनीव ুবাটী।। নাম ভার কপবতী অতি কপবতী। ছোট काल एकाका छत्र शिवा ছिल পতि।। भनाय कारहत माना किवा पिव जून । (लिंही लाए। मिंथी कार्हा (थाना विषा कुन।। नामात छेनत बन नामा ज्ञम-किन। शतिथान पित्र माही छेशमा कि विन ॥ अह चा उ छे छ मना शमि अक शान । जा घुटन इ नार १२ ७ पुष्टिनान।। हन्प्याना यानिनौदक कति नित्री-कार। मुक्षाय अ कान एक वन विवत्रा। मुत्र कति-या वानी कथवडी कया (क वहे आश्रीन जारन कह নহাশয়।।পশ্চাত শুনিবে এথাকার সমাচার। শুনি ठण कर**र आमि माधूब समाव ॥ खन्याम न्**नमूड

भागहतः नाम । चागात প্রভুत কাছে করিভেন काम ॥ शनाइन ना विनया जीत्व व्यवस्थित। अज्ञान कतिया जात्र ज्या पण पण ।। या निनी अनिया दा-ণী হৈল চমৎকার। কহে এযে অপাৰূপ সমান ভো यात्र ११ नृष्णित नन्म न इस भटना इत साध । अयाका व ता-জ্ঞার যামাতা পুনরায়।। তাঁহার চাকরী করা বস্তব उन्हा अ (क्यन कथा किटन एटर महानेता। उन्हा कर्ष्ट् आर्ट्ट नाना कात्र १ इंश्य । टल (पश्चि (काशः আগে মনোহর রায় ৷৷ সত্য কি উল্লেড ভিন জান ला यानिनि। मठा कि (म किन विग्ना भ जा जानिन নী ৷! বল দেখি শুনি তবে একোন নহর ৷ কোন রাজা 🌡 এথাকার হয় দণ্ডবর।। কপবর্তী শ্বণ করিয়। ছেমে কয়। কাঞ্চন নগর এই শুন মহাশয় ।। গৌরীকান্ত बाद्य नारम अथानवर्गाछ। धरन मारन करन मीरन মুবিধ্যাত অতি ।। দুই পুত্র ভূপতির এক দাত্র कन्त्रा। मटत् कारन क्रिले खर्ग जिलूबरन धन्त्र !! बर्ब जात मिनायी मनी मूर्थ शारत। मत्नाइड विवास **করিয়াছিল তারে।। ও**ণ্থাম নূপতির তনর লেজন। (महे वृक्षि वहे यात कत्र चरन्यन।। (यदह विवाह করিরাজার সূতায়।বিবেক হইয়া ঘনে কোন দেশে যায়। কত দেশ বিদেশ ভুমণ করে ছিল। মত।

रदे छामात्र अञ्जूत काष्ट्र हिन ॥ शतिरमध्य व स्टिन चारेन भूनवीत्र। चम्राविध चाट्छ अथा जानि मन्। । मण्यमि जर कि श्रू थात्क श्रद्धाञ्जन। षनाशादम क्रिंट भातित्व पंत्रभन ॥ गामिनीत जूरश छरन এতেক वहन। हम्मु गामा देशम चाछि इब-विज मन।। युवात मक्तान रेशन चात्र किया छ।। (मह थारन मान शुका (ভाकन कर्रेश। (ভाकनाउ वर्-क्रग निकाय काष्ट्रोय। त्वना व्यवमाना (पथि উछिन जुतात ।। गानिनीत निकटि करिता यमखत। माका **७** क्रिंड हत्न मर् भरनार्त्र ॥ छेपनी ७ र्रा ताक तार्हीत पुरात । জिल्लामिन बाती क पूरात मना-छात्र।। करेश दिन बाजी मिविटमय विवन्ने। यूव जी পাইল যুবকের দরশন ।। জিজ্ঞানিল মনোহর काथा उत दामा धनी वटन शब (मध शाईदर अका-শ।। এত বলি পত্র দিল যুবকের করে । করিল বি-ন্তর থেদ পত্র পাঠ করে। অবশেষে নিজ্জনৈতে ডা-किया हन्पादत। मुथा हैन (करे। पिन अभव जामा-(त्र।। धनी कट्ट विल्लाति चलाव युवाद । ििनिटल ন।রিলে মোরে কি কহিব আর ।। চক্রমাল। নাম भात (जायात উप्पर्भ। भाहिनीत मधी जायि ভ्यि (परण्य ।। हिनिएं भात्रिम द्वारा निव्वथिया

তায়। नीवय रुष्या बट्र পড়িয়া লজায় য়য়য়য় (य कट्ट् मिक्टेर मू व हत्न। शूक्तरवत्न (वटन वनि जिनिय (कम्बन्।। इक्तमाना कर इहिर इमि छेशक्ता वक काल जूनिया इ मकन विवय ॥ (मरे जुनि (नई बानि इहें 5 क्याना। भागहन जब कारक (मह न भवाना।। যার লাগি কত দায় গণে ছিলে রার। যে ভোমারে निक (कारत मुन्दती माकास ॥ এवड नारकत कथा कारत वा अकोषि। हिनिएड गातिस्त ७एए यापि जात मामी॥ यार्छेक (न मकल भाता घाटव जाय। (क्यान चाइटन (मत्न कङ् तमताय।। बाह्य यत्न श-শ্লাত কহিব সব তার।বল সে কেমন আছে প্রেয়নী चा गात्र॥ धनि करश् भव भए ज्विशा इ मद। एवं करभ चाट्यन जिनिकत बन्जवा। जुजन इत्सद्य भगा भरना (भाहिनीत । তব त्रभ (ভবে চকে বছে প্রেমনীর ! (শन मम इइयाह् । जाना विष्कृष सिन वाय कतिन चटनक जाय (थप।। चारा छेरू गूर्भ रहकरत स्वर १ কিৰপে মিলন হবে ভাবে পুনরায়।। গোপন পিরী-उ बाद्र नाहि अरम्भन । विवाह कति उ लास कत्रिन मनन।। यदन कर्य फिल हन्मुमाना निक्नीद्र। सश्चता रेट्ट वन मत्नाटमाहिमीदि ॥ यामि निया

উপস্থিত হইব তথায়। মোর গলে মালা দিতে কহি বে তাহায়।। নভবা মিলনে আর না দেখি উপায়। শুনিধনী সাত পাঁচ ভেবে দিল সায়।। চত্রমালা এই কাপ পেয়ে উপদেশ। গমন করিল শেষে আপনার দেশ।। পুলকিত হইল নাগর মনেহ। শ্রিকালীসমার গ্রান্থ পদ্য দুদ্দে ভণে।।

चथ मन्दार्वत्र चरम् । श्रम ७ मन्दारमा दिनी त

চন্ডারে করি বিদায়, দাজিল রসিক রায়, আদি-् वाद्र बाशनात (मना। वित्नयकः देश्न घटन, छाई व कृ चापि छ तन, चात लिखा छननीत (कूम ॥ तक রাথিতে পারে আর, চিন্তিত নৃপসমার, জানাইল গৌরী ভূপবরে। লয়ে যেতে বনিভায়, নরপতি শুনি তায়, দায় দিল হরিষ অন্তরে॥ করি নানা আ याजन मद्य पिया लाक जन, नृथ भोतीकाछ य-वटमय। পাঠाইল ছহিতায়, মনোহর যুবরায়, या-बा करत्र (यर छ निक्क (मणा) वरल करत्र ७ इन इन्दर्न, या ति शाक्षिजीनम्बद्ध, चाद्राश्य क्रिन जत्रम्। मानि-मुखी निविकाञ्च, উঠिन হরিব কায়, मद्य भाग थाञ्च **छ्लं इट्स् ११ अङ्ग्रेश नाना (एम, छेड्रिल व्यवस्थित,** चक्र १ भूदद मिनान। नृश हिन १ थ (हर्स, वानः

পেয়ে চলে ধেয়ে। পুত্রপুত্রব বিদ্যমান।। জনকে स्य निविधिया। सम्देष्ट्ड डेक्डिया। প्राम कहिल गुरवाश। भूञम्थ एउन्हरन, त् शिक्त बानन गरनः हुन আলিখন দিল তায় ৷৷ ছিলা নানা রত্ মণি, অনতর न्णमानि, रम्पथ পू १ दर्व दरमः नित्रीकन कृति यात्रः চক্র ছারি মেনে যাস, অলংপরে কি আর কথন।। नत्र पिक रहा मा कार्य करता विकास करता करता कार्य (म खबरन जुड़ाइ,। जीनस्मद्र भीना महि खरन मत्व मर्क्ष हैं। इं, त्मत्म कल यदमाध्य हाइ । अस पुनि का नाहन, (पन देहन हेन १) शींड वाप आपि भरहाद-नत् । ভार्याः मङ् युवदासः भाउत्य धनिनासः श्रादिश्व अञ्चल्दा उत्ता । त्या आसि अस्नीतः नश्रदन विरुद्धि महि, मरनाइव मूर्य माछ यूनी । न-জ্জিত হইয়ারায়- দাভুনা করিয়া তায়, **মতকে ল**-ইল পদধ্লি।। পুত্রে করি নিরীক্ষণ, হল দ্বংথ নথরণ। तानीत समिन मत्नर ! পুতাবধু मूथ छात्न, नित्रिथ मह-ষ্কায়, করে যেন পাইল রভনে।। বলে কয়ে (শ্ৰে भाया, वाहित्त चाह्न ताया मूल शूका किन मभाभ न। चलः भूति गामि मुधी, चलत रहेस। मुधी, भरे क्ल क्रिन उथन।। मामी (म कुलाव कन्।), जारह क्ल महीरन्ता, उत्प छन्य जी वद्धा भारा। भूत्रवानि

যত মেয়ে, দেখিতে আইল ধেয়ে, নির থিয়া হরবিত কায়।। গগণে বাড়িল বেলা। সবে নিজা স্থানে গোলা। ধন্যহ্ করিয়া রাজায়। নৃপ লয়ে মনোছরে, ভোজন कतिन भरतः, शूतनाती चात्रि भरव थाय।। पिवा देश ল অবসান প্রকাশিল রাত্রিমান, যুব্বর মনোহর রায়। নিজ নায়িকার সঙ্গে, কৌভক করিয়া রঙ্গে, বিভাবরী নিদ্রায় পোছার।। অতে গেল নিশাকর, (पथा पिल पिताकतः) ताहिएत थाहेल युववत् । अहै কপ সাম তিন, ক্ষে যায় দিন দিন, বিবরণ শুন তা-अथा छेलनी उ इंदश (मणा भटनादमा दिनी इ मटक् माकार कतिया ब्रह्म निर्विषय वार्डा निर्विष ॥ यनो इद्रविक इयु, बानि कननीत्क क्यू, अयुष्ता रहेदात्र उदता कन्यात छनिया वाणी मखु हे हहेसा जागी, जानाइन गार्जा पखरदा ॥ जुनि इहिम जा-यः, अनिया इतियकायः, निमञ्जा पिल नर्मेटी है। जाः সে বহুরাজ সুত্ত, সুৰূপ সুগুণযুত্ত, বিবরিতে যাহে कार्य) नाइ।। बदनाइत रुष्टे इत्य, शिजात चनुका লয়ে, দিনমণি নগরে আইল। সকলে সুদৃষ্টি করে, হরিব ভূপতি পরে, নভা করি কন্যা আনাইল।। मधी সঙ্গে নৃপবালা, করে করি পুরুষালা, দিল মনো-

इरतत्रनास। मरव देवन भूत्र किछ, इस न्छ। वापः গীত, শুভ কর্ম দুখে হৈল সয়ে ।। তাজপুত গণে পরে, থাওায়াইল নমাদ্রে। ভূপতি হ্রিণ্ডক্র রায়। পেরে मकरल नेयानः निकट छारन यानः निवारेङ्न खर-मान आमः। विভायते छेलिए छ। यदना रत भूमिकिछ। ভाष्रा महक तिन भय्न । (मिं ८० (में हा प्रभाव) भू-इं जाव छेप्रीशान, देशन नामा करवाशकथन ।! जन्-মালা আদি করি, এল পঞ্ নপ্তরী, যুববরে দেখি-वात छंता निव्रिधिया घटनाइएस,यज शदिशाम करत. পুরু কথা ভাবিয়া খডরে ৪ হয়ে আনন্দিত কায়, मर्व जरव निक्ता याशुः निशाकत अखा हरन हरन । म्रा पूर्णार विनि, गुळालाट आएम छनि। मरनार्त वारिक यहरम।। माहि निष्ण आहि कर्गे जूलिदा कानस मर्ग, (मर्म पानिदात चार्यनात । न्रांठ छ-নিয়া ভায়, সঙ্গে দিল ছহিতায়ঃ খার নানা ত্রৱ্য ভারং।। মনোহ্র অন্ভর, হইয়া হরিণান্তর, যালা করি দেশে উতরিল। শুনিয়া সুথ সন্বাদ, অভরে গণে षाञ्चामः कल मात्री (पशिष्ठ बाहेल।। खनवाम नत्र-পতি, দিয়া নানা রজু মতি, দেখে নব বধুর বদন। षड़ै त्यू अक ठाँड़े, मुर्थंत পर्यशास्त्रि नाई, बानत्न পুরিল मध्यम् ।। বেলা হৈল ছি প্রহর, অরুণ প্রা

धीयतः পুত मर्कदिन एडाजन । (माहिनी मिनित नत्यः, (छा जन कित्रन त्रत्यः, चरुः भूत्र इत्य इसंगन।। फुरव (गल मिवाकत, निमा देशन অপ্রमत, यूवबाफ মনোহর রায়। সঙ্গে ছই বনিতার, আনিয়া শায়না गात्र, मञ्जन कतिन र्घकाञ्च ।। मामजूथी घीटतर, जि ख्वांत्रिन (गाहिनीरत, शात (मादत (के वानि हिनिदछ। মোহিনী শুরণ করে, হাস্য করি মৃত্ত হরে, কংছ কি किह्दिन चाहिष्टि ।। मणञ्जी द्विय वामातः हिनियम। , अकि यात्र, ममीक रहम जा जारा वरहे। कि खंशीय स জে কান্ত, ধরে এনেছিনু কান্তঃ যবে ছিল তব সন্নিক-रहे।। अ**ङ। कि अमङ**। इस्र, मुश्डिसा क्लान नयः भटदेव निकटि वाज्ञ अशा विद्याय कानिया शाल, त्याहिनी ननका ज्या । रहे मुख ब्रस्ट नाहि हाय।। स्या मुधी रमिथ (इन, (इरन रदन (कन कन, नाफ चा-त किया कत इरव। इहेश्राष्ट्र या हवाइ, (छरव दि इ**इ**रव स्थाब स्माहिनी हामिन स्थिन खरन ॥ विस्त প্রশংসাকরে, শশিমুখা প্রতিপরে, কংহ দিদি ভূমি (यात वष् । सक्तर्थ मुक्लव डी, मुहिकन वृक्ति मडी, चामारेश्ट वर् खरा पड़ा। ष इ जार्या मदे शदा যুহক পুলকান্তরে, করি নানা কথোপকথন। নিদ্রায় कारीय निर्मा, अकाम। इहेन मिनि, अञाकत पिन

प्रभाग ।। প্রভাতে উঠিয়া রাষ্ট্র হৈর মহলে যায়।
पূর্পাই বলিয়া বদকে । সারে দিত্য কর্মানদে, দীর্ঘ ত্রিপদীর ছন্দে, শীকালী সমার ছিন্ধ ভবে ।।

व्यथ धार्मभाष्ट्रा ग्यात ॥

परे कण महानृ (श किष्ठु पिन चारा ! विव तिव खनस् পশ্চাত रात्र जात्र ॥ भूट मिया द्वाला उपनाम न्थ-ताय। कान প्रारक्ष चवरणस्य कान आस यात्र ॥ যুৱরাজ ননোছর হয়ে নরপতি। রাজ্য করে কবি-রত মন: দূথে অভি।। দিব। যার রাজ কথো এলে ताबिकान । बड्नादी मध्यत्रक्षत्र महीलाम ॥ উভয়ের সহিত প্রণয় অতিশর। বিশেষতঃ (জ্ঞা-शत निकटके पादा बादा। (पट्रक तम नाती माञा इर्याइन यवा नाती हत्य छान माजा पिसाइन তবে।। ছল করি করাইয়া ছিল অস্বীকরে। পরি-खंडे जाशिवादत यन निर्मायकाद ।। काटकर नव्याकि ब्रट् जाब दभा। यायिजात व्किर्न नवात नदम।। নত্তবা কি নারী হয়ে পতি হৈতে পারে । খনোহর नव्यक्ति श्वियाछ यादा।। यनखब अहेक्य युन्कि-ত! छ दत्र। क्षी महिक मरनाइत भूरथ द्वाका करत्र।। किश्व दिक्यामिट उ किव कालिमान । भशहाक **मगा छ इड्न इं जिङ्गा ॥** विद्याद क्रिवेश अल (नधून

ইহার। যুবক যুবতা মধ্যে শক্তি অতি কার।। নৃপ करह बामात अधिक बात वाला। मञ्जव के लिमाम खवना প্রবলা।। मछ हे २३ नू उफ़ कथा । তোমার। এত বলি কবিকে করিল প্রকার।। সভা সৃদ্ধ সকলে ध्हेन आविन्छ : भरव करक् कानिमाम खन्छ. क পণ্ডিত।। ইতিহান বিব্রিয়া কৈল যে প্রকার। এ-মন আশ্চর্যাকথা শুনি নাহি আর ৷৷ এবে নোরা বুকিলাম অবলার বলে। বুকি কেহ্নাহি পারে অ-वनी मखला। मृत्थं चनुकन वत्त बदनाः। रम यनि ग्रना वना कार्त्व यास वना।। हरू व वृष्टि बहेरून कांग कला। जानिश्वस यानिवाश खरवा अवना ॥ এইবাণ সভা সুদ্ধ কহিতে লাগিল। সভা ভেম্বে নর-পতি পুরে প্রবেশিল।। আরং সবে নিজ নিক তনে যায়। বিশেষিয়া বিবরিয়া কিবা কল তায়।। কালি-দাস ইতিহাস কৈল যে প্রকার। সমাপ্ত করিল গ্রন্থ बीकालीक मात्र ॥ चरना धरना क्ली धरङ् देशन वना। (उँहे स्थ अस्त्र नाम अवना अवना ॥ इन्द्र শিক্ষয় বসুক্রতে রাখিবে। সেই শকে প্রান্থ वृक्षिया (पथित।। 🏻 ইতি मभारक्षाय 🕻 शहः।।

fasi ma

अउच्यादात वादात्वलक महत् कता पहिल्ल प्र शहकादात अनुभाक गर्त कर्यक गाई भारता श्राका नामक श्राह कर मृत्तिक मा करवार क्रिक्ट मार्ट्न भनुमास्त प्रधार रहेर्द्र व हैति ।।